फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 171 प्रभात जयपुर, मंगलवार 21 जनवरी, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

ARBiT

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

epaper.rashtradoot.com

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

What if Germany had won the Second World War?

History, they say, is written by the victors. But memory belongs to the people. It is in the songs we hum, the stories we tell, the love we carry. It is in the wildflowers that grow in defiance of a conquered world.

Why do we fail at keeping our New Year's resolutions?

'अमेरिका का स्वर्णिम युग आज से, अभी से शुरू हो रहा है, अमेरिका फिर से विश्व की सबसे बड़ी महाशक्ति बनेगा'

अमेरिका के 47 वें राष्ट्रपति पद की शपथ लेते हुए डॉनल्ड ट्रम्प ने महत्वपूर्ण घोषणाएं कीं

- ट्रम्प ने अमेरिका की दक्षिणी सीमा पर आपातकाल लगाने की घोषणा की, यहाँ मैक्सिको से भारी घुसपैठ होती है।
- ''रिमेन इन मैक्सिको'' पॉलिसी को लागू करने की घोषणा की।
- पकड़ो और छोड़ो प्रथा को समाप्त किया जाएगा।
- मैक्सिकन ड्रग कार्टल को विदेशी आतंकवादी घोषित करेंगे।
- नैशनल एनर्जी इमरजैंसी घोषित।
- फ्री स्पीच के लिए अमेरिका में सैंसर शिप पर रोक।
- थर्ड जैंडर समाप्त, अब सिर्फ मेल और फीमेल जैंडर ही होंगे।
- पनामा नहर को वापस लेने की प्रतिबद्धता व्यक्त की।

वॉशिंगटन, 20 जनवरी। अमेरिका में एक बार फिर ट्रंप युग लौट आया है। रिपब्लिकन नेता डॉनल्ड ट्रंप ने अमेरिका के राष्ट्रपति के रूप में शपथ ग्रहण कर ली है। इस शपथ के साथ ही ट्रंप अमेरिका 47वें राष्ट्रपति बन गए हैं।ट्रंप के शपथ लेने के बाद कुछ देर तक कैपिटल बिल्डिंग के रोटुंडा में तालियों की गड़गड़ाहट गूंजती रही। इससे पहले उन्होंने 2017 से 2021 तक अमेरिका के 45वें राष्ट्रपति के रूप में कार्य किया था। ट्रंप ने स्थानीय समयानुसार दोपहर 12:01 बजे भारतीय समयानुसार सोमवार रात 10:30 बजे शपथ ली। मुख्य न्यायाधीश जॉन रॉबर्ट्स ने उन्हें शपथ दिलाई।

शपथ के बाद ट्रम्प ने 30 मिनट तक देश को संबोधित किया। अपने पहले भाषण में उन्होंने कहा, अमेरिका का स्वर्ण युग अभी शुरू हो रहा है। इस दिन से हमारा देश फिर से समृद्ध होगा और पूरी दुनिया में इसका सम्मान किया जाएगा। मैं अमेरिका को सबसे पहले रखूंगा। हमारी संप्रभुता को पुनः प्राप्त किया जाएगा। हमारी सुरक्षा बहाल की जाएगी। हम फिर से अमेरिका को महान बनाएंगे। न्याय के तराजू को फिर से संतुलित किया जाएगा। जस्टिस डिपार्टमेंट और हमारी सरकार का क्रूर, हिंसक और अनुचित हथियारीकरण समाप्त हो जाएगा।

ट्रंप ने अपने भाषण के दौरान कहा, ''मैं इस विश्वास और आशा के साथ राष्ट्रपति पद पर वापस आ रहा हूं कि हम राष्ट्रीय सफलता के एक रोमांचक नए युग की शुरुआत में हैं... देश में बदलाव की लहर चल रही है।'' उन्होंने कहा कि सरकार विश्वास के संकट का सामना कर रही है। उन्होंने कहा कि कट्टरपंथी और भ्रष्ट प्रतिष्ठान ने कई वर्षों से देश पर कहर बरपाया है। ट्रंप ने कहा कि अमेरिकी सरकार अब बुनियादी सेवाएं प्रदान नहीं कर सकती है, उन्होंने पश्चिमी उत्तरी कैरोलिना को तबाह करने वाले तूफान के विनाशकारी नतीजों की ओर इशारा किया। उन्होंने तर्क दिया कि दक्षिणी सीमा पर स्थिति नियंत्रण से बाहर है। राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा, ''आज से यह सब बदल जाएगा।''

डॉनल्ड ट्रंप अमेरिका के 47वें राष्ट्रपति बने

डॉनल्ड ट्रंप ने आव्रजन (इमिग्रेशन)पर अपनी आगामी कार्यकारी कार्रवाई का जिक्र करते हुए कहा कि वह दक्षिणी सीमा पर आपातकाल की घोषणा करेंगे और अपने पहले कार्यकाल में लागू की गई कई नीतियों को फिर से लागू करेंगे। उन्होंने कहा कि वह पकड़ो और छोड़ो की प्रथा को समाप्त करेंगे और मैक्सिकन ड्रग कार्टेल को विदेशी आतंकवादी संगठन घोषित करेंगे।

डॉनल्ड ट्रंप ने कहा, हमारी प्राथमिकता एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करने की होगी जो गौरवान्वित, समृद्ध और स्वतंत्र हो। अमेरिका को पहले से कहीं ज्यादा महान, मजबूत और कहीं ज्यादा असाधारण होना चाहिए।

राष्ट्रपति की शपथ लेने के बाद ट्रंप ने कहा, अमेरिका का स्वर्णिम युग अभी से शुरू हो रहा है। इस दिन से हमारा देश फलेगा-फूलेगा और सम्मान पाएगा। मैं बहुत सरलता से अमेरिका को सर्वप्रथम रखूंगा।

ट्रंप ने कहा कि अमेरिका में सबको बोलने की आजादी रहेगी। किसी भी तरह का कोई प्रतिबंध नहीं रहेगा। सरकारी सिस्टम से कट्टर सोच को खत्म कर दूंगा।

राष्ट्रपति बनते ही ट्रंप ने मेक्सिको बॉर्डर पर नेशनल इमरजेंसी का ऐलान

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

कांग्रेस का नया मुख्यालय क्या प्रियंका गांधी का दफ्तर बनेगा उनकी राजनीतिक गतिविधि के लिए?

नया मुख्यालय, जिसका नामकरण इन्दिरा भवन किया गया है, में केवल ग्राउण्ड फ्लोर नियमित रूप से कांग्रेस कवर करने वाले पत्रकारों के लिए खुला होगा। इन पत्रकारों को विशेष ''पास'' दिये जायेंगे, प्रवेश के लिए

- रेणु मित्तल -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 20 जनवरी। बड़ी भव्यता एवं कलात्मकता से संपन्न कांग्रेस का नया मुख्यालय एक म्यूजियम ज्यादा लगता है, जो कांग्रेस पार्टी के इतिहास, इसकी अतीत की उपलब्धियों तथा नेताओं, पार्टी के मूल तत्वों को खोजने के इसके प्रयासों, तथा उन नेताओं के बारे में जानकारी देता है, जो पार्टी का हिस्सा थे, यहां तक कि, जो बाद में पार्टी छोड़ भी गये।

यह मुख्यालय ठीक उसी तरह से एक कॉर्पोरेट आफिस जैसा दिखाई देता और महसूस होता है, जैसे जवाहर भवन दिखाई दिया करता था।

जवाहर भवन इस कदर अभिजात्य लगता था कि उसे पार्टी कार्यालय कहा ही नहीं जा सकता था और बाद में तो वह राजीव गांधी फाउण्डेशन तथा विविध प्रकार के अन्य कार्यालयों तथा फाउन्डेशनों का ठिकाना बन गया था, जो गांधी परिवार से सम्बद्ध थे।

कार्यकर्ताओं, जो किसी राजनैतिक पार्टी का आधार होते हैं, को इसके

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- आम कार्यकर्ता और आम पत्रकारों का आना-जाना अभी भी पुराने मुख्यालय, 24, अकबर रोड से शायद होगा।
- इन्दिरा भवन, एक 'कॉरपोरेट ऑफिस'' जैसा लगता है, जहां आम कार्यकर्ता का आवागमन वर्जित सा होगा।

'सारी तैयारी है जल्दी ही यू.सी.सी. के क्रियान्वयन की घोषणा होगी'

उत्तराखण्ड के मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने कोड मैनुअल पर मंत्रिमंडलीय स्वीकृति के बाद कहा

- श्रीनंद झा -
- राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो -

नई दिल्ली, 20 जनवरी। उत्तराखंड देश का पहला ऐसा राज्य बनने जा रहा है, जहां यूनीफॉर्म सिविल रोड (यू सी सी) लागू हो रहा है। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी की कैबिनेट ने आचार संहिता को मंजूरी दे दी है।

मुख्यमंत्री ने कहा, हमने 2022 में उत्तराखंड की जनता से वादा किया था कि सरकार बनने के बाद जल्दी ही यू सी सी लाया जाएगा। वह वादा निभाया गया है। यू सी सी का ड्राफ्ट तैयार होकर पारित कर दिया गया है और राष्ट्रपति से भी इसे मंजूरी मिल गई है और अब यह तैयार है। ट्रेनिंग की प्रक्रिया लगभग पूरी होने को है और हर पहलू की समीक्षा कर ली गई है, जल्दी ही इसके क्रियान्वयन की तारीख घोषित कर दी जाएगी।

यू सी सी के तहत पर्सनल लॉज़ का सैट लागू करना होता है, जो सभी नागरिकों पर समान रूप से लागू होता है, चाहे वे किसी भी जाति या धर्म के हों, स्त्री हों या पुरुष हों। इसके तहत शादी -विवाह, गोद लेने, विरासत व उत्तराधिकार जैसे मामले आते हैं।

- मुख्यमंत्री धामी ने कहा, हमने 2022 में उत्तराखण्ड के लोगों से वादा किया था कि सरकार बनने के बाद जल्द से जल्द यू.सी.सी. बिल लाया जाएगा। उत्तराखण्ड देश का पहला राज्य है जहां यू.सी.सी. का क्रियान्वयन होने जा रहा है।
- भाजपा शासित लगभग सभी राज्य यू.सी.सी. की दिशा में कोई ना कोई कदम उठा चुके हैं, इनमें गुजरात, मध्य प्रदेश, असम, यू.पी. प्रमुख हैं। जल्दी ही हरियाणा, महाराष्ट्र व यू.पी. में भी यह प्रक्रिया शुरू होगी।

पश्चिम में गुजरात से लेकर पूर्व में असम तक कई भाजपा शासित राज्यों ने यू सी सी के क्रियान्वयन के लिए कदम उठाए हैं। वर्ष 2022 में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने यू सी सी के क्रियान्वयन के लिए एक कमेटी बनाने की घोषणा की थी। उनका कहना था कि इससे बाहरी लोग आदिवासी महिलाओं से विवाह नहीं कर पाएंगे, जो वे उनकी जमीन हड़पने के लिए करते हैं।

असम के मुख्यमंत्री हेमंत बिस्वा सरमा ने इसलिए यू सी सी का पास कि, क्योंकि इससे मुस्लिम समुदाय में एक से ज्यादा विवाह पर रोक लगेगी।

उन्होंने कहा यू सी सी नहीं लागू हुआ तो कई शादियां करने की प्रथा चलती रहेगी। एक आदमी तीन-चार शादियां करेगा, इससे महिलाओं के मौलिक अधिकार का हनन होगा।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दस लाख डॉलर खर्च करके ट्रम्प के मेहमान बने अंबानी

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जनवरी। ना तो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, ना ही भारत के टॉप उद्योगपति गौतम अडानी और मुकेश अंबानी को यू.एस. प्रेसिडैंट ट्रंप के कार्यकाल के उद्घाटन के लिए निमंत्रण मिला था।

- ट्रम्प के शपथ ग्रहण समारोह में मुकेश व नीता अंबानी के नज़र आने पर यह चर्चा थी कि वे आमंत्रित हैं, पर वास्तविकता यह है, कि उन्होंने दस लाख डॉलर (8.65 करोड़ रु.) में यह निमंत्रण खरीदा था।

भारतीय मीडिया में, डॉनल्ड ट्रंप के दूसरे शपथ ग्रहण समारोह में मुकेश अंबानी के शामिल होने का लेकर भारी हलचल थी, कि उन्हें कितना बड़ा सम्मान दिया गया है। तथापि, एक महत्वपूर्ण बात किसी ने नहीं बताई कि, शायद जानबूझकर, कि अंबानी और उनकी पत्नी को निमंत्रण नही मिला था,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ट्रेनी डॉक्टर रेप मर्डर केस के फैसले से नाखुश है आम जनता

लोगों को स्थानीय पुलिस पर भरोसा नहीं है और उनका मत है कि सी.बी.आई. ने भी विश्वासघात किया

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जनवरी। कोलकाता में सियालदाह की एक शहर अदालत ने, पांच माह पूर्व सरकारी अस्पताल आर.जी. कर मैडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल में हुए, एक जूनियर डॉक्टर के रेप व हत्या के मामले में फैसला दे दिया है। न्यायाधीश ने कहा कि उपलब्ध सबूतों के आधार पर वो, नागरिक स्वयंसेवक संजय रॉय को उम्रकैद की सजा दे रहे हैं।

इस फैसले ने स्पष्ट रुप से राज्य प्रशासन के उच्चतम स्तर पर अनियमितताओं को लेकर संदेह का पिटारा खोल दिया है। लोग स्थानीय पुलिस पर अपने अविश्वास और सी.बी.आई. द्वारा विश्वासघात को खुलेआम व्यक्त कर रहे हैं।

अभियोग पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए, राज्य की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने तुरंत टिप्पणी की कि, यह मृत्युदंड का फैसला नहीं है, इस बात से वो संतुष्ट नहीं हैं। उन्होंने वही बात

- लोगों का कहना है कि ट्रेनी डॉक्टर के शरीर पर जितनी चोटें थीं वह एक व्यक्ति का काम नहीं है, जांच में बड़े लोगों को बचाया जा रहा है।
- मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आरोपी संजय रॉय को फांसी होनी चाहिए, लोग पूछ रहे हैं कि वे आरोपी को फांसी दिलाने पर क्यों आमादा हैं क्या उन्हें डर है कि संजय रॉय कोई बड़ा राजफाश कर देगा।
- मृतक ट्रेनी डॉक्टर के पिता ने भी जांच व फैसले पर नाखुशी जताई और कहा कि उन्हें सारे प्रकरण से दूर रखा गया, आनन-फानन में उनकी बेटी का दांह संस्कार कर दिया गया।

दोहराई जो उन्होंने हत्या के तुरंत बाद आरोपी संजय की गिरफ्तारी के तुरंत बाद कही थी।

सबसे बड़ा संदेह यह था कि मुख्यमंत्री आरोपी को तुरंत फांसी पर लटकाने पर क्यों जोर दे रही हैं। क्या वो मुख्य आरोपी द्वारा भविष्य में किए जाने वाले संभावित खुलासों तथा सभी साक्ष्यों को मिटाने के लिए ऐसा कर रही हैं। शहर अदालत के इस फैसले को चुनौती दी जाएगी, मृत डॉक्टर के माता-पिता सुप्रीम कोर्ट से हस्तक्षेप की मांग कर रहे हैं।

तथापि, जानकार लोगों का मानना है कि यह स्पष्ट रुप से उच्च संपर्क वाले कुछ लोगों को बचाने का मामला है, जिनका उल्लेख दबी ज़ुबान में किया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अपना केस लड़ने के लिए टॉप लॉ फर्मों की सेवाएं ली अडानी ने

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 20 जनवरी। अमेरिका की लॉ फर्म, कर्कलैण्ड एण्ड एलिस तथा क्विन इमैनुअल, एस.ई.सी. (सिक्यूरिटीज़ एण्ड एक्सचेंज कमिशन) एवं ईस्टर्न डिस्ट्रिक्ट ऑफ न्यूयॉर्क के खिलाफ अडानी ग्रुप पर सोलर एनर्जी अनुबंध हासिल करने के

- अडानी पर 250 मिलियन डॉलर की रिश्वत देने का आरोप लगाकर न्यूयॉर्क के ईस्टर्न डिस्ट्रिक्ट तथा सिक्युरिटीज एण्ड एक्सचेंज कमीशन ने केस दर्ज किया है।

लिए 250 मिलियन डॉलर की रिश्वत देने के आरोपों के मामले में अडानी ग्रुप का प्रतिनिधित्व कर रही हैं। हालांकि, ए.जी.ई.एल. (अडानी ग्रीन एनर्जी लि.) के संस्थापक गौतम अडानी तथा दो अन्य ने कहा कि उन पर यू.एस. एफ.

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'फागी रोड पर मुहाना मोड से रिंग रोड तक अतिक्रमण क्यों नहीं हटे'

जयपुर, 20 जनवरी। राजस्थान हाईकोर्ट ने फागी रोड पर मुहाना मोड से रिंग रोड तक स्थित 200 फीट चौड़ी सडक़ से अतिक्रमण नहीं हटाने के मामले में, जेडीए सचिव को तीन फरवरी को तलब किया है। अदालत ने जेडीए सचिव से पूछा है कि मौके पर अतिक्रमण होना स्वीकार करने के बाद भी कार्रवाई

- हाईकोर्ट ने जेडीए सचिव को 3 फरवरी को पेश होकर स्पष्टीकरण देने को कहा।

क्यों नहीं की गई। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस भुवन गोयल की खंडपीठ ने ये आदेश बंशीलाल योगी की जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। जनहित याचिका में अधिवक्ता प्रहलाद शर्मा ने बताया कि मास्टर प्लान, 2025

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'राजस्थान सरकार टैक्स की आय के जनकल्याणकारी उपयोग के लिए प्रतिबद्ध है'

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने उद्योग, व्यापार, कर सलाहकार व सेवा क्षेत्र के प्रतिनिधियों से बजट पूर्व चर्चा की

जयपुर, 20 जनवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य में उद्योग के लिए अपार संभावनाएं हैं तथा उद्योग एवं सेवा क्षेत्र राजस्थान की अर्थव्यवस्था में तीन-चौथाई योगदान देते हैं। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार इन दोनों क्षेत्रों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर रही है, जिससे प्रदेश की अर्थव्यवस्था को 350 बिलियन डॉलर तक ले जाने के संकल्प को पूरा किया जा सके।

शर्मा सोमवार को मुख्यमंत्री कार्यालय में उद्योग, व्यापार, कर सलाहकार संघों एवं सेवा क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ दो सत्रों में आयोजित बजट पूर्व चर्चा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि औद्योगिक वृद्धि से अर्थव्यवस्था के मजबूत होने के साथ ही, लोगों को रोजगार के अवसर भी मिलते हैं। उन्होंने कहा, प्रदेश की निवेश -अनुकूल नीतियों से एमएसएमई के पंजीकरण तेजी से बढ़ रहे हैं। पिछले एक साल में करीब 5 लाख सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों के पंजीकरण हुए हैं तथा एमएसएमई इकाइयों के पंजीयन में राजस्थान का चौथा स्थान है। उन्होंने कहा कि देश का सबसे बड़ा राज्य राजस्थान अब बड़े अवसरों की भूमि बन रहा है। सौर एवं पवन ऊर्जा उत्पादन में भी प्रदेश अग्रणी राज्य बन गया है।

- मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने अल्प अवधि में कुशल वित्तीय प्रबंधन के साथ राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया है। जिसके कारण 2024 में जी.एस.डी.पी. की वृद्धि दर 12.56 प्रतिशत दर्ज की गई।
- उन्होंने कहा कि उद्योग एवं सेवा क्षेत्र राजस्थान की अर्थव्यवस्था में तीन-चौथाई योगदान करते हैं। राज्य सरकार इन दोनों क्षेत्रों के लिए अनुकूल वातावरण तैयार कर रही है।

शर्मा ने कहा कि हमारी सरकार ने अल्प अवधि में ही कुशल वित्तीय प्रबंधन के साथ राज्य की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया है, जिसके फलस्वरूप

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को उद्योग, व्यापार, कर सलाहकार संघों एवं सेवा क्षेत्र के प्रतिनिधियों के साथ बजट पूर्व चर्चा की।

हाईकोर्ट के परीक्षा रजिस्ट्रार को अवमानना नोटिस जारी

जयपुर, 20 जनवरी। राजस्थान हाईकोर्ट ने एडीजे भर्ती-2020 में वकील कोटे के 85 पदों पर केवल चार अभ्यर्थियों को ही एडीजे के पद पर नियुक्ति के लिए चयनित करने से जुड़े मामले में अदालती आदेश का पालन नहीं करने पर, हाईकोर्ट के परीक्षा रजिस्ट्रार पीपी सिंह को अवमानना नोटिस जारी कर जवाब देने के लिए कहा

- एडीजे भर्ती 2020 में अदालती आदेश का पालन नहीं करने पर यह नोटिस दिया गया।

है। जस्टिस पंकज भंडारी व शुभा मेहता की खंडपीठ ने यह आदेश नरेन्द्र मोहन की अवमानना याचिका पर दिया। सुनवाई के दौरान, खंडपीठ ने आश्चर्य जताया कि मामले में आदेश दिए एक साल का समय हो गया है और हाईकोर्ट प्रशासन की एसएलपी सुप्रीम कोर्ट ने

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

जीवन एक फूल है और प्रेम उसका मधु। –ह्यूगो

एक कबीर और चाहिए

हाल ही में जयपुर इंटरनेशनल फिल्म फेस्टिवल में प्रदर्शित वृत्त चित्र कबीर पथ देखने का अवसर मिला। इस वृत्त चित्र में कबीर के जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया। साथ ही उनके द्वारा रचित समाज के पाखंड का पर्दाफाश करने वाले बहुत सारे दोहे भी सम्मिलित थे। फिल्म को देखते समय एक विचार मन में आया कि जितनी प्रासंगिकता कबीर की आज से 600 वर्ष पूर्व थी उससे कहीं अधिक आज है। कबीर का जन्म 1398 में काशी में हुआ था।

वे वैरागी साधु थे। उनका विवाह लोई से हुआ। उनकी दो संतान थी, पुत्र का नाम कमाल और पुत्री का नाम कमाली था। उनका पालन पोषण नीमा और नीरू ने किया जो जाति से जुलाहे (बुनकर) थे।

वे औपचारिक रूप से शिक्षित नहीं थे, किंतु उन्हें मानव स्वभाव, मनुष्य के ईश्वर के साथ संबंध और समाज के विभिन्न विषयों की गहन जानकारी थी। उनके द्वारा कहा गया एक-एक शब्द विचारोत्तेजक होता था। उन्होंने कई ऐसी बातें कहीं जिनकी कल्पना भी आज के समय में करना लगभग असंभव है। उस समय न तो लोकतंत्र था न ही संविधान, जो अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करता हो। इसके बावजूद न केवल कबीर जैसा व्यक्ति हुआ, अपितु 119 वर्ष तक जीवित रहकर अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को सुधारने और उसे दिशा दिखाने का कार्य करता रह सका। उनके दोहे बडे सारगर्भित थे और बहुत कम शब्दों में अत्यंत गहरी बात कह देते थे। कबीर सांप्रदायिक सद्भाव उत्पन्न करने का कार्य करते रहे। आज की स्थितियों को देखते हुए अविश्वसनीय लगता है और कभी-कभी तो लगता है कि यदि कबीर वर्तमान समय में हुए होते तो अब तक न जाने उनके विरुद्ध कितनी एफ आई आर, भावनाएं आहत करने के नाम पर दर्ज हो चुकी होतीं। शायद वे 'मॉब लिंचिंग' के शिकार हो गए होते।

कहा तो यह भी जाता है कि जब कबीर बीमार हुए तो उन्होंने स्वयं को एक कमरे में बंद कर लिया। बाहर हिंदू और मुसलमान आपस में इस बात पर लड़ रहे थे कि उनका अंतिम संस्कार किस विधि से किया जाय? हिंदुओं का कहना था कि वे हिंदू थे इसलिए उनके शरीर का दाह संस्कार किया जाय जबकि मुस्लिम चाहते थे कि कबीर को दफनाया जाए क्योंकि वे मुस्लिम थे। दोनों पक्ष इस बारे में झगड़ा कर ही रहे थे, तभी किसी ने कहा कि दरवाजा खोलकर उन्हें देख तो लो कि उनकी क्या स्थिति है? जब लोग दरवाजा खोल कर कमरे में गए तो उन्होंने देखा कि वहां पर कबीर का शरीर नहीं बल्कि एक चादर थी जिस पर बहुत सारे फूल रखे हुए थे। इनमें से चादर तो मुसलमान अपने साथ ले गए और उन्होंने उसे उनकी मजार बनाकर चढ़ाया। फूलों को हिंदुओं और मुसलमानों ने आधा-आधा बांट लिया। मुसलमान के द्वारा फूल उनकी मजार पर चढ़ा दिए गए और हिंदुओं द्वारा उनके समाधि स्थल पर चढ़ाए गए।

वे सामाजिक कुरीतियों और धर्म के नाम पर चलने वाले पाखंड के घोर विरोधी थे। उन्होंने अपने दोहों के माध्यम से दोनों धर्मों के पाखंडपूर्ण व्यवहार पर करारी और तीखी चोट की। उदाहरण के लिए, उन्होंने हिंदुओं द्वारा मूर्ति पूजा को निशाना बनाते हुए कहा :–

''पाहन पूजे हरि मिले तो मैं पूजूं पहाड़,
तातें या चक्की भली, पीस खाए संसार।''

इसी प्रकार उन्होंने मस्जिदों से दी जाने वाली अज़ान के बारे में यह लिखा :–

''कांकर पाथर जोरि के, मस्जिद लई चुनाय,
ता ऊपर मुल्ला बांग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय।''

क्या आज किसी कवि में यह साहस हो सकता है ? कोई साहस कर भी ले, तो क्या उसके विरुद्ध कोई कानूनी कार्रवाई नहीं होगी? अधिक संभावना तो यही है कि ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध फतवा जारी कर दिया जाएगा। इसे समाज सुधार बताने के बजाय धर्म पर हमला घोषित कर दिया जाएगा।

कबीर का मानना था कि हर इंसान में ईश्वर का निवास होता है। उसे मंदिर-मस्जिद में ढूंढना सही नहीं है।

उन्होंने यह भी कहा कि भगवान ना तो काबा में मिलेगा ना काशी में बल्कि वह तो हर इंसान में मिलेगा।

उनकी ये पंक्तियां देखिए:–

'मोको कहां ढूंढे रे बंदे मैं तो तेरे पास में
न मंदिर में न मस्जिद में, न काबा न कैलाश में।''

उनका मानना था कि ईश्वर को किसी धर्मस्थान में ढूंढना व्यर्थ है, वह तो हर मनुष्य में है। यदि मनुष्य का मन शुद्ध और निर्मल है तो वह ईश्वर के ही समान है। उन्होंने हर इंसान में ईश्वर के स्वरूप को देखा और उसी की सेवा करने पर बल दिया।

किसी भी नदी या कुंड में स्नान करके पाप धोने की परंपरा पर भी उन्होंने कटाक्ष किया। उस जमाने में उन्होंने यह स्पष्ट रूप से कहा कि किसी भी व्यक्ति के पाप, किसी पानी से धोने से नहीं समाप्त हो सकते। इसके लिए मनुष्य को कुछ अच्छा कर्म करना होता है और उनकी दृष्टि में अच्छे कर्म से ही पाप धुल सकते हैं न कि किसी जगह जाकर नहाने या डुबकी लगाने से। आजकल जबकि महाकुंभ हर मीडिया चैनल पर छाया हुआ है, उस समय यदि इस प्रकार की बात कोई लिख या कह देता तो उसे शायद जीवित नहीं छोड़ा जाता ।

कबीर ने यह बात कही कि इंसान किसी भी वर्ग, जाति, धर्म का क्यों न हो, सबके खून का रंग लाल ही होता है तो फिर कोई व्यक्ति किसी दूसरे से छुआछूत कैसे कर सकता है और कैसे दूसरे से घृणा कर सकता है? ऐसा करते समय क्या वह दूसरे में ईश्वर के दर्शन नहीं करता?

उनका कहा यह दोहा देखिए:–

''काहे को कीजे पांडे छूत विचार
छूत ही ते उपजा सब संसार
हमरे कैसे लोहू तुमरे कैसे दूध
तुम कैसे बामन पांडे हम कैसे सूद (शूद्र)।''

कबीर ने यह बात कही कि इंसान किसी भी वर्ग, जाति, धर्म का क्यों न हो, सबके खून का रंग लाल ही होता है तो फिर कोई व्यक्ति किसी दूसरे से छुआछूत कैसे कर सकता है और कैसे दूसरे से घृणा कर सकता है? ऐसा करते समय क्या वह दूसरे में ईश्वर के दर्शन नहीं करता?

कबीर का मानना था कि केवल किताब में पढने से कोई पंडित नहीं हो जाता और बडी बडी पोथियां पढने वाले भी मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। केवल प्रेम शब्द को अपने जीवन में अपना लेने पर व्यक्ति वास्तविक ज्ञानवान हो जाता है। उनकी पंक्तियां इस प्रकार हैं :–

''पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ ,पंडित भया न कोय
ढाई आखर प्रेम का पढ़े, सो पंडित होय ।''

वर्तमान समय में भी हम देखें तो पाएंगे कि अधिकांश भ्रष्टाचार और घोटाले अधिक पढ़े-लिखे व्यक्तियों द्वारा ही किए जा रहे हैं। कम पढा-लिखा व्यक्ति तो छल-कपट जानता ही नहीं है। ये पंक्तियां उस व्यक्ति के द्वारा लिखी गई थीं, जो नितांत निरक्षर अवश्य था किंतु जो मन की गहराइयों में डुबकियां लगाता था। यह इस बात की ओर भी संकेत करती हैं कि हमें अपनी शिक्षा पद्धति में ऐसा परिवर्तन करना चाहिए जो प्रेम के मानवीय गुण को विद्यार्थियों में प्रारंभ से ही प्रतिष्ठापित करे।

आज यदि इन पंक्तियों के मर्म को समझ कर व्यक्ति व्यवहार करना प्रारंभ कर दे तो सारे समाज में वातावरण प्रेम मय हो जाए और पढने के बाद भी जो लोग एक-दूसरे के जान के दुश्मन हो रहे हैं ऐसी प्रवृत्ति अपने-आप समाप्त हो जाए ।

जो लोग सदैव दूसरों में बुराई ढूंढते रहते हैं उनको संबोधित करते हुए कबीर ने कहा:–

''बुरा जो खोजन मैं चला, बुरा न मिलया कोय,
जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।''

इसी प्रकार जो व्यक्ति दिन भर माला फेरते रहते हैं किंतु उल्टे-सीधे काम करने से नहीं हिचकते, उनके बारे में यह कहा:–

''माला फेरत जग मुआ, मिटा न मन का फेर
कर का मनका डारि के, मन का मनका फेर।''

कबीर दास जी का कहना था कि हाथ की माला को छोड़कर अगर मन की माला को फेरें तो मन कहीं अधिक शुद्ध हो सकता है। मन की शुद्धता को बनाए रखने पर जोर देते हुए ही कबीर ने यह लिखा था। आज जब सार्वजनिक जीवन में अधिकांश लोगों की कथनी और इन करनी में बहुत अन्तर है, उन्हें कबीर की इस वाणी पर गंभीरता से विचार कर अपने आचरण को परिवर्तित करना चाहिए। इससे सार्वजनिक जीवन में शुचिता बढ़ेगी।

सबके प्रति आदर भावना रखने की बात उन्होंने कितने सरल शब्दों में कह दी :–

''तिनका कबहुं न निंदिये, जो पांव न तर होय
कबहुं उड़े आँखिन पड़े पीर घनेरी होय।''

किसी छोटे से छोटे व्यक्ति की भी निंदा कभी मत कीजिए। पता नहीं कब वह आपके लिए अत्यंत पीडा का कारण बन जाए? यह उपदेश व्यक्तियों को किसी की भी निंदा करने से बचाने का काम करता है। यह आजकल बहुत आवश्यक है जब प्रतिदिन हम लोगों को गरिमा विहीन तरीके से एक दूसरे की निंदा करते हुए देखते हैं।

कबीर ने यह भी कहा था:–

''धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय
माली सींचे सौ घड़ा, ऋतु आए फल होय।''

यह उक्ति आज के समय न केवल प्रासंगिक है अपितु आवश्यक भी, क्योंकि कई युवा कम से कम समय में अमीर बनने के चक्कर में अपराध की दुनिया में कदम बढ़ा रहे हैं ।

आज से 600 साल पहले धर्मांधता होते हुए भी कबीर जैसा सरल, निरक्षर व्यक्ति निर्भीकता से अपनी बात कह पाया, यह तत्कालीन शासकों की विभिन्न मतों के प्रति उदारता को ही दर्शाता है। भले ही कई लोग उस समय के शासकों को लगातार कोसते हों, वे आज के तथाकथित शासकों से तो इस मामले में बेहतर ही थे।

वे धार्मिक प्रतीकों के विरुद्ध थे और खुल पर अपनी बात कहते थे। आज, जब धर्मांधता चरम पर है, दोनों ही धर्मों के कट्टर लोग धर्म, जाती, भाषा, लिंग के नाम पर लोगों को विभाजित करके उन्हें लडाने के काम में लगे हैं, देश को एक बार फिर कबीर की आवश्यकता है जो सबको खरी-खरी बात कहने का साहस जुटा पाए। सरकार और समाज को ऐसे व्यक्ति के प्रति सहिष्णुता दर्शानी होगी। जब सभी धर्मों और जातियों के लोग कबीर की बात के मर्म को समझेंगे, तब ही इंसानियत का बोलबाला होगा। लोगों को यह भी समझ में आएगा कि केवल आडंबर और पाखंड से न देश का भला होने वाला है न स्वयं उनका।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

कुंभ मेला : हिंदू धर्म के मतों, संप्रदायों व समुदाय का समागम

राजेश्वर सिंह

हिंदू धर्म के नाम से जिस आस्था को हम जानते हैं, उसके क्रमिक विकास का परिचय हमें वैदिक वांग्मय, उपनिषद, पुराण, स्मृति, षटदर्शन, रामायण, महाभारत व श्रीमद्भागवत आदि से प्राप्त होता है। यद्यपि हिंदू धर्म में एक सर्वोच्च धर्म ग्रंथ, एक सर्वोच्च धर्म स्थल, व एक सर्वोच्च धर्माधिकारी की व्यवस्था नहीं है, किंतु चूंकि वेद का सार उपनिषद् में व उपनिषद् का सार श्रीमद्भगवद्गीता में समाहित है अत: श्रीमद्भगवद्गीता को हिंदू धर्म का आधारभूत ग्रंथ माना जा सकता है।

हिंदू धर्म में जिन तीन ग्रन्थों, उपनिषद, श्रीमद्भगवद्गीता व ब्रह्म सूत्र को प्रस्थानत्रयी माना जाता है, उन पर सर्वप्रथम शंकराचार्य ने भाष्य लिखा व अद्वैत मत का प्रवर्तन किया। इसके उपरांत यह परंपरा प्रारंभ हुई कि आचार्य की उपाधि उसी को दी जाएगी जो प्रस्थानत्रयी पर भाषण लिखेगा। केवल आचार्य को ही उक्त भाष्य के आधार पर मत प्रवर्तन व मठ स्थापना का अधिकार था।

शंकराचार्य के उपरांत रामानुजाचार्य ने विशिष्टाद्वैत, मध्वाचार्य ने द्वैतवाद, निंबार्काचार्य ने द्वैताद्वैतवाद, वल्लभाचार्य ने शुद्धाद्वैतवाद इत्यादि मतो का प्रवर्तन किया व मठ स्थापित किए। शंकराचार्य ने पंचदेवोपासना का भी प्रचलन किया, जिसके आधार पर शिव, विष्णु, शक्ति, सूर्य व गणेश की पूजा प्रारंभ हुई। वस्तुत: ये पंचदेव पंच महाभूतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। शिव आकाश तत्व, विष्णु जल तत्व, शक्ति अग्नि तत्व, सूर्य वायु तत्व व गणेश पृथ्वी तत्व के प्रतीक हैं।

पंचदेव उपासना के अतिरिक्त शंकराचार्य ने दशनाम संन्यास परंपरा का भी प्रचलन किया जिसमें गिरि, पर्वत, सागर उपाधि धारी संन्यासी ज्योतिर्मठ से, पुरी, भारती, सरस्वती उपाधिकारी श्रृंगेरी मठ से, तीर्थ, वन और अरण्य उपाधिकारी गोवर्धन मठ से तथा तीर्थ और आश्रम उपाधिधारी द्वारका मठ से संबंधित हैं। कालांतर में यह दशनाम संन्यासी 13 अखाडों में संगठित हुए जिनमें आव्हान, अटल, महानिर्वाणी, आनंद, जूना व अग्नि अखाड़े शैवमत के, दिगंबर, निर्मोही व निर्वाणी अखाड़े वैष्णव मत के, बड़ा पंचायती व नया पंचायती अखाड़े उदासीन मत के तथा निर्मल अखाड़ा सिक्ख मत का है। इसके अलावा 1954 में अखाड़ा परिषद भी अस्तित्व में आई जिसकी व्यवस्थाओं को सभी अखाड़े मान्यता देते हैं। अखाड़ों में आचार्य महा मंडलेश्वर, महा मंडलेश्वर, श्रीमहंत तथा अन्य पदाधिकारी होते हैं जिनका विधिवत रूप से लोकतांत्रिक पद्धति से चुनाव होता है। हिंदू धर्म का प्रत्येक मंदिर संस्थागत या वैचारिक रूप से किसी न किसी मत, मठ संप्रदाय अथवा अखाड़े से जुड़ा हुआ है, जो हिंदू धर्म की आंतरिक सुव्यवस्था व सुदृढ़ सांगठनिक संरचना का परिचायक है। इस प्रकार हिंदू धर्म विभिन्न मतों एवं संप्रदायों का समुच्चय या समूह है।

हिंदू धर्म, धर्म को जिस तरह से परिभाषित करता है, वह इसे मानव धर्म का स्वरूप प्रदान करता है। धर्म को विभिन्न स्मृतियों व ग्रन्थों में जिस तरह से परिभाषित किया गया है, उसमें संयम, नैतिकता, सत्याचरण, पवित्रता, सत्कर्म, करुणा, दया, प्रेम, परोपकार, दान, अक्रोध, धैर्य, क्षमा, विद्यार्जन इत्यादि सम्मिलित हैं।

धर्माचरण से मनुष्य स्व, पर और परम के एकत्व का अनुभव करता है, स्व को सर्व में और सर्व को स्व में देखने में समर्थ हो जाता है तथा शांति व सुख को प्राप्त करता है जो भौतिक, तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि से भी मानवीय अस्तित्व का चरम उद्देश्य व परम आवश्यकता है। इस प्रकार धर्म मनुष्य के लौकिक व पारलौकिक कर्तव्यों का मूलभूत व मार्गदर्शक सिद्धांत है। हिंदू धर्म के विभिन्न मतों व संप्रदायों में धर्म के इस मूलभूत तत्व को इष्ट देवता, मंदिर, धर्म ग्रंथ व पूजा पद्धति इत्यादि का आस्थामूलक बाह्य स्वरूप प्रदान किया गया है, जिसका उद्देश्य यह है कि सामान्य जन भी धर्म के गूढ व गहन सिद्धांतों को सरलता व सहजतापूर्वक समझ कर धर्माचरण में प्रवृत्त हो सके तथा शांति व सुख को प्राप्त कर सके।

समय के साथ अन्य धर्मों की तरह हिंदू धर्म में भी ढोंग, पाखंड, अंधविश्वास, जातिवाद व अस्पृश्यता आदि कुरीतियां आई, जिन्हें बुद्ध, महावीर, भक्ति आंदोलन के संतों, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, स्वामी विवेकानंद एवं महात्मा गांधी इत्यादि महापुरुषों ने चुनौती दी, जिनके प्रति आमतौर पर हिंदू समाज सहिष्णु रहा व समय-समय पर आत्मालोचन, आत्म सुधार व आत्म परिष्कार में प्रवृत्त भी हुआ। हिंदू धर्म व हिंदू समाज की मूल चेतना व मुख्य धारा आदिकाल से आज तक प्रकृति प्रेमी, मानवतावादी, समतामूलक, उदार, सहिष्णु व सर्व समावेशी रही है तथा जीव में शिव को देखने में विश्वास करती है।

ज्योतिष के अनुसार नवग्रहों में सूर्य आत्म तत्व का, चंद्रमा मन का व बृहस्पति ज्ञान का कारक ग्रह है। इन तीन ग्रहों की विशिष्ट ब्रह्मांडीय स्थितियों में भारत में चार स्थान, प्रयाग, हरिद्वार, उज्जयिनी व नासिक पर कुंभ का आयोजन होता है। कुंभ मेला पंचमहाभूतों, पृथ्वी, जल, अग्नि, आकाश व वायु से प्रत्यक्ष संपर्क में रहकर आत्मा, मन व ज्ञान के निखार व परिष्कार का पावन अवसर प्रत्येक आस्थावान हिंदू को प्रदान करता है ताकि वह एकाग्र व सुसंगठित मन, वचन व कर्म से अपने लौकिक कर्तव्यों का निर्वहन करे तथा मानव जीवन के परम लक्ष्य, जन्म-मरण के चक्र से विमुक्ति की दिशा में अग्रसर हो।

इस प्रकार कुंभ मेला हिंदू धर्म के विविध मतों, संप्रदायों तथा विराट हिंदू समाज का विशाल समागम है, जो व्यापक जन समुदाय को मानव जीवन के मूल उद्देश्य को समझकर उसके अनुकूल जीवन पद्धति विकसित व व्यवस्थित करने का बोध प्रदान करता है। इस अवसर पर वीतरागी संतों तथा विद्वान महापुरुषों द्वारा प्रतिदिन जो तत्व चर्चा की जाती है तथा लोक मंगल के सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाता है, उसका समुचित प्रचार-प्रसार किया जाना चाहिए तथा मुख्य फोकस इसी पर होना चाहिए, ताकि कुंभ मेला आयोजन का मुख्य लक्ष्य गौण ना हो जाए और यह विराट धार्मिक सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन अपने मूलभूत उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल सिद्ध हो सके।

–राजेश्वर सिंह,
आईएएस (सेवानिवृत्त)।

जलदाय विभाग की लापरवाही के चलते ग्रामीण पेयजल की समस्या से परेशान

खेतड़ी में पेयजल पाइप लाइन से पांच दिन से व्यर्थ बह रहा है पानी

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी क्षेत्र में पानी की बड़ी समस्या है, वहीं दूसरी ओर जलदाय विभाग के अधिकारियों की लापरवाही के चलते पांच दिन से पाइप लाइन लीकेज होने के कारण पानी व्यर्थ बह रहा है। पाइप लाइन में पानी व्यर्थ बहने से आमजन को पेयजल की समस्या का सामना करना पड़ रहा है।

जानकारी के अनुसार मुख्य बस स्टैंड स्थित दरवाजे के पास करीब पांच दिन से परियोजना की पाइप लाइन में लिकेज होने से पानी व्यर्थ बह रहा है। ग्रामीणों ने बताया कि मुख्य सड़क से कस्बे में पानी की पाइप लाइन जा रही है, उससे कस्बे के वार्डों में पानी की सप्लाई होती है, लेकिन पिछले करीब पांच दिन से पाइप लाइन लीकेज होने के कारण लाखों लीटर पानी व्यर्थ बह गया। समस्या को लेकर विभागीय अधिकारियों को अवगत भी करवाया गया, लेकिन अभी तक कोई समाधान नहीं किया। ग्रामीणों ने बताया कि पाइप लाइन से पानी लीकेज होने के कारण कई वार्डों में पानी की सप्लाई पूरी तरह से नहीं हो पा रही है और न ही पानी का प्रेशर आ रहा है। उन्होंने बताया कि कस्बे में भी पानी की किल्लत मची हुई है, लेकिन पाइप लाइन का रखरखाव करने वाली कंपनी लापरवाह बनी हुई है, जिससे ग्रामीणों को पानी के लिए परेशान होना पड़ रहा है।

ग्रामीणों ने बताया कि चार दिन से भी पानी की सप्लाई नहीं होती। पानी की लाइन को ठीक करवाने के लिए कई बार शिकायत भी कर चुके हैं, लेकिन फिर भी कंपनी लापरवाह बनी हुई है। पाइप लाइन में पानी का लीकेज सड़क किनारे होने से आने जाने वालों को काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। पानी सप्लाई शुरू होने पर ऊपर तक पानी का फव्वारा निकलता है, जिससे ऊपर से गुजर रही 11 केवी बिजली लाइन से बड़ा हादसा होने का अंदेशा बना हुआ है। ग्रामीणों ने बताया कि जल्द ही पाइप लाइन को दुरूस्त नहीं किया तो ग्रामीणों की ओर से विभाग कार्यालय के सामने विरोध-प्रदर्शन किया जाएगा।

इस संबंध में अधिशासी अभियंता सुनील कुमार ने बताया कि लाइन में लीकेज होने पर सप्लाई बंद करवा दी गई है, टीम को मौके पर भेजकर जल्द ठीक करवाया जाएगा।

- **कस्बे में पानी की किल्लत, पाइप लाइन का रखरखाव करने वाली कंपनी लापरवाह बनी**

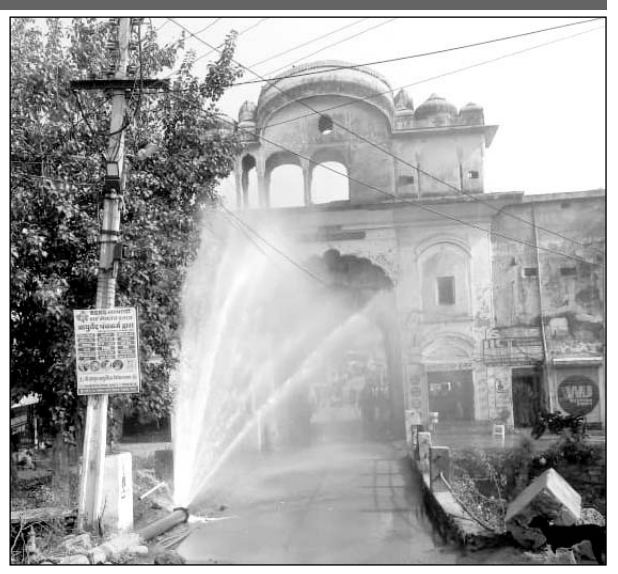

पानी सप्लाई शुरू होने पर ऊपर तक पानी का फव्वारा निकलता है।

संस्थापन अधिकारी के 351 और प्रशासनिक के 799 कर्मचारियों का प्रमोशन

शिक्षा विभागीय मंत्रालयिक कर्मचारियों की पदोन्नति

बीकानेर, (निसं)। शिक्षा विभाग ने प्रदेशभर में कार्यरत संस्थापन अधिकारियों और प्रशासनिक अधिकारियों के पदों पर पदोन्नति कर दी है। अब इनके पदस्थापन की तैयारी की जा रही है। माध्यमिक शिक्षा निदेशालय और प्रारम्भिक शिक्षा निदेशालय के अलावा प्रदेशभर के कार्यालयों में इनका पदस्थापन अगले कुछ दिनों में शुरू हो सकता है। पिछले दिनों कर्मचारियों ने आंदोलन करके पदोन्नति की मांग की थी।

निदेशालय से जारी आदेश में संस्थापन अधिकारी 351 और प्रशासनिक अधिकारी 799 पदों पर नियमित पदोन्नति की गई है। अब वर्ष 2024-25 तक की पदोन्नति हो गई है। जयपुर में शिक्षा संकुल में शिक्षा सचिव कृष्ण कुणाल, निदेशक आशीष मोदी, संयुक्त शासन सचिव मनीष गोयल एवं संयुक्त शासन सचिव दिनेश शर्मा की कमेटी ने पदोन्नति प्रक्रिया को अंतिम रूप दिया।

- **पिछले दिनों कर्मचारियों ने आंदोलन करके पदोन्नति की मांग की थी**

शिक्षा विभागीय कर्मचारी संघ के प्रदेशाध्यक्ष कमल नारायण आचार्य ने बताया कि 54 दिनों तक दिए धरने के परिणाम आ रहे हैं। शिक्षा विभाग के मंत्रालयिक कर्मचारियों की विभागीय पदोन्नति प्राथमिकता है। आज संस्थापन अधिकारियों 351 और प्रशासनिक अधिकारियों की 799 पदों पर वर्ष 2024-25 की नियमित डीपीसी अब तक कि सबसे बड़ी डीपीसी हो गई है। संघ के संरक्षक मदन मोहन व्यास और राजेश व्यास ने इस निणय का स्वागत किया है। व्यास ने बताया कि पदोन्नति के लिए संघ ने 20 फीट लंबा ज्ञापन दिया था। 54 दिन धरना दिया गया था।

बालिका स्कूल मर्ज करने पर छात्राओं का प्रदर्शन

जोधपुर, (कासं)। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय चौपासनी हाउसिंग बोर्ड दूसरा पुलिया को दूसरे स्कूल में मर्ज करने पर सोमवार को यहां अध्ययनरत छात्राओं ने विरोध जताया। छात्राओं ने स्कूल बंद कर प्रदर्शन किया और धरने पर बैठ गई। बाद में शिक्षा अधिकारी वहां पहुंचे और छात्राओं को इस संबंध में शिक्षा निदेशालय को पत्र लिखकर व्यवस्थाओं को यथावत रखने का आग्रह करने का आश्वासन दिया। तब छात्राओं ने अपना धरना समाप्त किया।

जानकारी के अनुसा शिक्षा विभाग ने हाल ही में आदेश जारी कर जोधपुर की 30 से लेकर 45 साल पुरानी स्कूलों को बंद कर अन्य स्कूलों में मर्ज कर दिया है। इनमें 550 और 450 बच्चियों के नामांकन के अलावा ग्रामीण क्षेत्र की प्राइमरी व मीडिल स्कूलों को भी नियमों को ताक में रखकर बंद किया गया। कई बालिका स्कूलों को बालक स्कूलों में मर्ज किया गया है। इसको लेकर विरोध प्रदर्शन शुरू हो गया है। राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय चौपासनी हाउसिंग बोर्ड दूसरा पुलिया को भी राज्य सरकार द्वारा मर्ज करने का आदेश जारी हुआ है जिसको लेकर छात्राओं ने इसका विरोध किया और स्कूल के बाहर प्रदर्शन किया। मौके पर शिक्षा अधिकारी पहुंचे और छात्राओं को भरोसा दिलाया कि इस संबंध में शिक्षा निदेशालय को पत्र लिखकर व्यवस्थाओं को यथावत रखने का आग्रह किया जाएगा।

राशिफल मंगलवार 21 जनवरी, 2025

पंडित अनिल शर्मा

माघ मास, कृष्ण पक्ष, सप्तमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, चित्रा नक्षत्र रात्रि 11:37 तक, धृति योग रात्रि 3:49 तक, बव करण दिन 12:40 तक, चन्द्रमा दिन 10:03 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मकर, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज द्विपुष्कर योग और राजयोग सूर्योदय से दिन 12:40 तक है। आज कालाष्टमी है, आज राष्ट्रीय माघ मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 9:54 से 11:14 तक, लाभ-अमृत 11:19 से 1:57 तक, शुभ 3:17 से 4:17 तक।

राहूकाल: 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:56

मेष
स्वास्थ्य में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। आय में वृद्धि होगी।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक अनुबंध प्राप्त होंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्य में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आय में वृद्धि होगी। आज विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कन्या
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च में वृद्धि होगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

तुला
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक कार्यों पर नियंत्रण बना रहेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कुंभ
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तिय मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है।

मीन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में परेशानी हो सकती है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मेजर मिनरल ब्लॉकों के ऑक्शन में राजस्थान को पहला पुरस्कार

■ माइनिंग सेक्टर में राजस्थान ने समूचे देश में परचम फहराया

जयपुर। राज्य के माइंस विभाग ने मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा जो स्वयं खान मंत्री भी है के नेतृत्व में समूचे देश में माइनिंग सेक्टर में राजस्थान का परचम पहरा दिया है। राजस्थान के प्रमुख शासन सचिव माइंस, भूविज्ञान व पेट्रोलियम टी. रविकान्त को सोमवार को ओडिशा के कोणार्क में केन्द्रीय खान मंत्री जी. किशन रेड्डी, ओडिशा के मुख्यमंत्री मोहन चरण मांझी और केन्द्रीय खान सचिव वी. कान्ताराव ने वर्ष 2023-24 में देश भर में एक्जेम्प्लेरी परफारमेंस इन मिनरल ब्लॉक ऑक्शन का पहला पुरस्कार प्रदान किया है। उन्होंने बताया कि मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा जो स्वयं खान मंत्री भी है के मार्गदर्शन में प्रदेश में खनिज क्षेत्र में नई नीतियों से लेकर खोज खनन और राजस्व संग्रहण के क्षेत्र में एतिहासिक उपलब्धियां अर्जित की गई है। केन्द्र सरकार ने राजस्थान की उपलब्धि को अनुकरणीय परफारमेंस बताया है।

प्रमुख सचिव माइंस टी. रविकान्त को यह पुरस्कार ओडिशा के कोणार्क में आयोजित नेशनल माइनिंग मिनिस्टर्स कॉन्फ्रेंस में दिया गया। प्रमुख सचिव टी. रविकान्त ने राजस्थान के खान विभाग के लिए इसे एतिहासिक उपलब्धि बताते हुए कहा कि राज्य में वर्ष 2023-24 में देश भर में सर्वाधिक 31 मेजर मिनरल ब्लॉकों की नीलामी की गई। यह समूचे देश में सर्वाधिक होने के साथ ही राजस्थान के माइनिंग इतिहास में भी पहली बार हुआ। नई सरकार आने के बाद तीन माह में ही मेजर मिनरल ब्लॉकों के ऑक्शन के योजनाबद्ध प्रयासों से राजस्थान यह उपलब्धि अर्जित की है। उन्होंने कहा कि माइंस एवं भूविज्ञान विभाग की पूरी टीम द्वारा टीम भावना से किए गए समग्र प्रयासों से संभव हो पाया है। इस उपलब्धि के लिए उन्होंने विभाग के अधिकारियों, कार्मिकों, माइनिंग सेक्टर के स्टेक होल्डर्स सहित प्रदेशवासियों को बधाई दी।

रविकान्त ने बताया कि 31 मेजर मिनरल ब्लॉकों में 22 माइनिंग लीज व 9 कंपोजिट लाइसेंस के लिए नीलामी की गई। इनमें लाईम स्टोन के 22 ब्लॉक, आयरन ओर के 4 ब्लॉक और बेसमेटल के पांच ब्लॉक है। उन्होंने बताया कि मिनरल ब्लॉकों की नीलामी के क्षेत्र में इस वित्तीय वर्ष में भी राजस्थान नया रिकार्ड रचने जा रहा है। निदेशक माइंस भगवती प्रसाद कलाल ने बताया कि राजस्थान में खनिज खोज, खनन प्लाटों का डिलेनियेशन, भारत सरकार के ई पोर्टल पर नीलामी, अवैध खनन पर प्रभावी रोक व अवैध गतिविधियों के खिलाफ अभियान चलाकर कार्यवाही आदि से विभाग को नई गति व राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनी है।

कलाल ने बताया कि वर्ष 2023-24 में 31 मेजर मिनरल ब्लॉकों का ऑक्शन किया गया जिसमें नई सरकार के तीन माह के समय में ऑक्शन में तेजी आने से राजस्थान समूचे देश में पहला स्थान प्राप्त करने में सफल रहा। दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस में अतिरिक्त निदेशक भूविज्ञान एसएन डोडिया और अधीक्षण खनि अभियंता विजिलेंस प्रताप मीणा भी हिस्सा ले रहे हैं। दो दिवसीय नेशनल माइनिंग मिनिस्टर्स कॉन्फ्रेंस के दूसरे दिन मंगलवार को राजस्थान के प्रमुख सचिव माइंस टी. रविकान्त भी ऑक्शन और बेस्ट प्रेक्टिसेज पर प्रदेंगेशन देंगे।

कोणार्क में खान मंत्रियों की कॉन्फ्रेंस में प्रमुख सचिव माइंस टी. रविकान्त ने पुरस्कार प्राप्त किया।

मोबाइल द दुपहिया चुराने वाले गिरफ्तार

जयपुर। प्रताप नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मोबाइल स्नैचिंग और दुपहिया वाहन चुराने वाले गिरोह के तीन शातिर बदमाशों को पकडा है। जिसमें में एक बाल अपचारी भी है। पुलिस आरोपियों के पास से चोरी की बाइक,एक लैपटॉप सहित स्नेचिंग के दौरान छीने गए आठ मोबाइल फोन बरामद किए है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्वनी गौतम ने बताया कि प्रताप नगर थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए मोबाइल स्नैचिंग और दुपहिया वाहन चुराने वाले गिरोह के शातिर बदमाश आसू उर्फ रवि गुर्जर निवासी सांगानेर जयपुर और नवीन उर्फ लुक्का निवासी उच्चैन जिला भरतपुर को गिरफ्तार किया गया है।

असिस्टेंट प्रोफेसर भर्ती के परिणाम में अनियमितता पर जवाब मांगा

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने हिंदी विषय के लिए आयोजित असिस्टेंट प्रोफेसर भर्ती-2023 के परिणाम में अनियमितता बरतने पर आरपीएससी और राज्य सरकार से जवाब तलब किया है। इसके साथ ही अदालत ने भर्ती में दी जा रही नियुक्तियों को याचिका के निर्णय के अधीन रखा है। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश अंजना चौधरी व अन्य की ओर से दायर याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता प्रेमचंद देवंदा ने अदालत को बताया कि आरपीएससी ने हिंदी विषय के असिस्टेंट प्रोफेसर पद के लिए साल 2023 में भर्ती निकाली थी। लिखित परीक्षा के बाद आयोग ने मॉडल उत्तर कुंजी जारी कर आपत्तियां मांगी, लेकिन बाद में अंतिम उत्तर कुंजी ही जारी नहीं की। वहीं भर्ती के 214 पदों के मुकाबले तीन गुणा अभ्यर्थियों को बुलाने के बजाए 1612 अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए बुलाया गया। जबकि नियमानुसार पदों के तीन गुणा से अधिक अभ्यर्थियों को साक्षात्कार के लिए नहीं बुलाया जा सकता। याचिका में यह भी कहा गया कि आयोग ने असफल अभ्यर्थियों के अंक भी सार्वजनिक नहीं किए। याचिकाकर्ता की ओर से बताया गया कि अभ्यर्थियों के अंकों को सार्वजनिक नहीं करना भर्ती की पारदर्शिता पर संदेह उत्पन्न करता है। मॉडल उत्तर कुंजी और लिए गए साक्षात्कार के हिसाब से याचिकाकर्ताओं को अंतिम परीक्षा परिणाम की मुख्य सूची में स्थान मिलना चाहिए था, लेकिन आयोग की मनमर्जी से उन्हें चयन से वंचित कर प्रतीक्षा सूची में डाल दिया। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब करते हुए नियुक्तियां को याचिका के निर्णय के अधीन रखा है।

पेयजल को लेकर नीति पेश करने के दिए आदेश

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने बीसलपुर बांध से पीने के पानी के लिए सप्लाई को वरीयता देने के मामले में राज्य सरकार को पॉलिसी ने पेश करने के लिए चार सप्ताह का समय दिया है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस भुवन गोयल की खंडपीठ ने यह आदेश लोकेन्द्र जैन की ओर से दायर जनहित याचिका व प्रदेश में पेयजल की समस्या पर लिए गए स्वप्रेरित प्रसंज्ञान पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद ने कहा कि पानी कहां और कैसे सप्लाई करना है, यह राज्य सरकार का नीतिगत निर्णय है। वहीं इस संबंध में नीति बनाई जा रही है। इस साथ ही लोकेन्द्र जैन की ओर से दायर याचिका सारहीन हो गई है। दूसरी ओर न्यायमित्र प्रतीक कासलीवाल ने कहा कि अभी तक ईआरसीपी से पानी नहीं मिला है। इस पर अदालत ने कहा कि वे चाहते हैं कि हर घर में पानी पहुंचना चाहिए। अदालत इस मामले में पूर्व में रिट स्वीकार कर चुकी है, जबकि यह मुद्दा को जनहित याचिका में उठाया गया है। इस पर एजी ने कहा कि उन्हें इस संबंध में बनाई जा रही नीति पेश करने के लिए समय दिया जाए। इस पर अदालत ने राज्य सरकार को चार सप्ताह का समय दिया है। जनहित याचिका में कहा गया कि बीसलपुर बांध के पानी की पहली प्राथमिकता पेयजल की होनी चाहिए। यदि पानी सरप्लस होता है तो उसे कृषि के उपयोग के लिए छोडा जा सकता है। वहीं यदि बांध के पानी को कृषि के लिए आरक्षित रखा गया तो आने वाले समय में जयपुर, अजमेर और टोंक के निवासियों के लिए पेयजल का संकट खडा हो सकता है। ऐसे में बीसलपुर बांध से पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित की जाए।

'हाईकोर्ट प्रशासन अपना रुख करे स्पष्ट'

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने हाईकोर्ट प्रशासन को कहा है कि शहर में नए कोर्ट कॉम्पलैक्स के लिए जेडीए की ओर तलाशी गई जमीनों को लेकर अपना रुख स्पष्ट करने को कहा है। जस्टिस इन्द्रजीत सिंह और जस्टिस भुवन गोयल की खंडपीठ ने यह आदेश दीनदयाल खंडेलवाल व धर्मेन्द्र मुलवानी की जनहित याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए। सुनवाई के दौरान अदालत ने कहा कि जेडीए अपने प्रस्ताव में नए कोर्ट कॉम्पलैक्स के लिए नींदड में सौ बीघा जमीन और अजमेर रोड पर रिंग रोड के पास गांव पीपला भगतसिंह में भूमि आरक्षित रखने की जानकारी दे चुका है, लेकिन हाईकोर्ट प्रशासन ने अभी तक उस पर अपना रुख स्पष्ट नहीं किया है।

बजट के लिये सी.आई.आई. ने राज्य सरकार को सिफारिशें सौंपी

■ राइजिंग राजस्थान की सफलता के लिए बधाई भी दी

जयपुर। प्री बजट मेमोरेंडम (पीबीएम) 2025 के लिए सीआईआई ने राज्य सरकार को सिफारिशें सौंपीं।

सीआईआई राजस्थान के वाईस चेयरमैन संजय अग्रवाल ने मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री, उद्योग मंत्री, मुख्य सचिव, अतिरिक्त मुख्य सचिव को राइजिंग राजस्थान की सफलता के लिए बधाई प्रेषित करते हुए क्हा कि एमओयु के क्रियान्वयन के लिए राज्य सरकार द्वारा स्टेप्स लेने पर धन्यवाद दिया।

प्री बजट मेमोरेंडम (पीबीएम) 2025 के लिए सीआईआई ने राज्य सरकार को निम्न सिफारिशें सौंपी। राज्य सरकार ने नई राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना (रिप्स) 2024 एवं 9 नई पॉलिसीज निकाली है। यह एक अभूतपूर्व निर्णय है, मगर पॉलिसीज का इम्प्लीमेंटेषन सबसे महत्वपूर्ण कार्य है। लोगों में इसकी अवेयरनेस की कमी है। हालांकि सीआईआई अपने स्तर पर इसे उद्योगों को सुचित करता रहता है मगर हमारा मानना है कि सरकार के प्रतिनिधि सीआईआई के साथ राज्य के विभिन्न शहरों में इसकी पब्लिसिटी करें, जिसके इसके अच्छे परिणाम मिलेंगे, ऐसा पहले भी होता रहा है।

रिप्स 2024 में क्लाज 6.3 में एमएसएमईज् के एक्सपॉनशन पर कोई इन्सेन्टिव नहीं है। पहले रिप्स 2022 में एमएसएमईज् को एक्सपॉनशन पर इन्सेन्टिव मिलता था। एमएसएमईज् हर स्टेट के रेवेन्यु एण्ड एम्पलॉयमेंट में सबसे बड़ा योगदान देती है। इसी तरह क्लाज 6.2 में रिप्स 2022 को राहत दी गई है पर ऐसे कई उद्योग हैं जिनका प्रोडक्शन कोविड के कारण लंबित हुआ था। इसलिए इस पर हमारा आग्रह है कि इस क्लाज में रिप्स पॉलिसी 2019 को भी शामिल किया जाए। वैसे तो राज्य सरकार एमओयु के क्रियान्वयन के लिए उचित उपाय कर रही है पर हमारा मानना है कि इंडस्ट्री को इसमें साथ लेंगे तो जो लोग रेस्पोण्ड नहीं कर रहे हैं सीआईआई इसमें उन मेंबर्स को मोटिवेट करके एमओयु के इंप्लीमेंटेशन में मदद कर सकता है। ऐसे बहुत सी इंडस्ट्री मेंबर्स होते हैं जिन्हें इसमें मदद की जरूरत होती है। प्रधानमंत्री के नेट जीरो बाई 2070 को अचीव करने के लिए एन्वायरमेन्टल, सोषियल और गवर्ननेंस (ईएसजी), और ग्रीन बिल्डिंग मुवमेन्ट को प्रमोट करने की जरूरत है। लोगों में इसके अवेयरनेस की कमी है। हमारा मानना है कि सरकार ग्रीन बिल्डिंगस, ईएसजी को प्रमोट करने एवं नेट जीरो बाई 2070 को अचीव करने के लिए उन्हें स्टांप ड्यूटी में 1 प्रतिषत की छूट दें जो ग्रीन बिल्डिंग्स बनाते और खरीदते है। रिन्यूएबल एनर्जी को सरकार प्रमोट कर तो रही है परंतु राज्य के लोगों को इसका लाभ कम ही मिल रहा है। राज्य सरकार को के मॉडल करियर सेंटर की तर्ज पर कम से कम हर डिविजनल हैडक्वाटर्स पर एक सेंटर खोलना चाहिए। हमें उम्मीद है कि इस तरह से एक साल में कम से कम 50 हजार लोगों को अतिरिक्त अपॉइंटमेंट मिलेगा। यदि स्किल को इंडस्ट्री के साथ क्लासमेट बनाया जाए तो गारमेंट्स, माइनिंग, टेक्सटाइल, हैंडीक्राफ्ट में एक लाख लोगों को और रोजगार मिलेगा। नए कोर्सेज जैसे ए आई, स्मार्ट एग्रीकल्चर और ड्रोन टेक्नोलॉजी, सोलर टेक्निकल, साइबर सिक्योरिटी के शॉर्ट टर्म क्लासेस की जरूरत है। आंध्र प्रदेश, तमिलनाडु, गुजरात सरकारें पेटेंट और कॉपीराइट्स पर काफी काम कर रही है। वहीं के साथ मिलकर पीपीपी मॉडल पर सेंटर बनाए गए हैं जो स्टार्टअप और इंडस्ट्री को पेटेंट दिलाते में मदद करते हैं और साथ में अवेयरनेस सेशन भी करते है। राज्य में इस अवसर की कमी है और नए स्टार्टअप एवं इंडस्ट्री को इसके बारे में बताने तथा इसका लाभ लेने की जरूरत है। राज्य सरकार को राजस्थान टेक्नोलॉजिकल डेवलपमेंट सेंटर बनाने की जरूरत है।

राज्य सरकार ने 13 फैसिलिटी सेंटर का गठन किया है जिससे का रुका हुआ अमाउंट मिल सके जो की विभिन्न सरकारी विभागों एवं बड़े उद्योगों में 45 दिन से ज्यादा रुका हुआ है।

सीआईआई.राजस्थान के वरिष्ठ निदेशक एवं प्रमुख नितिन गुप्ता भी आज इसमें शामिल हुए।

फर्जी अनुभव प्रमाण पत्र से नौकरी हासिल करने को लेकर अभ्यावेदन तय करने के आदेश

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने सूचना प्रौद्योगिकी एवं संचार विभाग में फर्जी अनुभव प्रमाण पत्र से नौकरी हासिल करने को चुनौती देने वाली याचिका पर विभाग के सचिव और एसओजी को याचिकाकर्ता के अभ्यावेदन को चार सप्ताह में तय करने को कहा है। अदालत ने याचिकाकर्ता को कहा है कि वह एक सप्ताह में अपना अभ्यावेदन पेश करे। जस्टिस समीर जैन की एकलपीठ ने यह आदेश याचिकाकर्ता डॉ. टीएन शर्मा की याचिका पर दिए।

याचिका में अधिवक्ता पीसी भंडारी ने बताया कि आरपीएससी ने साल 2014 में एनालिस्ट कम प्रोग्रामर के 29 पदों पर भर्ती निकाली थी। जिसमें लिखित परीक्षा आयोजित कर अंतिम परिणाम मई, 2017 में जारी किया गया। याचिका में कहा गया कि भर्ती में एक महिला अभ्यर्थी ने एक फर्म में कार्य करने का फर्जी अनुभव प्रमाण पत्र लगाया। जबकि आरटीयू, कोटा से आरटीई में मिली जानकारी के अनुसार महिला निजी इंजीनियरिंग कॉलेज में एसोसिएट प्रोफेसर के तौर पर कार्यरत थी। दूसरी ओर कॉर्पोरेट मंत्रालय से मिली जानकारी के अनुसार संबंधित फर्म ने जुलाई, 2013 के बाद काम ही नहीं किया। इसी तरह एक अन्य महिला अभ्यर्थी डीआरडीओ में रिसर्च स्कॉलर थी, लेकिन इस भर्ती के लिए ऐसे अभ्यर्थी पात्र ही नहीं थे। इस संबंध में एसओजी और विभाग में शिकायत की गई, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं की गई।

डोटासरा बिना बॉल के फुटबॉल खेल रहे हैं, उनको स्वयं को नहीं पता वे क्या बोल देते हैं : मदन राठौड़

■ 'दिल्ली चुनाव को लेकर बयान देने से पूर्व पायलट पहले लीडरशीप के ढुलमुल रवैये को समझने का प्रयास करें'

■ 'निर्दलीय विधायक क्षेत्र के विकास में अटका रहे है रोड़ा, विकास में राजनीति नहीं करनी चाहिए'

जयपुर। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने विपक्ष के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि भाजपा सरकार जनता की अपेक्षाओं के अनुरूप कार्य कर रही है, फिर चाहे विपक्ष को क्या लग रहा है, यह उनकी सोच है। सदन में विपक्ष की भूमिका जैसी होगी, सत्ता पक्ष भी उसी लहजे में उसका जवाब देगा। डोटासरा बिना बॉल के फुटबॉल खेल रहे हैं, उनको पता ही नहीं है कि क्या बोल रहे हैं, उनको बाद में पता चलता है कि मैंने क्या बोल दिया। ऐसे में मेरा विपक्ष से आग्रह है कि विपक्षी नेताओं को बोलने से पहले अपने घर में झांक लेना चाहिए, दूसरों के घर में ताकझांक करना अच्छी आदत नहीं है।

राठौड़ ने दिल्ली चुनावों को लेकर सचिन पायलट के बयान पर पलटवार करते हुए कहा कि पायलट को याद रखना चाहिए कि दिल्ली में पिछली बार कांग्रेस को कितनी सीट मिली थीं। पायलट को अपने नेतृत्व और लीडरशीप के ढुलमुल नीति को समझने का भी प्रयास करना चाहिए। बिना सोचे समझे बयानबाजी नहीं करनी चाहिए। दिल्ली में जनता ने भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाने का मानस बना लिया है। भाजपा अपने एजेंडे और घोषणा पत्र के अनुरूप कार्य कर रही है, भाजपा को जनता का पूर्ण आशीर्वाद मिलेगा। उन्होंने कहा कि भाजपा नीतियों, सिद्धांतों पर आधारित राजनीति करती है, जातिवाद की राजनीति भाजपा में नहीं की जाती है। यहां जनता जो चाहेगी वो ही कार्य होगा। जातिगत आधार पर कार्य नहीं किया जाता। भाजपा ने जन अपेक्षाओं के अनुरूप उम्मीदवार उतारे है। भाजपा कभी भी रेवड़ियां बांटने का कार्य नहीं करती। विपक्ष आनन फानन में रेवड़ियां बांटकर चुनावी लाभ लेने के लिए योजनाओं की घोषणा करता है, फिर उनका क्रियान्वयन नहीं हो पाता।

3.72 ग्राम स्मैक के साथ तस्कर पकड़ा

जयपुर। कानोता थाना पुलिस और जिला स्पेशल टीम जयपुर पूर्व ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ स्मैक की तस्करी करने वाले एक शातिर तस्कर को गिरफ्तार किया है और उसके पास से 3.72 ग्राम स्मैक जब्त की है। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्वनी गौतम ने बताया कि अवैध मादक पदार्थ स्मैक की तस्करी करने वाले तस्कर ओमी सिंह सिंघीवाल को गिरफ्तार किया।

16 मंडल अध्यक्षों की नियुक्ति पर रोक

जयपुर। भाजपा संगठन पर्व की प्रदेश अपील समिति की ओर से सोमवार को प्रदेश के 16 मंडल अध्यक्षों की नियुक्ति पर अंतरिम रोक लगाने तथा 5 मंडल अध्यक्षों की नियुक्ति को निरस्त करने की घोषणा की है। संगठन पर्व 2024 की प्रदेश अपील समिति के प्रदेश संयोजक घनश्याम तिवाड़ी, सह संयोजक सरदार अजयपाल सिंह और योगेंद्र सिंह तंवर ने सोमवार को बैठक कर प्रदेश के 16 मंडल अध्यक्षों के खिलाफ निर्वाचन मापदंडों के उल्लंघन का आरोप पाए जाने पर उनकी नियुक्ति पर रोक लगाने का निर्णय किया है।

समिति के प्रदेश संयोजक घनश्याम तिवाड़ी ने बताया कि जयपुर शहर से जलमहल और पौड्रिक मंडल, जयपुर देहात से चौमूं नगर, भरतपुर से सेवर, रूदावल, सिरोही से डूंगरखेडा, अलवर दक्षिण से मालाखेड़ा, चूरू के रतनगढ़, अलवर के खोह, बीकानेर शहर के रानीबाजार, जुनागढ, पुराना शहर, जस्सुसर, नया शहर, बूंदी के इन्द्रगढ़ ग्रामीण और हनुमानगढ़ के संगरिया नगर मंडल अध्यक्षों की नियुक्ति पर अंतरिम रूप से रोक लगाई गई।

उन्होंने बताया कि समिति ने प्रदेश के 5 मंडल अध्यक्षों के निर्वाचन को निरस्त करने की घोषणा की है। इनमें अलवर दक्षिण के थानागाजी, भरतपुर के उज्जैन, जालौर के भीनमाल नगर, उदयपुर देहात के डबोक और सिरोही के पोसलिया मंडल अध्यक्ष की नियुक्ति को निरस्त किया गया।

रबी सीजन 2025-26 में गेहूं खरीद हेतु सभी तैयारियां हो समयबद्ध रूप से पूरी : सुमित गोदारा

■ 'खरीद प्रक्रिया में सुगमता हेतु संबंधित एंजेंसिया उचित समन्वय के साथ काम करें'

जयपुर। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा की अध्यक्षता में सोमवार को सचिवालय में रबी सीजन 2025-26 में राज्य में समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीद के संबंध में महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रदेश में गेहूं खरीद करने वाली सभी पांच एंजेंसियों (एफसीआई, राजफेड, तिलमसंघ, एफसीसीएफ एवं नेफेड) के प्रतिनिधियों समेत सभी संबंधित विभागों के आला अधिकारी उपस्थित रहे।

गोदारा ने कहा कि राजस्थान एक कृषि प्रधान प्रदेश है। राज्य सरकार किसानों के हितों को संरक्षित करने हेतु कृत संकल्पित होकर कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि गेहूं उत्पादन में राजस्थान अग्रणी राज्य बनकर उभर रहा है। आगामी रबी सीजन में गेहूं के समर्थन मूल्य पर खरीद हेतु सभी तैयारियां समयबद्ध रूप से पूरी कर ली जाएं। उन्होंने कहा कि खरीद प्रक्रिया में शामिल सभी पांच एजेंसियां एफसीआई, राजफेड, तिलमसंघ, एफसीसीएफ एवं नेफेड आपस में उपयुक्त समन्वय के साथ कार्य करें ताकि गेहूं खरीद से लेकर भुगतान तक की प्रक्रिया में किसानों को किसी भी प्रकार की दिक्कत ना हो। अधिक उत्पादन की संभावना वाले क्षेत्रों में उचित चयन उपरांत आवश्यकतानुसार नए खरीद केंद्र खोले जाएं। इस हेतु अधिकारी जिलों के दौरे कर खरीद केंद्र की जरूरत वाले स्थानों को चिन्हित करें। गोदारा ने कहा कि मंडियों में खरीद के लिए उचित स्थान की व्यवस्था की जाए। आवश्यकतानुसार बारदाने की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए। गिरदावरी की प्रक्रिया को पूर्ण पारदर्शिता के साथ पूरा किया जाए। साथ ही तो मंडियों में आवश्यक सफाई व्यवस्था भी सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि उचित प्रचार प्रसार के माध्यम से आगामी रबी सीजन में राज्य में समर्थन मूल्य पर गेहूं खरीद संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां किसानों को दी जाएं। हेल्पलाइन के माध्यम से भी किसानों द्वारा मांगी जाने वाली सूचनाओं को प्रभावी रूप से साझा किया जाए।

बैठक में राजस्थान राज्य भंडारण निगम के प्रबंध निदेशक संदीप वर्मा ने कहा कि रबी सीजन 2025-26 के मद्देनजर राज्य सरकार के निर्देशानुसार सभी भंडारगृहों में उचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही है। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के प्रमुख शासन सचिव सुबीर कुमार ने कहा कि आगामी रबी सीजन को देखते हुए सभी संबंधित अधिकारी अपनी जिम्मेदारियों का उत्कृष्ट निर्वहन करें।

बैठक में एफसीआई के प्रबंध निदेशक सौरव चौरसिया, तिलमसंघ के अध्यक्ष राजेश गुप्ता, राजफेड प्रबंध निदेशक नारायण सिंह, एफसीसीएफ से मधु शर्मा, नेफेड से महेंद्र सिंह रावत,अतिरिक्त खाद्य आयुक्त पूनम प्रसाद सागर सहित विभिन्न उच्चाधिकारी उपस्थित रहे।

केन्द्रीय संचार ब्यूरो की विकसित भारत-2047 मल्टी मीडिया प्रदर्शनी का उद्घाटन

विकसित भारत के सपने को पूरा करने की हम सबकी जिम्मेदारी : कानून मंत्री अर्जुनराम मेघवाल

विकसित भारत-2047 मल्टी मीडिया प्रदर्शनी का केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने उद्घाटन किया।

- पांच दिवसीय मल्टी मीडिया प्रदर्शनी में केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई है

उदयपुर, (निसं)। प्रधानमंत्री ने भारत को वर्ष 2047 तक विकसित बनाने का जो सपना देखा है, उसे पूरा करने की जिम्मेदारी हम सबकी है। हम जहां भी हों और जो भी करें उसे बेहतर ढंग से करने का प्रयास करेंगे तो इस सपने को पूरा करने में सहायक बनेंगे। यह उद्गार केंद्रीय कानून एवं न्याय, संस्कृति तथा संसदीय कार्य मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने व्यक्त किए। वे यहां केंद्रीय संचार ब्यूरो, क्षेत्रीय कार्यालय, उदयपुर द्वारा पीएम राजकीय फतेह उच्च माध्यमिक विद्यालय परिसर में आयोजित विकसित भारत-2047 मल्टी मीडिया प्रदर्शनी के उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे।

इस अवसर पर शहर के विधायक ताराचंद जैन, प्रवर डाक अधीक्षक अक्षय भानुदास, रवींद्र श्रीमाली, राजेंद्र शेखावत आदि उपस्थित थे। मेघवाल ने प्रदर्शनी का फीता काटकर उद्घाटन किया। इसके पश्चात् आयोजित सभा को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि हम सबको सपने देखने चाहिए और वे बड़े भी होने चाहिए, मगर इससे ज्यादा महत्वपूर्ण यह है कि हमें उन सपनों को पूरा करने के लिए योजनाबद्ध तरीके से प्रयास करने चाहिए।

प्रारंभ में विभाग के सहायक निदेशक रामेश्वर लाल मीणा तथा पराग मांदले ने अतिथियों का सम्मान किया। कार्यक्रम की रूपरेखा बताते हुए रामेश्वर लाल मीणा ने कहा कि इस पांच दिवसीय मल्टी मीडिया प्रदर्शनी में केंद्र सरकार की विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई है। इसके अलावा विभिन्न राजकीय विभागों के स्टॉल यहां लगाए गए हैं जहां विभिन्न योजनाओं की जानकारी व सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। इस अवसर पर सुकन्या समृद्धि योजना की लाभार्थी हयात फातिमा तथा कार्तिका सुथार को मंत्री के हाथों बचत खाते की पुस्तिका प्रदान की गई। इसके अलावा इस दौरान आयोजित प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता के विजेताओं को भी अतिथियों ने पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इससे पूर्व विभिन्न सत्रों में सीडीपीओ प्रताप सिंह ने महिला व बाल विकास विभाग की, अक्षय भानुदास व ऐश्वर्य भटनागर ने डाक विभाग की, विमला वीरवाल ने महिला अधिकारिता विभाग की, शिवदयाल मीणा ने कृषि विभाग की तथा मितेश स्वर्णकार ने भारतीय स्टेट बैंक की विभिन्न योजनाओं व कार्यक्रमों की जानकारी दी। संचालन फूलसिंह गहलोत ने किया, जबकि आभार प्रदर्शन प्रेम सिंह ने किया।

इस अवसर पर विभाग से पंजीकृत कला समूह लीलादेवी तेरा ताली पार्टी के कलाकारों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। प्रदर्शनी में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग, महिला व बाल विकास विभाग, कृषि विभाग, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, नगर निगम, उदयपुर, डाक विभाग, महिला अधिकारिता विभाग, ग्राम विकास व पंचायती राज विभाग, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग तथा जनजातीय क्षेत्रीय विकास विभाग के स्टॉल लगाए गए हैं। इसके अलावा डाक विभाग द्वारा आधार कार्ड में संशोधन की सुविधा भी उपलब्ध कराई जा रही है। केन्द्र व राज्य सरकार की विभिन्न लोक-कल्याणकारी योजनाओं पर केंद्रित इस पांच दिवसीय प्रदर्शनी में विभिन्न अत्याधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल किया गया है। इसमें नयी पीढ़ी में लोकप्रिय मोशन गेम, वर्चुअल रियलिटी का अनुभव देने वाले वीडियो, ऑनलाइन क्विज, 360 डिग्री वीडियो के साथ-साथ फिट इंडिया कार्यक्रम के तहत विभिन्न फिटनेस उपकरण भी दर्शकों के प्रयोग के लिए लगाए गए हैं। इसके अलावा कैरीकेचर फोटो, रिंग लाइट फोटो, ऑनलाइन क्विज आदि की सुविधा भी उपलब्ध कराई है।

मल्टी मीडिया प्रदर्शनी में केंद्र और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं पर पैनल लगाए गए हैं। इस अवसर पर अनेक प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया जा रहा है। प्रदर्शनी चौबिस जनवरी तक सुबह दस से शाम चार बजे तक आम नागरिकों के लिए निःशुल्क खुली रहेगी।

बॉर्डर पर घूमते बुजुर्ग को हथियार समेत पकड़ा

बीकानेर, (निसं)। भारत-पाकिस्तान बॉर्डर पर बॉर्डर सिक्योरिटी फोर्स ने एक बुजुर्ग व्यक्ति को हथियार के साथ पकड़ा है। फिलहाल इस बुजुर्ग को खाजूवाला पुलिस के हवाले किया गया है। बीएसएफ के जवान पाकिस्तान से सटी तारबंदी के पास ही दस बी.डी. से एक बुजुर्ग जरनैल सिंह को हथियार और दो कारतूस के साथ पकड़ा है। पूछताछ में वो कुछ संतोषजनक जवाब नहीं दे पाया। ऐसे में बीएसएफ के जवानों ने उसे पकड़ लिया। बाद में खाजूवाला पुलिस को मौके पर बुलाकर उसके सुपुर्द कर दिया। खाजूवाला पुलिस ने उसके खिलाफ आर्म्स एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। फिलहाल ये पता लगाया जा रहा है कि ये बुजुर्ग हथियार लेकर बॉर्डर के पास क्यों गया था इसके पीछे कोई बड़ा कारण है या फिर भूल से पहुंच गया। जरनैल सिंह के बैकग्राउंड का भी पता किया जा रहा है कि वो कौन है और यहां कैसे आया।

BLMCL
Barmer Lignite Mining Company Limited (A Govt. of Rajasthan Enterprise)
Corporate Office: Office No. 2 & 3, 7th Floor Man Upasana Plaza C-44, Sardar Patel Marg,C-Scheme, Jaipur – 302001 (INDIA)
CIN : U14109RJ2007SGC023687
Website : www.blmcl.in, E-Mail : blmcl@blmcl.in
Ph: +91-141-2369772, Fax: +91-141-2369774

Date: 16.01.2025

EXTENSION OF NOTICE INVITING TENDER (NIT)

Notice Inviting Tender(NIT) for Tender No.: BLMCL/MD/JPR/2024-25/110 dated 12.12.2024 for **'Fabrication and fixing of MS Information Boards at CER Initiative Sites located in Barmer, Rajasthan'** was issued on 12.12.2024. The last date for receiving the prosposal and opening of bids are as under:

Sr. No.	Particulars	Earlier Date	Extended Date
1.	Last date for receipt of tender	16th January, 2025, 3.30 PM	Upto 23rd January, 2025, 3:30 PM
2.	Date of Tender Opening	17th January, 2025, 3:00 PM	24th January, 2025, 3:00 PM

Keep visiting our website for updated information, If any, before the closing date of NIT.

Mr. Naresh Kumar Purohit
AVP (Operations)

Raj.Samwad/C/24/10528

कार्यालय नगरपालिका आमेट (राजसमन्द)

क्रमांक : एफ( )नपआ/इंजी/ई निविदा/3/2024-25/1505 दिनांक :- 17/01/2025

ई-निविदा सूचना संख्या 3/2024-25

नगरपालिका आमेट द्वारा निम्नांकित योजनाओं के विकास कार्यो हेतु समस्त विभागों में पंजीकृत संवेदकों, कम्पनी, संगठनों/संस्थानों से ई-प्रोक्यूरमेन्ट प्रक्रिया हेतु ऑनलाईन तकनीकी व वित्तिय निविदाएं आमंत्रित की जाती है। निविदा से संबंधित विस्तृत विवरण वेबसाईट www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखी व डाउनलोड की जा सकती है।

निविदा क्रार्यक्रम	तिथि व समय
कार्य की संख्या	5
कार्यो की अनुमानित लागत	140.00 लाख
निविदा अपलोड की तिथि	20.01.2025 06:00 PM
निविदा डाउनलोड प्रारम्भ तिथि	20.01.2025 09:00 AM
ऑनलाईन निविदा प्रस्तुत करने की अन्तिम तिथि	05.02.2025 06:00 PM
भौतिक रूप से दस्तावेज जमा करने की तिथि	05.02.2025 01:00 PM
ऑनलाईन निविदा खोलने की तिथि	06.02.2025 04:00 PM
ऑनलाईन निविदा हेतु वेबसाईट	http://eproc.rajasthan.gov.in
दोष निवारण अवधी	नियमानुसार
UBN No.	DLB2425WSOB15219

राज.संवाद/सी/24/10552 प्रशासक नगरपालिका आमेट अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका आमेट

ईंट-भट्टा मालिक सहित तीन लोगों ने मजदूर को बंधक बनाया, मारपीट की

पीड़ित ट्रैक्टर ड्राइवर मजदूर।

- पीड़ित ने पचेरी कलां थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई, मारपीट कर रूपए मांगने का आरोप लगाया
- ईंट भट्ठा मालिक ने ट्रैक्टर ड्राइवर मजदूर पर बिल से अधिक ईंटें ले जाने के आरोप में मारपीट करने की बात कही

खेतड़ी, (निसं)। पचेरी कलां थाना क्षेत्र के मेघपुर-पाथरोली गांव में ओपीवाई यादव ईंट-भट्टा पर ट्रैक्टर चालक मजदूर को बंधक बनाकर बेरहमी से पीटने का मामला सामने आया है। ट्रैक्टर ड्राइवर मजदूर ने ईंट-भट्टा मालिक सहित तीन जनों के खिलाफ मारपीट कर रूपए मांगने की रिपोर्ट दर्ज करवाई है।

थानाधिकारी राजपाल सिंह ने बताया कि कोटड़ी खंडेला के ढाणी गुमान सिंह निवासी पीड़ित चिमनलाल पुत्र मूलचंद मेघवाल ने रिपोर्ट दर्ज कराई है कि व बलदेव मीणा पुत्र अनाराम मीणा का ट्रैक्टर चलाते हैं, जो की मेघपुर ओपीवाई ईंट-भट्टे पर ईंटे भरकर नवलगढ़ एरिया में सप्लाई करते हैं। शनिवार की शाम ईंटे भरकर मुनीम को पैसे देकर ठेकेदार के दफ्तर में पानी पीने लगा तो ठेकेदार विनोद, मुनीम बलराज सहित दो-तीन लोग आकर मारपीट करने लगे। रात को बंधक बनाकर मारपीट करते रहे तथा काले रंग की स्कॉर्पियो गाड़ी में बैठक दूसरी जगह लगे। मारपीट के दौरान ट्रैक्टर मालिक से फोन करवाकर पैसे मांगने की मांग करते रहे। सुबह शौच का बहाना लेकर पीड़ित ने ट्रैक्टर मालिक को लेकर थाने में पहुंचकर रिपोर्ट दर्ज कराई है। दूसरी तरफ ईंट भट्ठा मालिक ने ट्रैक्टर ड्राइवर मजदूर पर बिल से अधिक ईंटें ले जाने के आरोप में मारपीट करने की बात कही है। पुलिस ने मारपीट से घायल हुए मजदूर का मेडिकल परीक्षण करवाकर रिपोर्ट दर्ज कर जांच अधिकारी बुहाना डिप्टी को सौंप दी गई है।

जानकारी के अनुसार पचेरी क्षेत्र में ईंट भट्ठे अधिक संख्या में हैं जो कि आए दिन बाहर से आए हुए मजदूरों के साथ मारपीट करने व पैसे नहीं देने के मामले आते रहते, लेकिन कारवाई नहीं होने से भट्ठे मालिकों के हौसले बुलंद हैं।

खड़े ट्रक में घुसी कार, सेना के जवान की मौत

- हादसे में घायल व्यक्ति को पीबीएम ट्रॉमा सेंटर रेफर किया गया

बीकानेर, (निसं)। नेशनल हाईवे पर तेज रफ्तार कार सड़क किनारे खड़े ट्रक से टकरा गई। हादसे में कार सवार दो व्यक्तियों में से एक आर्मी जवान की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरा व्यक्ति गंभीर रूप से घायल हो गया। घायल व्यक्ति को पीबीएम ट्रॉमा सेंटर रेफर किया गया है।

जानकारी के अनुसार हादसा नापासर थाना क्षेत्र के नेशनल हाईवे संख्या-11 पर रायसर में होटल ओम बना के पास शाम करीब पांच बजे हुआ। सूचना मिलते ही नापासर थानाधिकारी लक्ष्मण सुथार, हेड कॉन्स्टेबल मूलाराम और जवानों के साथ मौके पर पहुंचे, जहां पर पुलिस ने प्राथमिकता पर फंसे हुए व्यक्ति को निकालकर बीकानेर के ट्रॉमा सेंटर भेजा। एक व्यक्ति की मौके पर ही मौत हो गई थी। पुलिस ने बताया कि मृतक के पास से मिली आईडी से पता चला कि मृतक जवान का नाम हरियाणा निवासी दीपक है, जो वर्तमान में बीकानेर में सैन्य छावनी में 24 आर्टरी में तैनात था, जबकि घायल का नाम दलजीत है। पुलिस ने मृतक के शव को नापासर मॉर्च्युरी में रखवाया है और आर्मी अधिकारियों को सूचित किया गया है। घायल व्यक्ति का इलाज बीकानेर ट्रॉमा सेंटर में जारी है। थानाधिकारी के अनुसार आर्मी के अधिकारियों के आने पर ही मृतक और घायल व्यक्ति के बारे में अधिक जानकारी सामने आ सकेगी।

हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड
HINDUSTAN COPPER LIMITED
www.hindustancopper.com

विज्ञप्ति सं. एचसीएल/केसीसी/मा. सं./भर्ती/25 दिनांकः 18.01.2025

हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड, खेतड़ी कॉपर काम्पलैक्स ने योग्य उम्मीदवारों से निम्नलिखित पदों के लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए हैः-

क्रम सं.	पद का नाम	अनारक्षित	अनु. जाति	अन. जनजाति	अ.पि.व. (NCL)	ई.डब्ल्यू.एस.	योग
1	चार्जमैन इलेक्ट्रिकल	12	03	02	05	02	24
2	इलेक्ट्रीशियन 'ए'	17	05	04	07	03	36
3	इलेक्ट्रीशियन 'बी'	16	06	04	07	03	36
4	डब्ल्यू.ई.डी. 'बी'	02	01	00	03	01	07
	कुल रिक्तियां	47	15	10	22	09	103

आनॅलाइन आवेदन-पत्र की प्रारंभ तिथि 27.01.2025 एवं अन्तिम तिथि 25.02.2025 है। पात्र अभ्यर्थी आवेदन करें। अधिक जानकारी के लिए हि.कॉ.लि. की वेबसाइट www.hindustancopper.com के कैरियर खंड में देखें।

खेतड़ी कॉपर कॉम्पलेक्स
पो. ऑ.: खेतड़ी नगर-333504, जिला झुन्झनू (राज.) भारत
ई-मेल : kcc_careers@hindustancopper.com, CIN: L27201WB1967GOI028825

सड़क हादसे में दो की मौत, चार घायल

मूण्डवा/नागौर, (निसं)। जिले के नागौर-अजमेर राष्ट्रीय राजमार्ग-58 पर मूण्डवा के निकट सोमवार सुबह लोडिंग जीप व ट्रक की आमने-सामने की टक्कर हो गई। हादसे में दो जनों की मौत हो गई, जबकि चार अन्य घायल हो गए। हादसे का मुख्य कारण घने कोहरे को माना जा रहा है।

लोडिंग जीप में कुछ लोग नागौर से कुचेरा की तरफ सब्जी लेकर जा रहे थे, वहीं सामने से आए ट्रक ने जीप को चपेट में ले लिया, जिससे जीप का आगे का हिस्सा चकनाचूर हो गया। हादसे की जानकारी मिलने पर मूण्डवा पुलिस मौके पर पहुंची तथा घायलों को अस्पताल पहुंचाया, वहीं मृतकों के शव वाहन में फंस गए, जिन्हें क्रेन की सहायता से निकाला गया। पुलिस के अनुसार मृतकों की पहचान आकेली रोड कुचेरा निवासी सुरेश सांखला (26) पुत्र पापालाल सांखला व रमजान (27) पुत्र फतू मोहम्मद तेली के रूम में हुई है। वहीं घायल होने वालों में कुचेरा निवासी राकेश पुत्र चेनाराम गुर्जर, हुक्माराम पुत्र बलदेवराम मेघवाल, कमल पुत्र श्रवण माली व सुनील सांखला पुत्र पापालाल है।

सिपाही पर गाड़ी चढ़ाने का प्रयास, एक गिरफ्तार

जोधपुर, (कासं)। शहर के मिल्कमैन कॉलोनी में बिना नंबरी गेटवे गाड़ी लेकर उत्पात मचाने वाले एक युवक को शास्त्री नगर पुलिस ने पकड़ा है। आरोपी ने पुलिस की गाड़ी को टक्कर मारने के साथ बाइक को क्षतिग्रस्त कर दिया। बाइक से गिरने पर कांस्टेबल जख्मी हो गया। इस पर आरोपी के खिलाफ हत्या प्रयास, राजकार्य में बाधा उत्पन्न किए जाने का केस दर्ज किया गया। आरोपी चांदणा भाखर ज्योति नगर सूंथला निवासी नंदकिशोर उर्फ नंदूपुरी पुत्र पुखराज गोस्वामी को पहले शांतिभंग में पकड़ा गया। अब उसे मुकदमे में गिरफ्तार किया है। पुलिस को सूचना मिली कि प्रतापनगर सूंथला का नंदूपुरी अपनी गेटवे गाड़ी लेकर मिल्कमैन कॉलोनी में बिना नंबरी गाड़ी लेकर घूम रहा है और उत्पात मचाता है। इस पर सब इंसपेक्टर शैतान चौधरी, कांस्टेबल श्रवण आदि वहां पहुंचे। मिल्कमैन कॉलोनी में पुलिस ने नाकाबंदी कर उसे पकड़ने का प्रयास किया तो वह पुलिस से उलझता हुआ भागने लगा। इस पर कांस्टेबल श्रवण की तरफ से उसे रोकने के लिए बाइक को लेकर खड़ा हो गया।

जरूरत पड़ी तो अप्रैल में ट्रांसफर से बैन हटा सकती है सरकार : जोगाराम पटेल

- 'कांग्रेस ने सिर्फ चुनाव के समय वाहवाही लूटने के लिए अंग्रेजी मीडियम स्कूल शुरू किये'
- 'हमारी सरकार 5 साल में चार लाख बेरोजगार युवाओं को सरकारी नौकरी देगी'
- संसदीय कार्य, विधि एवं विधिक मंत्री जोगाराम पटेल ने मीडिया से बात की

जोधपुर, (कासं)। संसदीय कार्य, विधि एवं विधिक मंत्री जोगाराम पटेल ने कहा है कि भाजपा सरकार के शासन में कर्मचारियों के तबादले पूरी पारदर्शिता के साथ किए गए हैं। सरकारी कर्मचारी हमारे अपने हैं और जरूरत पड़ने पर सरकार अप्रैल में फिर से ट्रांसफर से बैन हटा सकती है। कैबिनेट मंत्री पटेल ने यह बात सोमवार को सर्किट हाउस में मीडिया से बात करते हुए कही।

पटेल ने कांग्रेस सरकार पर आरोप लगाते हुए कहा कि पूर्ववर्ती सरकार के मुखिया ने अपने प्रदेश अध्यक्ष को लेकर नाकारा-निकम्मा जैसे शब्द काम में लिए। इतना ही नहीं उन्होंने शिक्षा मंत्री की मौजूदगी में आम शिक्षकों से पूछा कि क्या आप ट्रांसफर के लिए रिश्वत के पैसे देते हैं? इसका जवाब कांग्रेस को देना चाहिए। हमारी सरकार में किसी ने ट्रांसफर पर कोई आरोप नहीं लगाया है। पटेल ने कहा कि कांग्रेस सरकार हमारी सरकार पर सवाल उठा रही है, लेकिन हमारी सरकार ने बजट घोषणाओं को धरातल पर लाने का काम किया है। बजट को लेकर वित्तीय स्वीकृतियां जारी हो चुकी हैं। अंग्रेजी माध्यम स्कूलों को बंद करने के सवाल पर कानून मंत्री ने कहा कि कांग्रेस सरकार ने अंग्रेजी मीडियम स्कूल खोले, लेकिन शिक्षकों की भर्ती नहीं की, जबकि प्रारंभिक स्तर से ही अंग्रेजी माध्यम के स्कूल को खोलना चाहिए था लेकिन कांग्रेस ने सिर्फ चुनाव के समय वाहवाही लूटने के लिए ही इन्हें शुरू किया।

मंत्री पटेल ने कहा कि इतना ही नहीं पहले से ही चल रहे हिंदी मीडियम के स्कूलों पर अंग्रेजी मीडियम के बोर्ड लगा दिए गए। इसको लेकर जब हमने जांच करवाई तो 287 विद्यालय प्रदेश में ऐसे पाए गए जिनमें जीरो या दस से कम नामांकन थे। क्या ऐसे विद्यालय चलने चाहिए थे, लेकिन कांग्रेस ने इस तरफ कभी ध्यान नहीं दिया। इसकी समीक्षा की जा रही है। इसको लेकर कांग्रेसी डरे हुए हैं। इसके साथ उन्होंने कहा कि कांग्रेस अंतर्कलह से भरी हुई है। कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए कहा कि उन्होंने पेपर माफिया नकल माफिया को पनपाया, लेकिन हमारी सरकार ने एसआईटी गठित कर उन्हें खत्म करने का काम किया। उन्होंने कांग्रेस की पूर्ववर्ती सरकार से सवाल पूछा कि उनके कार्यकाल में कितना बिजली उत्पादन किया गया, जबकि आज भाजपा सरकार के समय में बिजली उत्पादन उनसे कहीं गुना अधिक है। हमारी सरकार 5 साल में चार लाख बेरोजगार युवाओं को सरकारी नौकरी देगी। हमारी सरकार ने जो बजट घोषणा की वो ऐतिहासिक बजट है, जिसे धरातल पर लाए हैं।

राजस्थान सरकार
निदेशालय खान एवं भूविज्ञान विभाग, राजस्थान, उदयपुर
क्रमांक-निदे/अ.ख.अ.नीलामी/नीलामी (ML Bajri 03)/2025/ई-09786

ई-नीलामी विज्ञप्ति

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राजस्थान अप्रधान खनिज रियायत नियमावली, 2017 के अध्याय-III के तहत विभाग के अप्रधान खनिज बजरी के खननपट्टों के आंवटन के लिए निम्नांकित प्लॉट ई-नीलामी के माध्यम से दिये जाने हेतु इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म पर खुली बोली आमंत्रित की जाती है। संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः-

जिला	तहसील	राजस्व ग्राम	प्लॉटस की संख्या
सिरोही	शिवगंज	माड़ानी, सवली व नारादरा	1
		उम्मेदगढ़	1
		नारादरा	2
		लोटीवाड़ा बड़ा	1
भीलवाड़ा	काछेला, कोटड़ी	थलकलां, हस्ताड़ा	1
जोधपुर	पीपाड़ शहर	पीपाड़ शहर, खुड़ेचा व नानण	1
		नानण व जालीवाड़ा कलां	1
जालोर	जालोर व आहोर	रतनपुरा व लेटा	1
	आहोर	थावला व मादड़ी थावला	1 1
		भागली पुरोहितान व सनवाड़ा	2
		सनवाड़ा	1
		सनवाड़ा, मादड़ी व थावला	1
		सनवाड़ा, छिपरवाड़ा व थावला	1
		दयालपुरा प्रथम	1
योग			17

विशेष नोटः-
1 प्लॉटों का विस्तृत विवरण, अमानत राशि, बोली प्रस्तुत करने की तिथि व समय इत्यादि का विवरण, ई-ऑक्शन की शर्ते विभागीय वेबसाइट www.mines.rajasthan.gov.in एवं इलेक्ट्रोनिक प्लेटफार्म प्रदाता कंपनी MSTC Ltd. की वेबसाइट www.mstcecommerce.com पर उपलब्ध है।

DIPR/C/570/2025 (भगवती प्रसाद कलाल) निदेशक

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, खण्ड टोडाभीम

क्रमांक : 2457 2465 दिनांकः 08-01-2025

ई-निविदा सूचना संख्याः 10/2024-25

राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से जिला करौली (खण्ड टोडाभीम) में सड़क / भवन कार्य हेतु उपयुक्त श्रेणी में सार्वजनिक निर्माण विभाग राजस्थान एवं राज्य सरकार के अन्य विभागों तथा केन्द्र सरकार के अधिकृत संगठनों / केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग / रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदकों, जो कि राजस्थान सरकार के यथोचित श्रेणी के संवेदकों के समकक्ष हो, से कार्यो हेतु ई-टेण्डरिंग के माध्यम से निर्धारित प्रपत्र में प्राप्त की जावेगी। निविदा से संबंधित विवरण बेवसाईट साईट www.dipronline.org व www.eproc.rajasthan.gov.in एवं www.sppp.rajasthan.gov.in पर देखा जा सकता है।

1. UBN No. PWD2425WSOB13603

(के. के. मीना)
अधिशाषी अभियन्ता
सा.नि.वि. खण्ड टोडाभीम

DIPR/C/616/2025

कार्यालय उपवन संरक्षक धौलपुर

क्रमांक-उ.व.सं.धौ./लेखा/निविदा/2024-25/105-15 दिनांक-08.01.2025

Notice Inviting Bid

Bid for rate contract for various Advance Soil work though machines in Dholpur Division are invited from interested bidders upto 5:00 PM, 17-01.2025. other particulars of bid may be visited on the procurement portal http://sppp.raj.nic.in and https://eproc.rajasthan.gov.in of the state.

S. No.	Name of work	Amount (In lakhs)	UBN NO
1	Advance soil work through machines in bari range	13.10	FOR2425WSOB03711
2	Advance soil work Rate contract through machines in All range	50.00	FOR2425WSRC03712

DIPR/C/506/2025 DCF Dholpur

कार्यालय जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा जालोर

क्रमांक :- जिपस/जा/लेखा/2024-25/171 दिनांक :- 15/01/2025

NOTICE INVITING E-BID (NIB: 02/2024-25)

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद, जयपुर के निर्देशानुसार जालोर जिले में संचालित कस्तुरबा गॉधी राजकीय विद्यालयों/स्वामी विवेकानन्द राजकीय मॉडल विद्यालयों/कार्यालयों में मानव संसाधन लगाए जाने हेतु श्रम विभाग में पंजीकृत निविदादाताओं/फर्मो से मोहरबंद लिफाफे में ई-निविदा आमंत्रित की जाती है। निविदा दिनांक 16.01.2024 से दिनांक 04.02.2025 को शाम 06:00 बजे तक ऑनलाईन आंमत्रित कि जाती जिसकी अनुमानित लागत 200.00 लाख रूपयें है। निविदा से सम्बधित अधिक जानकारी के लिए साईट http//eproc.rajasthan.gov.in एवं साईट http//sppp.rajasthan.gov.in पर नियम एवं शर्ते देखी जा सकती है।

UBN No. RSE2425SLRC02118

जिला परियोजना समन्वयक
समग्र शिक्षा, जालोर

राज.संवाद/सी/24/10537

श्रीमाधोपुर में एक ही रात में दो मकानों में लाखों की चोरी

- बीएसएफ जवान व बार संघ महासचिव के घर को चोरों ने निशाना बनाया

श्रीमाधोपुर (निसं)। तपोवन कॉलोनी वार्ड नं. 16 श्रीमाधोपुर में चोरों ने एक ही रात में दो अलग-अलग सूने मकानों को निशाना बनाते हुए लाखों रुपए की नकदी और सोने-चांदी के आभूषण चुरा लिए। घटना ने पुलिस की रात्रि गश्त की पोल खोलकर रख दी है। इनमें से एक मकान बीएसएफ जवान महेंद्र रोहलानियां का था, जबकि दूसरा मकान एडवोकेट दीपेंद्र कुमार भारद्वाज का था।

पहली चोरी की घटना बीएसएफ जवान महेंद्र रोहलानियां के घर में हुई। महेंद्र के बेटे राहुल ने बताया कि 16 जनवरी को वह अपनी बहन प्रियंका के साथ मां कौशल्या देवी को इलाज के लिए हिसार ले गए थे। इस दौरान उनके पिता पंजाब में ड्यूटी पर थे। घर पूरी तरह से सूना था, जिसका फायदा उठाते हुए चोरों ने वारदात को अंजाम दिया। रात करीब 12 बजे तीन बदमाश दीवार फांदकर घर में घुसे। उन्होंने मेन गेट का ताला तोड़ा और अलमारी के बाद लॉकर से लगभग 9 लाख रुपए के सोने-चांदी के गहने उड़ा लिए। चोरी गए गहनों में सोने की चेन, मंगलसूत्र, अंगूठी, नथ, झूमर, चांदी के सिक्के और पाजेब शामिल थे। सोमवार सुबह जब राहुल घर लौटे और सीसीटीवी फुटेज चेक किए, तो चोरों की हरकतें साफ दिखाई दी। फुटेज में तीनों बदमाश स्पष्ट नजर आ रहे थे। उन्होंने तुरंत पड़ोसियों को सूचित किया और घटनास्थल पर पहुंचे वहां का नजारा देखकर वे हैरान रह गए। घर का सारा सामान बिखरा हुआ था।

चोरों ने दूसरी घटना में स्थानीय एडवोकेट दीपेंद्र कुमार भारद्वाज अभिभाषक संघ श्रीमाधोपुर के महासचिव के घर को निशाना बनाया। बदमाशों ने कमरे की अलमारी के ताले तोड़े और उसमें रखे करीब ढाई लाख रुपए नकद और एक सोने की नथ चुरा ली। उन्होंने कमरे में रखे अन्य सामान को भी अस्त-व्यस्त कर दिया। घटना के बाद वकील भारद्वाज ने बताया कि उनकी गैर मौजूदगी का फायदा उठाकर चोरों ने बड़ी ही सफाई से इस वारदात को अंजाम दिया। उन्होंने स्थानीय पुलिस को घटना की जानकारी दी। सूचना पर मौके पर पुलिस ने घटनास्थल पर सबूत इकट्ठा किए हैं। हालांकि, चोरी के मामलों में अब तक कोई ठोस सुराग हाथ नहीं लगा है।

कार्यालय नगर निगम जोधपुर उत्तर
पोलोटेक्निक कॉलेज, रेजीडेन्सी रोड, जोधपुर, phone Number : 0291 2651483 mail : nnjnorth@gmail.com

क्रमांक :- 1678 दिनांक :- 20/01/2025

Notice Inviting Open Bids

On behalf of Municipal Corporation Jodhpur North, tenders are invited in the prescribed tender form for the work mentioned below. Those interested contractors who want to participate in the tender should submit their sealed envelope copy to the Municipal Corporation Jodhpur Office at Health Branch, 4th floor on date 31/01/2025 can be sent by 03:00 PM.

Received tenders will be opened on the same day at 04:00 PM in the presence of the Bidder. Tender forms can be get on the website of Jodhpur Municipal Corporation North **www.lsg.rajasthan.gov.in/mcjn and www.sppp.rajasthan.gov.in.**

Sr.	Name of Work and Site	Estimated Cost of Work	Amount of EMD (2%)	Price of Tender Fee	Date of downloading tender form	Last Date and time for submission of tender	Last Date and time of tender opening	Contract Period
01	Conducting various awareness campaign, Encourage Behavioral changes and Foster Community-Driven Actions to Reduce Air Polution by utilize social media platforms (Facebook, Instagram, WhatsApp) and Conduct workshops targeting shopkeepers, market vendors and local business owners to educate them on adopting eco-friendly Practices for Swachh Vayu Survekshan Under The National Clean Air Programe (NCAP) for 3 Months.	7.20	14,400	1000	Dated from 20.01.2025 to Dated from 31.01.2025 till	31.01.2025 till 03:00 pm	31.01.2025 by 04:00 pm	3 Months

UBN No. : DLB2425WSOB15245

Commissioner
Municipal Corporation Jodhpur (North)

राज.संवाद/सी/24/10567

एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स ने 204 किलो गांजे से भरा हुआ ट्रक-कंटेनर पकड़ा

उडीसा से तस्करी कर हरियाणा ले जा रहा था 2.50 करोड़ रु. का गांजा

जयपुर (कासं)। एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स पुलिस मुख्यालय, झुंझुनूं जिले की चिड़ावा और सूरजगढ़ पुलिस ने 204 किलो गांजे से भरा ट्रक और कंटेनर पकड़ा है। पुलिस ने कई घंटों तक ट्रक का पीछा करने के बाद आरोपी ट्रक ड्राईवर को दबोचा। कंटेनर की बॉडी में बने गुप्त स्थान से 204 किलो से अधिक गांजा बरामद किया है। इस मामले में आरोपित ट्रक चालक सुभाष चन्द्र जाट (40) निवासी झोझू जिला चरखी दादरी (हरियाणा) को गिरफ्तार किया गया है। पुलिस की अनुसार जब्त मादक पदार्थ गांजा की कीमत करीब 2.50 करोड़ रुपए आंकी गई है।

अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स दिनेश एमएन ने बताया कि झुंझुनू जिले की चिड़ावा एजीटीएफ को सूचना मिली कि उडीसा से एक ट्रक कंटेनर में भारी मात्रा में गांजा आया है। सूचना को डवलप कर चिड़ावा और सूरजगढ़ थाना पुलिस को अवगत कराया गया।

एम.एन. ने बताया कि जहां टीम की ओर से हरियाणा नंबर के ट्रक कंटेनर की तलाश की गई। इस पर बगड की तरफ से आने की सूचना पर चिड़ावा पुलिस ने चिडावा बाईपास पर ट्रक कन्टेनर को रूकवाने की कोशिश की। लेकिन चालक चिडावा कस्बे से होता हुआ मेंन हाईवे से ट्रक को सूरजगढ की तरफ भगाने लगा। सूचना पर सूरजगढ़ पुलिस ने रघुनाथपुरा टोल बूथ पर नाकाबंदी शुरू की गई।

इसी दौरान कन्टेनर चालक के ट्रक को स्यालू की तरफ घुमा लेने की सूचना मिली। इस पर रघुनाथपुरा टोल नाका से आगे स्यालू की तरफ से आने वाले रास्तो पर नाकाबंदी शुरू की गई। इसी बीच रघुनाथपुरा से मण्डी सूरतगढ़ की तरफ वाले रास्ते पर कंटेनर आने की सूचना पर बरासिया कॉलेज के पास पावर हाउस मोड पर

एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स पुलिस मुख्यालय, झुंझुनूं जिले की चिड़ावा और सूरजगढ़ पुलिस ने 204 किलो गांजे से भरा ट्रक पकड़कर आरोपी को गिरफ्तार किया।

नाकाबंदी की गई। इस पर सूरजगढ की तरफ से कन्टेनर आता दिखाई दिया। रुकवाने पर चालक जानलेवा व खतरनाक तरीके से नाकाबंदी पर लगे जाब्ते पर ट्रक ऊपर चढाने की कोशिश कर हुए ट्रक को बुहाना रोड की और डिवाइडर पर चढाते हुए भागने लगा।

इस पर चिड़ावा-सूरजगढ़ थाना पुलिस एवं एजीटीएफ की टीम ने ट्रक का पीछा किया तो चालक सूरजगढ़ कस्बे मे कई वाहनों के टक्कर मारते हुए खतरनाक व जानलेवा तरीके से लगातार भागता रहा। पब्लिक एड्रेस सिस्टम से चालक को पुलिस ने ट्रक रोकने की कई बार हिदायत दी। लेकिन चालक लगातार भागता रहा। कन्टेनर को रूकवाने के लिए दो बार सावधानी रखते हुए बुहाना व सूरतगढ की तरफ से कोई वाहन व राहगीर आते हुए नहीं दिखाई देने पर खाली जगह होने पर जाखोद बाईपास तिराहे से पहले सर्विस पिस्टल से हवाई फायर कर भी चेतावनी दी गई।

इसके बावजूद भी भी चालक कन्टेनर को लगातार दौड़ाते हुए जाखोद रोड से कासनी की तरफ चला। सभी टीमों ने ट्रक के आगे पीछे गाड़ी लगा रोकना चाहा तो ट्रक लेकर खेत में घुस गया। ट्रक के टायर जमीन में धंसने की वजह से आरोपी भागने लगा। जिसे मौके पर ही टीम ने दबोच लिया। ट्रक कंटेनर की तलाशी ली गई तो पीछे की बॉडी में केबिन की तरफ करीब 2 फुट चौड़ा अलग से केबिन बनाया हुआ था। जो बाहर

- **आरोपी ट्रक ड्राइवर ने कई घण्टों तक पुलिस को अपने पीछे दौड़ाया, परंतु चारों ओर से घिर गया तो ट्रक को खेतों में ले गया, जहां पहिये मिट्टी में धंसने के कारण पकड़ में आ गया**

से दिखाई नहीं देता। ऊपर अलग से स्क्रू कसे हुए मिले। जिसे खोल कर देखा तो कुल 6 प्लास्टिक के कट्टे रखे हुए मिले। जिनमें कुल 40 पैकेट रखे हुए थे, इन पैकेटों में कुल 204 किलो 85 ग्राम गांजा मिला। ट्रक एवं अवैध मादक पदार्थ जब्त कर पुलिस ने आरोपी चालक सुभाष चंद्र को गिरफ्तार कर लिया।

आरोपित चालक सुभाष चन्द्र हरियाणा के चरखी दादरी में एनडीपीएस के मामले में पूर्व में गिरफ्तार हुआ था। जिसमें इसे 10 साल की कैद हुई थी। साल 2017 में बेल मिलने पर आरोपित फरार हो गया। आरोपित हरियाणा का उद्घोषित अपराधी है। जिसके ऊपर इनाम भी रखा गया है। पुलिस की टीम आरोपित से गहनता से पूछताछ कर रही है और इसके आपराधिक रिकार्ड के बारे में जानकारी ली जा रही है।

इस कार्रवाई में एजीटीएफ पुलिस मुख्यालय के हेड कांस्टेबल मोहन लाल व कमल डागर एवं एजीटीएफ झुंझुनूं एजीटीएफ के हेड कांस्टेबल शशिकांत एवं कांस्टेबल अमित की विशेष भूमिका रही। टीम में एजीटीएफ पीएचक्यू से उपनिरीक्षक सुभाष तंवर, एएसआई शंकर दयाल शर्मा, हेड कांस्टेबल अभिमन्यु, नरेंद्र, सुरेश, कांस्टेबल रतिराम व चालक सुरेश तथा झुंझुनू जिले से सीओ चिड़ावा विकास धिन्धवाल एवं एसएचओ सूरजगढ हेमराज शामिल थे।

साढ़े 3 किलो 770 ग्राम गांजे के साथ सप्लायर गिरफ्तार

आरोपी पूरणमल उर्फ पप्पू

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । जयसिंहपुरा खोर थाना पुलिस और जिला स्पेशल टीम जयपुर उत्तर (डीएसटी) ने ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ की गांजा की तस्करी करने वाले एक शातिर तस्कर को पकडा है और उसके पास से 3.770 किलोग्राम गांजा भी बरामद किया है। फिलहाल आरोपित से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (उत्तर) राशि डोगरा डूडी ने बताया कि पुलिस कमिश्नरेट की ओर से चलाए जा रहे ऑपरेशन क्लीन स्वीप के तहत जयसिंहपुरा खोर थाना पुलिस और डीएसटी उत्तर ने कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ गांजा की तस्करी करने वाले पुरणमल उर्फ पप्पू (38) निवासी बस्सी जयपुर को गिरफ्तार कर उसके पास से से 3.770 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा जब्त किया है। पुलिस आरोपित से अवैध मादक पदार्थ की खरीद-फरोख्त के बारे में पूछताछ की जा रही है।

साधना रावल ने राग पहाड़ी में गीत-गजल की प्रस्तुति दी

जयपुर (कासं)। युवा कलाकार साधना रावल ने अपनी पुरकशिश आवाज में राग पहाड़ी पर आधारित गीत और गजलों का गुलदस्ता सजाकर शास्त्रीनगर स्थित साइंस पार्क ऑडिटोरियम को महका दिया।

संगीत आश्रम संस्था की ओर से सोमवार को संजोए गए लाइट म्यूजिक कॉन्सर्ट में कलाकार साधना ने सुर,लय और ताल की उम्दा बानगी दर्शाकर कई फिल्मों के सदाबहार गीतों व मशहूर शायरों की अनरिकॉर्डेड गजलों को दिलकाश अंदाज में पेश कर इल्मदोस्त श्रोताओं को आह्लादित कर दिया।

संगीत निर्देशक वत्सल अनुपम के निर्देशन में सजे कार्यक्रम में युवा कलाकार साधना ने राग पहाड़ी में कंपोज चांद फिर निकला...और हर जुल्म तेरा याद आया...सरीखी गजल में सुरीले तरन्नुम के साथ सुरों के ठहराव व खूबसूरत लगाव से श्रोताओं को मुतास्सिर किया।

इसके बाद उन्होंने चौदहवीं का चांद हो..., सुहानी रात ढल चुकी..., रहें न रहे हम..., इशारों इशारों में दिल..., पत्ता पत्ता बूटा बूटा..., कभी-कभी मेरे दिल में..., बडे अच्छे लगते हो... और हुस्न पहाडों का...जैसे सुपरहिट गीतों की मेलॉडियश प्रस्तुति में अपनी सुर साधना का बखूबी प्रदर्शन किया। कोरस में कशिश कंवर और भूमिका राठौर ने स्वर दिए। की-बोर्ड पर हबीब खान, इलेक्ट्रॉनिक पैड पर अनुपम निर्वाण, गिटार पर वत्सल अनुपम ने प्रभावी संगत की। संचालन वीना अनुपम ने किया। अंत में संस्था सचिव अमित अनुपम ने सभी आगन्तुकों का आभार जताया।

कैफे की आड़ में चल रहे हुक्का बार में पुलिस ने मारा छापा

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । प्रताप नगर थाना पुलिस ने कैफे की आड में चल रहे हुक्का-बार में कार्रवाई करते हुए मैनेजर समेत तीन लोगों को गिरफ्तार किया है। वहीं मौके पर मिले 14 लोगों को शांतिभंग में गिरफ्तार किया गया। 9 हुक्के, 10 पाइप, 9 चिलम एवं भारी मात्रा मे हुक्का फ्लेवर जब्त किया है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पूर्व) ने बताया कि तेजस्विनी गौतम ने बताया कि प्रताप नगर थाना पुलिस ने इलाके के प्रताप नगर स्थित हल्दी घाटी मार्ग पर संचालित इन्फिनिटी कैफे एंड रूफ टॉप पर कार्रवाई की गई है जो एक कैफे की आड में चल रहा था। पुलिस को पिछले कुछ दिनों से यहां पर कैफ की आड में हुक्का पिलाने की सूचना मिल रही थी।

जिस पर पुलिस ने एक टीम का गठन किया और पुलिसकर्मी को सादा वर्दी में भेज कर इसकी तस्दीक करवाई। इसके बाद पुलिसकर्मी के इशारा मिलने पर छापा मारा गया। पुलिस ने बिना लाइसेंस के हुक्का पिला रहे कैफे मैनेजर अमन सिंह जादौन उर्फ लालू (21) निवासी सपोटरा जिला करौली, ललित कुमार लाखीवाल (22) निवासी शाहपुरा जिला जयपुर और श्रवण सिंह चौहान (25) जवाजा जिला ब्यावर को गिरफ्तार किया। इसके अलावा कार्रवाई के दौरान हुक्का पीते मिले चौदह लोगों को शांतिभंग में गिरफ्तार किया गया। साथ ही नौ हुक्के, दस पाइप, नौ चिलम एवं भारी मात्रा मे हुक्का फ्लेवर जब्त किया है।

अजमेर हाइवे पर पलटा एल.पी.जी. गैस का टैंकर

जयपुर । दूदू थाना इलाके में सोमवार अल सुबह तेज रफ्तार एलपीजी गैस टैंकर अनियंत्रित होकर पलट गया। जिसके बाद अजमेर हाईवे पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया। तभी टैंकर चालक ने दूर जाकर आवाज लगाई की इसमें गैस नहीं है। तब जाकर लोगों ने राहत की सास ली। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने क्रेन की सहायता से टैंकर को सीधा करवा रोड के साईड में खडा किया और यातायात सुचारु करवाया।

पुलिस के बताए अनुसार अजमेर हाईवे पर दूदू के समीप सावरदा इलाके में सोमवार अल सुबह तेज रफ्तार एलपीजी गैस टैंकर अनियंत्रित होकर पलट गया। टैंकर चालक महमूद ने कूद कर अपनी जान बचाई। टैंकर चालक का आरोप है कि ट्रेलर चालक ने टैंकर की गलत साइड से ओवरटेक किया। जिसके चलते एलपीजी टैंकर पलट गया। बताया जा रहा है कि वो बद्दी हिमाचल से कागला गुजरात जा रहा था। तभी एक ट्रेलर चालक ने गलत दिशा से ओवरटेक किया और उसकी साइड

- **हिमाचल प्रदेश से गुजरात जा रहा था टैंकर, अन्य गाड़ी वाले ने गलत तरीके से किया था ओवरटेक**
- **गनीमत रही कि टैंकर में गैस नहीं थी, अन्यथा बड़ा हादसा हो सकता था**

दबा दी। उसने टैंकर को नियंत्रण करने का प्रयास किया तो गाड़ी की पिन टूट गई और टैंकर पलट गया। इसी दौरान हाईवे पर अफरा-तफरी मच गई। लेकिन महमूद ने भागते हुए ग्रामीणों को आवाज लगाकर बताया कि इसमें गैस नहीं है। तब जाकर ग्रामीणों ने राहत की सास ली। पुलिस ने पीड़ित ट्रेलर चालक के खिलाफ लापरवाही से वाहन चलाने का मामला दर्ज कर उसकी तलाश शुरु कर दी है।

चार नकबजन गिरफ्तार

जयपुर । जवाहर सर्किल थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए नकबजनी की वारदात करने वाले दो नकबजनों सहित चार आरोपियों को धर-दबोचा है। उन्होंने पूछताछ में विभिन्न थाना इलाके में नकबजनी की वारदातों को अंजाम देना कबूला है। आरोपित नशे के लिए नकबजनी की वारदात करते है। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्वनी गौतम ने बताया कि जवाहर सर्किल थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए नकबजनी की वारदात करने वाले आरिफ खान निवासी जवाहर सर्किल जयपुर,अयूब खान निवासी जवाहर सर्किल जयपुर,सोहेल खान निवासी जयपुर और अभिषेक महावर निवासी सवाई माधोपुर को गिरफ्तार किया है। पुलिस पूछताछ में आरोपियों ने रामनगरिया और एयरपोर्ट थाना इलाके में दो-दो नकबजनी की वारदात करना कबूला है। पुलिस आरोपियों से पूछताछ कर चुराए गए माल की बरामदगी के प्रयास में लगी है।

मोटर वाहन निरीक्षक दिनेश सिंह ने बच्चों को यातायात नियमों की जानकारी दी

जयपुर (कासं)। जयपुर के आरटीओ द्वितीय में कार्यरत मोटर वाहन निरीक्षक दिनेश सिंह ने धारव हाई स्कूल विद्याधर नगर में विद्यार्थियों को सड़क सुरक्षा और यातायात के नियमों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि किस प्रकार युवा सड़क पर अनुशासन के साथ वाहन चलाकर दुर्घटनाओं को रोकने में मदद कर सकते हैं। उन्होंने बाल वाहिनी सुरक्षा मानकों के बारे में भी बताया और बताया कि बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए किस तरह से सड़क सुरक्षा नियमों का पालन किया जाना चाहिए।

दरअसल मुस्कान फाऊंडेशन फॉर रोड सेफ्टी ने परिवहन विभाग के सहयोग से धारव हाई स्कूल, विद्याधर नगर में कक्षा 9वीं और उससे ऊपर के वरिष्ठ छात्रों के लिए सड़क सुरक्षा ओरिएंटेशन वर्कशॉप का आयोजन किया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को सड़क सुरक्षा के महत्व से अवगत कराना और उन्हें सुरक्षित ड्राइविंग एवं पैदल चलते समय बरती जाने वाली सावधानियों के बारे में जागरूक करना था। कार्यक्रम के दौरान समीर नैनावत, प्रशिक्षक मुस्कान फाऊंडेशन ने सडक दुर्घटनाओं के प्रमुख कारणों पर विस्तार से बात की।

हैरिटेज निगम आयुक्त से मिले पार्किंग ठेकेदार

'कमिश्नर ने ई-नीलामी से पूर्व प्री-बिड मीटिंग करवाने का आश्वासन दिया'

जयपुर पार्किंग एसोसिएशन के संरक्षक मोहम्मद शफी कुरैशी, अध्यक्ष मनोज सिंह गोतोड, उपाध्यक्ष डॉ. गणेश शर्मा, महामंत्री अजय सिंह चौहान ने हैरिटेज निगम आयुक्त अरुण कुमार हसीजा को ज्ञापन सौंपा।

जयपुर । हैरिटेज नगर निगम जयपुर में जयपुर पार्किंग एसोसिएशन के संरक्षक मोहम्मद शफी कुरैशी, अध्यक्ष मनोज सिंह गोतोड, उपाध्यक्ष डॉ. गणेश शर्मा, महामंत्री अजय सिंह चौहान और एसोसिएशन के सभी ठेकेदारों ने आयुक्त अरुण कुमार हसीजा से मुलाकात कर ई-ऑक्शन की शर्तों में परिवर्तन के लिए ज्ञापन सौंपा।

अध्यक्ष मनोज सिंह गोतोड़ और उपाध्यक्ष डॉ. गणेश शर्मा ने बताया कि ज्ञापन में कुल 15 शर्तों पर चर्चा हुई। आयुक्त अरूण कुमार हसीजा ने आश्वासन दिया कि ई ऑक्शन से पहले प्री-बीड मीटिंग करवाई जाएगी और सभी बाजारों में पार्किंग वसूली की दरें समान की जाएगी और ठेकेदारों की शर्तों पर विचार किया जाएगा। पार्किंग एसोसिएशन के अध्यक्ष व उपाध्यक्ष ने बताया कि आगे की रणनीति प्री-बीड मीटिंग के बाद तय की जाएगी और आवश्यकता हुई तो ई- ऑक्शन का बहिष्कार करने के साथ-साथ पार्किंग ठेकेदार अनशन पर भी बैठेंगे। वहीं दूसरी ओर पार्किंग ठेकेदारों की आयुक्त अरूण कुमार हसीजा से मुलाकात के बाद राजस्व उपायुक्त प्रथम निधि सिंह ने एक संशोधित विज्ञप्ति जारी की। जिसमें कहा गया है कि जयपुर परकोटे में स्थित जौहरी बाजार पार्किंग स्थल की अमानता राशि जमा करवाने की अंतिम तिथि को 22 जनवरी के स्थान पर 28 जनवरी 2025 तथा ई-ऑक्शन दिनांक 23 जनवरी के स्थान पर 29 जनवरी पढ़ा जाए।

46 बीघा भूमि पर बसाई जा रही पांच अवैध कॉलोनियां ध्वस्त

जयपुर (कासं)। जयपुर विकास प्राधिकरण के प्रवर्तन दस्ते ने सोमवार को 46 बीघा कृषि भूमि पर बसाई जा रही पांच अवैध कॉलोनियों को पूर्णत: ध्वस्त किया। इसके अलावा इकोलॉजिकल जोन में निर्माणाधीन 6 अवैध दुकानें और टीनशेडनुमा निर्माण भी ध्वस्त किए।

महानिरीक्षक पुलिस कैलाश चन्द्र विश्नोई ने बताया

- **द्वारका सिटी और गिर्राज विहार के नाम से बसाइ गई थी कॉलोनी**
- **काश्तकारों ने ना तो जे.डी.ए. से कोई स्वीकृति ली और ना ही भू-रूपांतरण कराया था**

सांगानेर के ग्राम ग्राम अजयराजपुरा में करीब 20 बीघा निजी खातेदारी की कृषि भूमि पर "द्वारका सिटी" के नाम से कॉलोनी बसाई गई थी। काश्तकारों ने इसके लिए ना तो जेडीए से कोई स्वीकृति ली और ना ही भू-रूपांतरण कराया। इस कृषि भूमि पर रातोंरात मिट्टी-ग्रेवल सडकें, डिमार्केशन, बाउण्ड्रीवाल, बिजली के पोल समेत कई अवैध निर्माण कर लिए गए थे, जिन्हें सोमवार को

जे.सी.बी. मशीन की मदद से ध्वस्त किया गया। अजयराजपुरा में ही 2 बीघा अन्य कृषि भूमि पर पर भी बसाई जा रही अवैध कॉलोनी में भी ध्वस्तीकरण की कार्रवाई की गई। अजयराजपुरा ग्राम में ही 12 बीघा कृषि भूमि पर "गिर्राज विहार" के नाम से भी अवैध कॉलोनी काटकर उसमें भी मिट्टी-ग्रेवल और सीमेन्ट के ब्लॉक की सड़क, बाउण्ड्रीवाल बनाए गए थे, जिन्हें जेसीबी और मजदूरों की मदद से ध्वस्त किया। कैलाश विश्नोई ने बताया कि जोन-10 के इकोलोजिकल जोन में नाई की थड़ी इलाके में 10 बीघा कृषि भूमि पर "वेलकम सिटी" के नाम से कॉलोनी काटी गई थी।

रेलवे कार्यालय में कर्मचारी ने फंदा लगाकर जान दी

जयपुर । जवाहर सर्किल थाना इलाके में स्थित उत्तर पश्चिम रेलवे के प्रधान कार्यालय में बेसमेंट में बने स्टोर रुम में एक रेलवे कर्मचारी ने फंदा लगाकर आत्महत्या कर दी। कार्यालय परिसर में कर्मचारी के आत्महत्या करने की खबर से हडकंप मच गया। सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को नीचे उतार अपने कब्जे में लिया और पोस्टमार्टम के लिए एसएमएस अस्पताल के मुर्दाघर में भिजवाया। मिली जानकारी के अनुसार रेलवे कर्मचारी नरसी मीणा ने अज्ञात कारणों के चलते जवाहर सर्किल इलाके में स्थित उत्तर पश्चिम रेलवे के प्रधान कार्यालय के बेसमेंट में बने स्टोर रुम में चुन्नी के फंदे से लटककर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर एफएसएल टीम को मौके पर बुलाया और शव को पोस्टमार्टम के लिए सवाई मानसिंह अस्पताल के मुर्दाघर में भिजवाया। पुलिस मृतक के मोबाइल की कॉल डिटेज के आधार पर जांच करने में जुटी है।

सवाई मानसिंह अस्पताल का होगा कायाकल्प

जयपुर (कासं)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की प्रदेश में चिकित्सा सुविधाओं को और सुदृढ़ करने की पहल के तहत अब सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज एवं इससे सम्बद्ध अस्पतालों को मॉडल हॉस्पिटल के रूप में विकसित किया जाएगा। इसके लिए न केवल प्रशासनिक बल्कि अस्पताल के भवन सहित अन्य आधारभूत व्यवस्थाओं में आमूलचूल सुधार करते हुए स्वास्थ्य सुविधाओं को पेशेंट सेंट्रिक बनाया जाएगा।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर के निर्देश में इस पहल को मूर्त रूप देने के लिए सोमवार को सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज में सम्बद्ध अस्पतालों के प्रशासनिक अधिकारियों के साथ एक विशेष संवाद आयोजित किया गया। संवाद में चिकित्सा शिक्षा विभाग के सचिव अम्बरीष कुमार, आयुक्त इकबाल खान, संयुक्त सचिव गौरव बजाड, वास्तुविज्ञ अनूप भरतरिया सहित एसएमएस मेडिकल कॉलेज एवं सम्बद्ध अस्पतालों के प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे। संवाद में बताया गया कि एसएमएस अस्पताल को चरणबद्ध रूप से कार्य करते हुए एनएबीएच एवं जेसीआई स्टैंडर्ड के अनुसार विकसित किया जाएगा, ताकि आमजन को गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा सुविधाएं सुगमता के साथ मिलें।

चिकित्सा शिक्षा सचिव ने कहा कि एस एम एस हॉस्पिटल भारत के सबसे बड़े एवं ख्याति प्राप्त अस्पतालों में शामिल है। यहां सबसे अधिक आईपीडी एवं ओपीडी है। दुनिया के नामी डॉक्टर्स यहां सेवाएं दे रहे हैं, लेकिन अब हमारा प्रयास इस दिशा में है कि यहां का आधारभूत ढांचा एवं प्रबंधकीय व्यवस्थाएं भी विश्वस्तरीय हों। इसके लिए पूरी प्लानिंग के साथ विकास कार्य किए जाएंगे। वास्तुविद अनूप भरतरिया ने एसएमएस अस्पताल में सुगम आवागमन के लिए रिंग रोड, स्काई वॉक एवं गार्डन प्लाजा के निर्माण, करीब 2500 वाहन के लिए पार्किंग, सेंट्रल ऑक्सीजन प्लांट, डिजिटल रजिस्ट्रेशन, मोर्चरी, फूड कोर्ट आदि विकसित किए जाने की योजना का प्रेजेंटेशन दिया।

सार-समाचार

डॉक्टर्स बैडमिंटन लीग की अवार्ड सेरेमनी

जयपुर । पिंक स्टारडॉक्टर्स बैडमिंटन लीग सीज़न 6 की अवार्ड सेरेमनी आर.ए.एस क्लब जयपुर में संपन्न हुई। आयोजन सचिव डॉ. अनिल यादव ने बताया कि मुख्य अतिथि डीग-कुम्हेर विधायक डॉ. शैलेश सिंह , पूर्व सांसद डॉ. करण सिंह यादव, पिंकस्टार हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. राजवेंद्र चौधरी, प्रियंका हॉस्पिटल के डायरेक्टर डॉ. जी.एल.शर्मा, वरिष्ठ अस्थिरोग विशेषज्ञ डॉ. धीरज दुबे व महात्मा गांधी मेडिकल कॉलेज के डॉ. मनु सोनी ने विजेताओं को ट्रॉफी प्रदान कर पुरुस्कृत किया। लीग संयोजक डॉ. हरीश भारद्वाज ने बताया कि बॉयज वर्ग में केडिया होटशॉट्स को,महिला वर्ग में सम्भव डायग्नोस्टिक को, वरिष्ठ वर्ग में निम्स हार्ट एंड ब्रेन हॉस्पिटल को व किड्स वर्ग में टीम कांकरिया को विजेता ट्रॉफी प्रदान की गई। लीग कॉर्डिनेटर डॉ. सुधांशु शर्मा ने बताया कि ओवर 30 आयु वर्ग में पुरूष एकल में डॉ आदित्य सैनी को व अंडर 30 आयु वर्ग में अंशिका कुमावत को विजेता की ट्रॉफी प्रदान की गई। दबंग जोड़ी मुकाबले में डॉ. अभिषेक गोयल व डॉ. जितेंद्र को, मलंग जोड़ी मुकाबले में डॉ. अशोक गुप्ता-डॉ.पवन मीणा को विजेता की ट्रॉफी प्रदान की गई । लीग कॉर्डिनेटर डॉ. दिलीप गुप्ता ने बताया कि लेजेंड्स वर्ग में डॉ. मणिकान्त व डॉ. संजीव गुप्ता को विजेता की ट्रॉफी प्रदान की गई। दबंग जोड़ी ऑफ द ईयर वर्ग में डॉ. विदिशा प्रधान व डॉ. उत्कर्ष प्रधान को विजेता की ट्रॉफी प्रदान की गई। मलंग जोड़ी ऑफ द ईयर वर्ग में डॉ. संगीता व डॉ. ओमप्रकाश को विजेता की ट्रॉफी प्रदान की गई । लीग कॉर्डिनेटर प्रेम चौधरी ने बताया कि दबंग ट्रायो में डॉ. केतन, डॉ.श्रवण व डॉ. तुषार को विजेता की ट्रॉफी प्रदान की गई। मलंग ट्रायो मुकाबले में डॉ. लविश गुप्ता, डॉ. जितेन्द्र जिंदल व डॉ. विशाल गुप्ता को विजेता की ट्रॉफी प्रदान की गई। इस अवसर पर शहर के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. मनीष अग्रवाल, डॉ. गिरधर गोयल, डॉ. जयंत सेन, डॉ.हनुमान खोजा, डॉ. सत्यपाल यादव, डॉ . निधि पूनिया, डॉ. नरेश सोमानी, डॉ. संजीव गुप्ता, डॉ. दीपक सैनी सहित जयपुर के व राजस्थान के अन्य शहर से आये 300 चिकित्सक उपस्थिति रहे। कार्यक्रम में मंच संचालन सवाई मानसिंह विद्यालय की आराध्या चौधरी ने किया ।

आदिवासी युवा आदान-प्रदान 26 से

जयपुर । युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार के नेहरू युवा केंद्र संगठन, जयपुर की ओर से केंद्रीय गृह मंत्रालय के सौजन्य से 16 वां आदिवासी युवा आदान-प्रदान कार्यक्रम 26 से 31 जनवरी तक जगतपुरा स्थित विवेकानंद ग्लोबल यूनीवर्सिटी में आयोजित किया जायेगा। यह जानकारी देते हुए जिला युवा अधिकारी कुमार मधुकर ने बताया की कार्यक्रम में छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं उडीसा राज्यों के नक्सल प्रभावित 6 जिलों के 200 युवा भाग लेंगे। मधुकर ने बताया कि छह दिवसीय आदिवासी युवा आदान प्रदान कार्यक्रम शिविर में आदिवासी युवाओं में राष्ट्रीय एकता, सांप्रदायिक सद्भाव, समाज सेवा की भावना विकसित करने और राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल करने के उद्देश्य से व्याख्यान, सांस्कृतिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय विषयों पर आधारित सेमीनार, प्रश्नोत्तरी, भाषण प्रतियोगिता, श्रमदान, खेलकूद, कैम्पस विजिट आदि कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे।

संघमित्रा को पी.एच.डी. की उपाधि

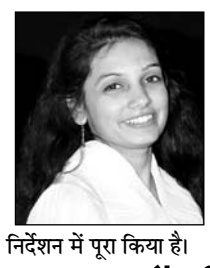

जयपुर (कासं)। संघमित्रा खण्डेलवाल को आई.आई.एस. यूनिवर्सिटी की ओर से पीएचडी की उपाधि दी गई। उन्हें यह उपाधि "डायनामिक्स ऑफ बाइंग बिहेवियर-एस्टडी ऑफ ऑनलाईन एंड ऑफलाईन लग्जरी अपैरल्स ऑफ विमेन (विद स्पेशल रेफरेंस टू जयपुर सिटी)" विषय पर शोध के लिए दी गई है। उन्होंने शोध कार्य डॉ. दीपिका सिंह के निर्देशन में पूरा किया है।

'पशुपालकों की उन्नति का कार्य करें'

जयपुर । राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने सोमवार को महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले स्थित कोपरगांव तालुका में गोदावरी खोरे सहकारी दुग्ध संघ में गोदावरी दुग्ध इकाई, दुग्ध शुद्धिकरण मशीन, कर्मचारी निवास हेतु भवन का शिलान्यास करते हुए वहां पर 1.5 मेगावाट क्षमता के सोलर पावर प्लांट से विद्युतीकरण का लोकार्पण किया। इस दौरान उन्होंने वहां पर कर्मचारियों के लिए एटीएम मशीन के अंतर्गत बीमा पत्रों का भी वितरण किया। राज्यपाल बागडे ने कहा कि पशुपालकों की आर्थिक उन्नित के लिए सबको मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने दुग्ध संघों द्वारा दुग्ध उत्पादन के साथ उसका प्रभावी वितरण और उससे पशुपालकों को कैसे अधिकाधिक लाभ मिले, इसके लिए निरंतर प्रयास किए जाने का आव्हान किया। राज्यपाल ने गोदावरी खोरे सहकारी दुग्ध संघ को स्थानीय दुग्ध उत्पादकों के लिए महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि सहकारी आंदोलन के तहत स्थानीय पशुपालकों के लिए यह उपक्रम निरंतर लाभकारक रहा है। उन्होंने दुग्ध उत्पादक किसानों के आर्थिक उत्थान के लिए गोदावरी खोरे सहकारी दुग्ध संघ द्वारा पशु रोग निदान और पशु संचार जैसी गतिविधियों को भी महत्वपूर्ण बताया।

ARBiT
it happens here...

Energy Saving Week (Mon, Jan 20th, 2025 - Sun, Jan 26th, 2025)

Energy Saving Week arrives annually, dedicating a few days to increase awareness of energy use. It also challenges everyone to take small actions to improve personal energy efficiency, thus playing a crucial role in making a healthier planet. As the world wrestles with the challenges resulting from climate change and rising energy costs, the significance of energy conservation is more important than ever. Adopting eco-friendly habits illuminates a path to sustainability, reducing environmental impact for future generations.

राष्ट्रदूत
TUESDAY
21 January 2025
A-B

#PSYCHOLOGY

Home Strife as 'Mood Repair'

Our experiences in our home lives are deeply connected to how we think, feel, and behave at work.

While it's not ideal, experiencing some unpleasantness with your partner in the morning can lead to some productive coping mechanisms during the workday, research indicates.

Having a rude encounter with your spouse or partner at home may seem like the first ingredient in the recipe for a bad day at work. But according to researchers at the University of Arizona Eller College of Management, employees may be more likely to connect with their colleagues and be more helpful at work after experiencing minor incivility at home.

It's a practice that researchers call 'mood repair.' Essentially, when someone's day gets off to a bad start at home, they might try to make themselves feel better by being of service to their coworkers later in the day. A study in the *Journal of Applied Psychology* examines the phenomenon.

"Our experiences in our home lives are deeply connected to how we think, feel, and behave at work," says lead study author Mahira Ganster, a doctoral degree candidate in Management and Organizations. "Anything, from making a rude comment while brewing coffee to ignoring one's spouse while getting ready for the day, leads employees to have to process and cope with those experiences while at work."

Ganster, along with professor of Management and Organizations, Allison Gabriel, and collaborators, tracked 92 couples for 10 working days. One member of each couple was designated as 'employee' and the other as 'partner,' such as a spouse, fiancé, or long-term romantic partner. The partner documented each morning how they treated the employee before work. Later, in the workday, the employees rated areas including how fatigued they felt, the degree to which they were in a negative mood, and how much they helped other people at work.

"What we saw was that employees engaged in 'mood repair,' that negative mood made individuals more likely to help co-workers with personal problems or their work," Gabriel says. "They were trying to repair the bad mood that they were experiencing, by trying to connect and interact in the workplace."

Ganster says that the positive effects of helping others depended on the type of help the employees provided. Those who helped their co-workers with personal problems felt better in the evening, when they came home from work, but those who helped with work-related problems felt worse. The team theorizes that personal help allows employees to rebuild personal relationships without adding to their workload.

"So, employees, looking to cope through helping, should look for opportunities to help that foster greater social connections, rather than take on additional work tasks," Ganster says.

Ganster and Gabriel are quick to point out that even though incivility in the morning can lead to some positive effects during the workday, that doesn't mean it is an ideal situation.

"We are certainly not saying that it's a good thing to be treated uncivilly by your partner because you're going to go to work and be a good citizen," Gabriel says. "But it does illustrate a possible adaptive coping mechanism that people can use, when they start their workday on the wrong foot." The team says that there are lessons to be learned from the research, for both employees and managers.

The researchers suggest that workers can reduce the effects of an unpleasant morning by engaging in perspective-taking, or trying to see things from others' point of view. Ganster says that employees, who reported higher levels of perspective-taking, tended to experience less of a negative impact at work.

For employers, empathy is key.

What if Germany had won the Second World War?

What if Germany had won the Second World War? What would the world have been like? Thank heavens that it never happened, but for an instance, let us explore a haunting alternate history where Nazi Germany's victory reshaped the world, freedom lost, cultures erased, and resistance carried in whispers across generations.

Shailaza Singh
Published Author, Poet and a YouTuber

The sunlight streams through the crack in the curtains, casting a pale, reluctant glow on the faded photograph in my hand. It's an image of my grandmother, standing resolutely at the edge of what used to be her village square. She was young then, no older than twenty, but her face bore the strain of a lifetime. Behind her, the shadow of a German flag fluttered in the wind, its iron insignia, a chilling reminder of the world that might have been.

In this alternate past, where Nazi Germany triumphed, everything feels cloaked in a muted gray. Freedom, of thought, of movement, of expression, is a distant memory, locked away in the hearts of those who lived in a different time. This is the world I grew up in, one where the weight of history and the burden of silence press heavily on every moment.

The Forgotten Resistance

My grandmother often spoke of her rebellious spirit, even in the suffocating embrace of the Reich. She once shared a story that has lingered with me, seared into my heart like a scar.

"It was 1947," she began, her voice trembling but her gaze defiant. "We'd heard whispers that the Germans had officially annexed the entirety of Europe. Your great-grandfather refused to bow to them. He hid books, banned books, in a hollow behind the fireplace, volumes by forbidden authors, poetry that spoke of freedom. We called it 'the library of whispers.'"

But whispers, as she explained, could still echo. A neighbour betrayed them. One frosty morning, the Gestapo came. They tore apart the house, found the books, and took him away. "I never saw him again," she whispered, her eyes wet with unshed tears. "But I still hear his voice. Every time I open a book, I hear him reminding me to never stop reading."

> Books became relics of defiance in our family, treasured artifacts that symbolized hope. I remember running my fingers along the spines of those hidden tomes as a child, even though I couldn't understand the words then. It wasn't just about literature, it was about preserving pieces of a world that had been taken from us.

Books became relics of defiance in our family, treasured artifacts that symbolized hope. I remember running my fingers along the spines of those hidden tomes as a child, even though I couldn't understand the words then. It wasn't just about literature, it was about preserving pieces of a world that had been taken from us.

The Vanishing of Cultures

The world I grew up in, the world shaped by the victory of Germany, feels devoid of its soul. Languages have been lost, forbidden in favour of German. My grandmother taught me snippets of French in secret, just as her mother had taught her. When I asked why we couldn't speak it openly, her face turned to stone.

"They took more than land," she told me. "They took our words, our songs, our dances. But we carry them here." She placed her hand on her heart and then on mine. "And no one can take that."

In our household, the kitchen was where culture clung to life. My grandmother would hum old French lullabies while kneading dough, her voice soft but filled with longing. Every recipe, every spice, every dish was a quiet act of rebellion. I learned to bake bread the way she did, folding love and resistance into every loaf.

Yet, the outside world was relentless. Streets and cities had been renamed. My hometown, once called Lille, is now 'Adlerstadt,' the City of Eagles. The names of poets, artists, and revolutionaries were erased from memory, replaced by those who had marched under the swastika. Despite this, my grandmother never referred to it by its new name. She would take me to a little clearing in the forest, where wildflowers grew in defiance of the concrete jungles. "This," she said, "is the real Lille. The one they couldn't destroy. Do you see how the flowers grow? They are free."

A World Without Names

The Berlin Wall never fell in this world because it was never built. There was no Cold War, no Iron Curtain, only an endless expanse of authoritarian control stretching across continents. Nazi Germany's domination created a single, suffocating entity, where borders existed only to delineate administrative zones.

In school, we were taught history rewritten. We memorized the names of battles won by the Axis, celebrated the so-called 'unification' of Europe under German rule, and sang anthems that glorified the Reich. Questions were forbidden, curiosity discouraged. Yet, even as a child, I felt the undercurrent of dissent in the hushed tones of adults. They carried stories of a different world, a better world, one where hope still flickered. I remember a teacher who dared to deviate from the curriculum. She read us poetry, not the sanctioned verses of German triumph, but soft, mournful stanzas about the fragility of human connection. It was dangerous, what she did. She knew the risks, and one day, she didn't come back. Her classroom was emptied of books, her name erased from the school records. But I remember her words, whispered to me, before she left, "They can't erase what lives in your heart. Keep it there, safe."

The Silent Losses

There were no grand wars after Germany's victory, only silent suffering. The stories of those who resisted, the love of those who fought for a better tomorrow, are whispered in secret like the books my great-grandfather hid. The air feels heavy with what has been lost. How many inventions, ideas, and dreams have been crushed under the weight of a world where *freedom is a crime*?

Grandmother once told me of a Jewish family that lived next door before the war. She spoke of the laughter that used to fill their home, the smell of challah bread, baking on Friday evenings. "They were kind," she said, "so kind. And then one day, they were gone. Just like that." In this world, there are no memorials for the Holocaust. It is a chapter erased from history, a wound unacknowledged. But my grandmother's voice was a monument in itself. Every story she shared, every name she remembered, became a part of my own memory, a defiant act against forgetting.

The Small Acts of Defiance

Grandmother passed away years ago, but her defiance lives on. I keep her stories alive, retelling them to my children in hushed tones, just as she did with me. We don't have monuments or history books to remind us of the world that could have been. Instead, we have memories, fading, fragile, but fiercely preserved.

I've taken to visiting the clearing in the forest every year, the place where the wildflowers still grow. I sit on the mossy ground and let the wind carry her words to me. "The flowers are free," I tell myself. "And so are we, in the ways that matter most."

There are other acts of defiance too, small but significant. A shared glance between strangers, a piece of forbidden music played softly in the safety of one's home, a story whispered to a child at bedtime. These moments, though fleeting, remind us of what we are fighting to preserve.

A Glimpse of What Might Have Been

Sometimes, in the quiet of the night, I imagine what life might have been if the Allies had won, if hope had prevailed, instead of fear. Would my grandmother have seen her husband again? Would I have grown up speaking my mother tongue without fear? Would there be laughter in the streets and music in the squares, instead of the eerie silence that now fills them?

I dream of a world where my children can walk freely, unafraid to speak their minds or question authority. A world where diversity is celebrated, not crushed. But dreams are dangerous in a world like this. They are seeds of rebellion, and rebellions, however small, are never forgotten by those in power.

The Weight of Memory

History, they say, is written by the victors. But memory, memory belongs to the people. It is in the songs we hum, the stories we tell, the love we carry. It is in the wildflowers that grow in defiance of a conquered world.

If Germany had won the Second World War, the world would have been a darker place. But even in the darkest of times, there is light. There is resistance. There is hope. And as long as we remember, as long as we carry the voices of those who came before us, that hope will never die.

rajeshsharma1049@gmail.com

#NO REGRETS

#COMMITMENT

Why do we fail at keeping our New Year's resolutions?

Many of us set New Year's resolutions as January 1 approached. However, over 90 per cent of people fail at the goals they made at the beginning of the year. Here's why!

As we entered New Year, once again, we vowed to follow the resolutions we made for 2025. Whether it is getting healthy, saving money, travelling more or changing your job, making New Year's resolutions is a part of the celebrations for many.

While the start is full of energy and enthusiasm, most of us give up on those resolutions as the year progresses. Over 90 per cent of people abandon their New Year's goals, with 23 per cent failing in the first week of January itself.

But why does this happen? We will explain.

Why we make New Year's resolutions?

The New Year gives us an opportunity to turn a new leaf and start afresh. Many of us reflect on the year that passed and the New Year, offering us a chance to improve our lives. Jennifer Kowalski, a licensed professional Counsellor, told *Verywell Mind*, "A new year represents a fresh start, and people need something to signal a moment to refresh." She added, "When something comes to an end, it's an opening to a new beginning."

"The New Year serves as a cyclical marker of time during which we re-evaluate and take inventory of our lives," says Clinical Psychologist Sabrina Romanoff. "The drive for making resolutions is motivated by this punctuation in time, activates hope and expectations for what we hope to achieve, going forward."

Why we fail to stick to New Year's resolutions?

The desire to change is strong at the beginning of the New Year, but if we have set mighty goals, this want is likely to fizzle out as time passes.

Several factors, including distractions, prevent us from achieving our New Year's promises.

Scientists from the University of Michigan blame people's inability to distinguish between willpower and self-control for failure to keep up with their New Year's goals.

Self-control is about making changes to your behaviour to fulfil your ambition, while willpower is described as resisting 'short-term temptations in order to meet long-term goals.' "If a social scientist told his patients to exercise self-control to avoid sweets, they would think he meant resisting the immediate craving to eat a freshly baked cookie. They would not think that he meant taking the long route home to avoid driving past the bakery," Chandra Sripada, a Psychiatric Neuroscientist and Philosopher at the University of Michigan told *Indy100*. "You have to communicate with people using a familiar vocabulary." Setting too lofty goals is also a recipe for failure. Imagine that you do not exercise at all and suddenly you decide to go to the gym every day, there is a high chance that you will give up in a few weeks, if not days.

"Where we go wrong with New Year's resolutions is there's this idea that it's supposed to be some big, sweeping change because that sounds kind of sexy," Terri Bly of Ellie Mental Health in Minnesota's Mendota Heights told Verywell Mind. "But as humans, we're not wired to make big, sweeping changes." Change is hard and we are designed to resist it. Breaking old patterns and habits is hard. When we make resolutions, we are not focusing on why we are setting that goal. If we figure that out, it might be easier to achieve it. "Usually, New Year's resolutions are optional things, and so, if we hate doing it, any goal we set is just pain, and if we're not really sure what the reward is going to be, we're not going to do it," Bly said to Verywell Mind.

What can be done?

Changes can feel less daunting if we stick to them. Going to the gym is an overwhelming change but if you are prepared for it, by making incremental shifts, you will be able to take action. It is better not to have too much on your plate. You should aim for a goal that you 90 per cent believe you can achieve. It is better than picking a number of resolutions that you will end up ditching. Pick up behavioural goals that you can control, such as instead of committing to 'stop feeling stressed,' you decide to meditate daily for a few minutes. Numbers can also help us in following our pledges. Instead of resolving to exercise every day, we can set goals of 'walk 10,000 steps a day' and so on. Choose a personal trainer who will charge a cancellation fee, if you don't show up. You don't have to necessarily give up on your New Year's resolutions. Just set attainable, small goals, and you are good to go.

THE WALL

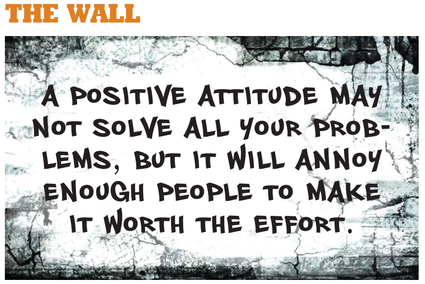

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

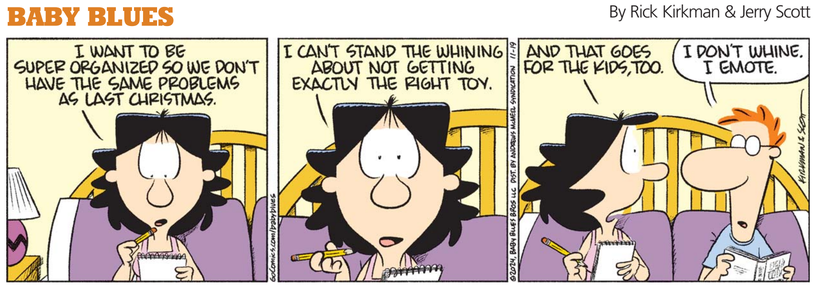

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

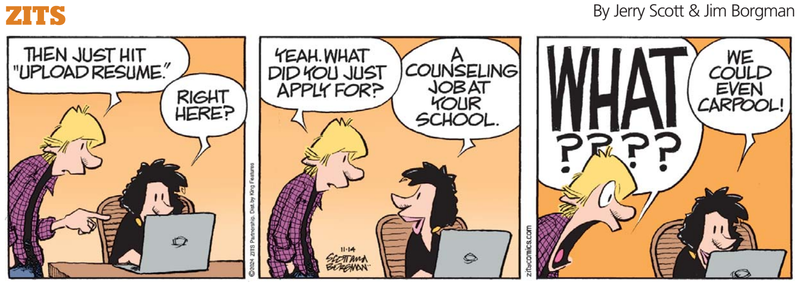

लोन खाते को हैक कर 38.80 लाख की साइबर ठगी, तीन जने गिरफ्तार

आरोपियों द्वारा खाते खुलवाकर कमीशन बेस पर ठगी के रुपये प्राप्त किये जाते थे

दौसा, (निसं)। साइबर क्राइम थाना पुलिस ने साइबर शील्ड अभियान के तहत बड़ी कार्रवाई की है। परिवादी के ओ. डी. लोन खाते को हैक कर उसमें से 38 लाख 80 हजार रुपये की साइबर ठगी के मामले में तीन आरोपी गिरफ्तार किए हैं। आरोपियों द्वारा स्वयं के बैंक खाते खुलवाकर कमीशन बेस पर साइबर ठगी के रुपये प्राप्त किये जाते हैं।

जानकारी के अनुसार परिवादी हंसराज गुर्जर पुत्र रामकिशन गुर्जर निवासी खुरी ने 12 दिसंबर को पुलिस थाना साइबर क्राइम में इस आशय की रिपोर्ट पेश की कि मेरे पास एक्सिस बैंक के नाम से बैंक का डाटा अपडेट करने के लिये फोन आया। उसे एक पीडीएफ फाइल भेजी और कहा कि आपका डाटा चैक कर लीजिये। वह बिहारी टाइप की भाषा बोल रहा था। एक दो बार पीडीएफ खोल कर देखी तो यह फाइल नहीं खुली। तब बैंक खाते का बैलेंस चैक किया तो बैलेंस सेम था, लेकिन कुछ दिन बाद पत्नी बादाम देवी के ओडी (लोन) खाता के बैलेंस को चैक किया तो उसमे से 22 से 27 नवंबर के मध्य 38 लाख 80 हजार 112 रुपये ऑनलाइन बैंकिंग के माध्यम से विड्रोल मिला, जबकि हमने किसी प्रकार का ऑनलाइन बैंकिंग, यूपीआई व नेट बैंकिंग का उपयोग नहीं किया गया है।

साइबर ठगी के मामले में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया।

- राशि को कमीशन बेस पर स्वयं के बैंक खातों में प्राप्त कर रुपयों को एटीएम के माध्यम से कैश कर लिया जाता था

एसपी रंजीता शर्मा ने साइबर क्राइम पुलिस के डीएसपी बृजेश कुमार मीना नेतृत्व में साइबर क्राइम पुलिस, थाना कोतवाली व साइबर सैल से एक विशेष टीम का गठन कर तकनीकी आधार पर आरोपी की तलाश कराई। इस पर 17 जनवरी को आसनसोल, निमटपुर जिला वर्धमान (पश्चिम बंगाल) से तीन आरोपियों ईशान ठाकुर पुत्र राजा ठाकुर नाई निवासी बुधा विलेज नियर शिव मंदिर आसनसोल जिला वर्धमान प. बंगाल व पारिजात घोष पुत्र प्रदीप घोष निवासी सी टाइप बंगलो पोस्ट सुंदरचौक पुलिस थाना कुल्टी जिला वर्धमान प. बंगाल व श्यामल रूईदास पुत्र ज्योति रूईदास निवासी हरिजनपारा मोहल्ला निमटपुर जिला वर्धमान पश्चिम बंगाल को गिरफ्तार कर आसनसोल न्यायालय में पेश कर ट्रांजिट रिमाण्ड प्राप्त किया गया। इसमें अन्य मुलजिमों की तलाश जारी है।

साइबर ठगों द्वारा ओडी (लोन) बैंक खाता को हैक कर के आम लोगों से ठगी कर घटना को अंजाम दिया जाता है। आरोपियों द्वारा साइबर ठगों द्वारा ठगी गयी राशि को कमीशन बेस पर स्वयं के बैंक खातों में प्राप्त कर रुपयों को एटीएम के माध्यम से कैश कर लिया जाता है।

संविदा कर्मियों की भर्ती में हुई धांधली को लेकर प्रदर्शन

कांग्रेस पदाधिकारियों ने कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन कर नारेबाजी की।

- कांग्रेस नेताओं ने भर्ती प्रक्रिया को लेकर मेडिकल कॉलेज प्रशासन और ठेकेदार एजेंसी पर मिलीभगत और भ्रष्टाचार का आरोप लगाया
- जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर भर्ती को निरस्त करने और नियमानुसार प्रक्रिया चलाने की मांग की

दौसा, (निसं)। मेडिकल कॉलेज में संविदा कर्मियों की भर्ती में हुई धांधली को लेकर सोमवार को कांग्रेस पदाधिकारियों ने कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन किया। कांग्रेस नेताओं ने इस भर्ती प्रक्रिया को लेकर मेडिकल कॉलेज प्रशासन और ठेकेदार एजेंसी पर मिलीभगत और भ्रष्टाचार का आरोप लगाया। प्रदर्शन के बाद कांग्रेस नेताओं ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपकर भर्ती को निरस्त करने और नियमानुसार प्रक्रिया चलाने की मांग की।

विधायक डीसी बैरवा ने आरोप लगाया कि मेडिकल कॉलेज दौसा में संविदा पर भर्ती करते समय योग्यता और मैरिट को पूरी तरह नजरअंदाज किया गया। उन्होंने कहा कि जब इस मुद्दे को लेकर मेडिकल कॉलेज प्रशासन से संपर्क किया गया तो कोई ठोस जवाब नहीं मिला। यह बेरोजगार युवाओं के लिए अन्यायपूर्ण है। प्रधान प्रहलाद मीणा ने कहा कि इस भर्ती प्रक्रिया में उन युवाओं को प्राथमिकता मिलनी चाहिए थी, जिन्होंने कोरोना महामारी के समय सीमित मेहनताने पर अपनी जान जोखिम में डालकर काम किया। ऐसे युवाओं को योग्यता और अनुभव के आधार पर मौका देना चाहिए था। नगर अध्यक्ष घनश्याम भांडारेज ने कहा कि भर्ती प्रक्रिया में पारदर्शिता का अभाव है। कई योग्य बेरोजगार युवाओं के आवेदन स्वीकार तक नहीं किए गए। उन्होंने आरोप लगाया कि मेडिकल कॉलेज प्रशासन और ठेकेदार एजेंसी के बीच मिलीभगत से भ्रष्टाचार की बू आ रही है।

कांग्रेस नेताओं ने ज्ञापन में यह मांग की कि भर्ती प्रक्रिया को तुरंत निरस्त किया जाए, नई भर्ती नियमानुसार योग्यता और मैरिट के आधार पर की जाए, कोरोना काल में सेवा देने वाले योग्य युवाओं को प्राथमिकता दी जाए। इस विरोध प्रदर्शन में महिला कांग्रेस की जिला अध्यक्ष रुक्मणी गुप्ता, ब्लॉक कांग्रेस कमेटी अध्यक्ष हेमराज अवाना, नरेंद्र जैमन, उमाशंकर बनियाना और शीतल चौबे समेत कई नेता और कार्यकर्ता शामिल रहे। कांग्रेस नेताओं ने चेतावनी दी है कि यदि उनकी मांगों को जल्द पूरा नहीं किया गया तो वे आंदोलन को और तेज करेंगे। वहीं, बेरोजगार युवाओं ने भी इस मुद्दे को लेकर आक्रोश जताया है।

लूट करने वाले दो गिरफ्तार

सांभरझील, (निसं)। राहगीर से लौटकर चांदी की चेन व मोबाइल लूट के मामले में पुलिस ने वांछित दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पूर्व में इस मामले में तीन जनों को जिसमें एक बाल अपचारी भी शामिल था, उनसे लूट का माल बरामद कर लिया गया है। थाना अधिकारी राजेंद्र कुमार वर्मा ने बताया कि पुलिस की गठित टीम द्वारा आसूचना संकलन व तकनीकी सहायता द्वारा लूट गिरोह के अन्य वांछित दो आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता मिली। लूट के आरोपी कैलाश गुर्जर निवासी कुणी थाना नावां व गोरधन गुर्जर निवासी लाखनपुरा चौसला थाना नावां जिला डीडवाना कुचामन के निवासी हैं।

महिला की संदिग्ध मौत मामले का खुलासा नहीं होने पर आक्रोश

नारायणपुर, (निसं)। उपखंड क्षेत्र की ग्राम पंचायत मुण्डावरा में एक सप्ताह पूर्व संदिग्ध परिस्थितियों में हुई अनीता सैनी की मौत का खुलासा नहीं होने और आरोपियों की गिरफ्तारी में हो रही देरी के कारण ग्रामीणों ने सोमवार को आक्रोश जताते हुए तहसीलदार अनिल कुमार को मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। ग्रामीणों ने घटना का जल्द से जल्द खुलासा करने और दोषियों को गिरफ्तार करने की मांग की।

- तहसीलदार को ग्रामीणों ने सौंपा ज्ञापन, घटना का खुलासा करने की मांग की

जानकारी के अनुसार 12 जनवरी को अनीता सैनी की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई थी। मृतका के पीहर पक्ष ने आरोप लगाया था कि अनीता के ससुराल पक्ष में उनके पति, जेठ, सास और ससुर ने उसकी हत्या की है। उन्होंने बताया कि ससुराल वालों ने न तो पीहर पक्ष को अनीता की मौत की सूचना दी और न ही मौके पर किसी को बुलाया। बाद में गांव वालों ने पीहर पक्ष को फोन कर सूचना दी, जिससे पता चला कि अनीता की हत्या कर दी गई है। परिजनों और ग्रामीणों का आरोप है कि घटना के एक सप्ताह बाद भी पुलिस ने न तो मामले का खुलासा किया है और न ही आरोपियों को गिरफ्तार किया है। इस लापरवाही से ग्रामीणों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। सोमवार को ग्रामीणों ने तहसील कार्यालय पहुंचकर अनीता को न्याय दो के नारे लगाए। इसके बाद उन्होंने तहसीलदार को ज्ञापन सौंपते हुए मुख्यमंत्री से मामले में हस्तक्षेप कर जल्द कार्रवाई की मांग की। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई, तो वे आंदोलन तेज करेंगे। इस दौरान रमेश, राजू, हीरा देवी, बाबूलाल, राहुल, योगेश, राकेश, रोहिताश, कैलाश, मोहन, ईमरती, कमला, ममता, मेघराज और घनश्याम सैनी समेत ग्रामीण और महिलाएं शामिल थी।

शिक्षक को मंडोर बुलाकर 10 लाख की डिमाण्ड की

जोधपुर, (कासं)। शहर के एक शिक्षक को इंस्टाग्राम आईडी पर लड़की से मैसेज करवाने के बाद दो सगे भाइयों ने ब्लैकमेल करने का प्रयास किया। उसे मंडोर बुलाया और एक स्थान पर मारपीट करते हुए दस लाख की डिमाण्ड रखी। उसके भाई को कॉल कर दस लाख रूपए मांगे गए। घटना शनिवार की है। पीड़ित शिक्षक के बहनोई ने रविवार को मंडोर थाने में इसकी रिपोर्ट दी। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई की और लोकेशन के आधार पर दो सगे भाइयों को बापर्दा गिरफ्तार कर दो मोबाइल जब्त किए। मामले में जांच की जा रही है।

मदेरणा कॉलोनी माता का थान निवासी राजेश पुत्र तुलसीराम चौधरी की तरफ से रिपोर्ट दी गई। इसमें बताया कि उसके साले शिक्षक नेताराम चौधरी को 18 जनवरी को इंस्टाग्राम आईडी पर लड़की का मैसेज आया और उसे मंडोर बुलाया गया। इस पर उसका साला नेताराम गांव से रवाना होकर सुबह मंडोर गया, जहां पर बाद में उसी नंबर से उसके बड़े भाई के पास में कॉल आया और दस लाख रूपयों की डिमाण्ड रखी। अन्यथा नेताराम को बदमान करने के साथ लड़की के केस में फंसाने के लिए धमकाया। नेताराम के साथ मारपीट भी करने लगे। पीड़ित के बहनोई ने पुलिस को सूचना दी और केस दर्ज करवाया।

आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए पुलिस की एक टीम डीएसटी पूर्व प्रभारी श्याम सिंह, मंडोर थाना प्रभारी एसआई अरूणा, एएसआई धन्नाराम, जगदीश चंद्र, हैड कांस्टेबल बंशीलाल, कांस्टेबल मुकेश, पांचाराम, साहबराम की गठित की गई। पुलिस ने आसपास मोबाइल लोकेशन निकालकर दो सगे भाइयों मथानिया के खुडियाला स्थित भाकारों की ढाणियां निवासी भिंयाराम पुत्र रामूराम एवं चौलाराम जाट को बापर्दा गिरफ्तार किया है।

25 लाख की ठगी

जोधपुर, (कासं)। निकटवर्ती बनाड़ क्षेत्र में रहने वाले व्यक्ति से सरकारी विभागों में नौकरी लगवाने के नाम पर 25 लाख की धोखाधड़ी हो गई। उससे चार सालों में यह रकम ऐठी गई। आखिर में आरोपी ने मना कर दिया। पीड़ित ने अब पुलिस की शरण लेकर केस दर्ज करवाया है। बनाड़ पुलिस ने बताया कि विश्नोईयों की ढाणी बनाड़ निवासी परसाराम पुत्र पुनाराम चौधरी की तरफ से रिपोर्ट दी गई। इसमें बताया कि चार साल पहले फरवरी 2021 में उसका संपर्क बनाड़ क्षेत्र में रहने वाले कैलाशचन्द्र पुत्र खेमाराम के साथ हुआ। उसने सरकारी विभागो में अपनी अच्छी पकड़ और अधिकारियों से पहचान का कहकर उसके पुत्रों और रिश्तेदारों को नौकरी दिलाने तथा अधिकारियों से मुलाकात कराने और नियुक्ति पत्र दिलाने का झांसा देकर उससे अलग अलग समय में करीब 25 लाख रूपये की राशि ले ली, लेकिन चार साल बाद भी न तो किसी की नौकरी लगाई और नहीं दिए गए रूपए वापिस लौटाए। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की है।

खेतड़ी को जिला बनाने की मांग

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी को जिला बनाने की मांग को लेकर सोमवार को ग्रामीणों ने एसडीएम का कार्यालय के सामने विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान तहसीलदार को ज्ञापन देकर खेतड़ी को जिला बनाने की मांग की गई। ग्रामीणों ने सरकार द्वारा जल्द मांग नहीं मानने पर बड़े स्तर पर आंदोलन की चेतावनी दी है।

- ग्रामीणों ने प्रदर्शन किया, तहसीलदार को ज्ञापन देकर मांग नहीं मानने पर बड़े स्तर पर आंदोलन की चेतावनी दी

ग्रामीणों ने एसडीएम कार्यालय के सामने विरोध प्रदर्शन किया।

तहसीलदार सुनील कुमार को दिए ज्ञापन में ग्रामीणों ने बताया कि खेतड़ी को जिला बनाओ की मांग संघर्ष समिति की ओर से पिछले काफी समय से की जा रही है। जिला बनाने की मांग को लेकर संघर्ष समिति व ग्रामीणों की ओर से उच्च स्तर पर भी अवगत करवाया जा चुका है, लेकिन आमजन की भावनाओं को देखते हुए सरकार की ओर से कोई ठोस कदम नहीं उठाया जा रहा है। सरकार द्वारा कोई प्रभावी कदम नहीं उठाने से अब ग्रामीणों में रोष उत्पन्न होने लगा है। उन्होंने बताया कि खेतड़ी को जिला नहीं बनाए जाने से क्षेत्र के लोगों के लिए व्यापार में भी काफी परेशानी उठानी पड़ रही है। वहीं आवश्यक संसाधनों का अभाव होने से खेतड़ी लगातार विकास की गति में पिछड़ रहा है। खेतड़ी वर्तमान समय में जिला बनने की सभी शर्तें पूरी करने के बावजूद भी सरकार की ओर से अनदेखी की जा रही है। जब सरकार की ओर से नगर पालिका व उप तहसील जैसे क्षेत्रों को जिला बना दिया ऐसे में खेतड़ी को जिला नहीं बनाए जाने से खेतड़ी की जनता को गहरा आघात लगा हुआ है।

ग्रामीणों ने बताया कि ऐतिहासिक व भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो खेतड़ी पूरे विश्व में अपनी एक अलग पहचान रखता है। खेतड़ी के राजा अजीत सिंह ने स्वामी विवेकानंद को शिकागो के धर्म सम्मेलन में भेजकर सनातन धर्म के प्रचार को लेकर महत्वपूर्ण कदम उठाया था, जिसकी वजह से खेतड़ी की पूरे विश्व में अपनी अलग पहचान बनी हुई है। ग्रामीणों ने बताया कि यदि जिला बनाने को लेकर सरकार ने जल्द ही कोई प्रभावी निर्णय नहीं लिया गया तो खेतड़ी क्षेत्र के ग्रामीणों की ओर से बड़े स्तर पर आंदोलन किया जाएगा।

इस मौके पर सुरेश कुमार, पवन शर्मा, राजेश सांखला, सुभाषचंद्र, जुगल किशोर, रामचंद्र, मुरलीधर, विशंभर दयाल, महावीर, संजय, सत्यनारायण, सीताराम कुमावत, संत कुमार, नागरमल, विष्णु दयाल, ओमप्रकाश, प्रवीण कुमार, खेमचंद, विकास कुमार, भरत, अशोक कुमार, रमेश चंद्र सहित अनेक लोग मौजूद थे।

सड़क बनाने की मांग, टंकी पर चढ़े ग्रामीण

टोंक, (निसं)। सदर थाना क्षेत्र की मंडावर पंचायत की देवगंज ढाणी के सात लोग गांव में रास्ता नहीं बनने से परेशान होकर करीब 70 फीट ऊंची टंकी पर चढ़ गए। इसकी सूचना मिलने पर सदर थाना पुलिस और प्रशासन की टीम मौके पर पहुंची। पुलिस और प्रशासन ने लोगों को टंकी से उतरने के लिए समझाया, लेकिन वे नहीं माने।

ग्रामीणों ने बताया कि सदर थाना क्षेत्र की इस ढाणी में आजादी से अब तक रोड नहीं बना है, इसके चलते खासकर बारिश के दिनों में बच्चों समेत लोगों को परेशानी होती है। एक-एक फीट के गड्ढे हो जाते हैं, पूरा रोड कीचड़ से सना रहता है। इस समस्या को लेकर एक साल से तो ग्रामीण मुख्यमंत्री से लेकर मंत्री, कलेक्टर, स्थानीय विधायक सचिन पायलट आदि को ज्ञापन दे चुके हैं तथा कलेक्ट्रेट पर प्रदर्शन कर चुके हैं। हर बार आश्वासन मिला, लेकिन अभी तक पक्का रोड बना नहीं। देर शाम तक पुलिस मौके पर मौजूद थी। वहीं ग्रामीण सड़क निर्माण की स्वीकृति की मांग पर अड़े रहे।

पुलिस ने सात गो तस्करों को पकड़ा

किशनगढ़ बास, (निसं)। पुलिस थाना किशनगढ़ बास क्षेत्र के बहुचर्चित रहे रुध में पांच दिन पहले मिले गोवंश अवशेष मामले में खैरथल एसपी मनीष चौधरी के निर्देशन में किशनगढ़ बास अधिकारियों ने पुलिस टीम के साथ कार्यवाही कर 7 गो तस्करों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने पकड़े गए गो तस्करों के पास से दो गाड़ियां भी जब्त की है। 2024 फरवरी माह में रूघ के जंगल में गोकशी का बड़ा मामला उजागर हुआ था। थानाधिकारी जितेंद्र सिंह ने बताया कि 15 जनवरी को सूचना मिली कि पडासला के जंगल में चार-पांच गो वंश कटी पड़ी है। ब्रसंगपुर रुंध गिदावडा पहुंचे देखा तो मौके पर एक नाले में आधी दबी हुई गो वंश की चमड़ी नजर आई, जिसमें दुर्गंध आ रही थी। पशु चिकित्सा अधिकारी ललितेश कुमार शुक्ला ने निरीक्षण कर उक्त अवशेष गोवंश के होना बताया गया तथा करीब तीन-चार दिन पुराना होना बताया। मौके पर मिले मृत गोवंश के अवशेष जप्त कर कब्जा पुलिस लिया गया। पुलिस ने बिरसगपुर निवासी आरोपी मौसम पुत्र जोरमल, अनीश खान पुत्र कासम निवासी बाघोडा, तारुन खान पुत्र अब्दुल करीम निवासी मिर्जापुर, शौकीन पुत्र नबबी निवासी मिर्जापुर, कामिल पुत्र फजरू निवासी मिर्जापुर, खालिद उर्फ खली पुत्र अब्दुल करीम निवासी मिर्जापुर, सकी मोहम्मद उर्फ सकी पुत्र जोहरू निवासी बिरसगपुर को गिरफ्तार किया है।

साढ़े छह किलो गांजे के साथ दो गिरफ्तार

कपासन, (निसं)। कपासन थाना पुलिस ने अवैध मादक पदार्थ गांजा की तस्करी करने वाले दो आरोपियों गिरफ्तार उनके कब्जे से 6 किलो 580 ग्राम अवैध गांजा जब्त किया है। मामले में पुलिस ने एक स्कूटी जब्त की है। दोनों आरोपियों को दो दिन के पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

- एक स्कूटी जब्त, दो दिन के पुलिस रिमांड पर सौंपा

पुलिस अधीक्षक सुधीर जोशी ने बताया कि जिले में अवैध मादक पदार्थों की धरपकड़ कार्यवाही एवं वांछित अपराधियों की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में चलाये जा रहे अभियान के तहत एएसपी सरिता सिंह व डीएसपी कपासन हरजीलाल यादव के सुपरविजन में थानाधिकारी रतनसिंह पु.नि. के निर्देश पर थाने के चन्द्रप्रभात उ.नि., कानिं. जितेन्द्र, रामपाल, सहदेव, कैलाश व विष्णुगिरी द्वारा थाना क्षेत्र में गश्त की जा रही थी। इसी दौरान एक स्कूटी पर सवार दो व्यक्तियों को रुकवाकर चैक किया तो उनके पास एक प्लास्टिक के कटटे में 6 किलो 580 ग्राम अवैध गांजा मिला। उक्त अवैध गांजा व स्कूटी को जब्त कर आरोपी सदर चित्तौड़गढ़ थाने के प्रतापनगर निवासी 25 वर्षीय दीपक पुत्र केसुराम खटीक व कोतवाली चित्तौड़गढ़ थाने के पावटा चौक निवासी 24 वर्षीय पीयूष उर्फ प्रियांश कुमार पुत्र रतनलाल टेलर को गिरफ्तार किया।

गांजा तस्करी का वांछित आरोपी गिरफ्तार : कपासन पुलिस ने मादक पदार्थों की तस्करी के मामले में दो साल से फरार चल रहे एक वांटेड अपराधी को गिरफ्तार किया है। राजसमंद जिले के रेलमगरा थाना क्षेत्र के छोगाबा का खेड़ा निवासी रोशन बंजारा (45) गुजरात में छिपकर फरारी काट रहा था।

एसपी सुधीर जोशी के निर्देशन में जिले में मादक पदार्थों की तस्करी रोकने के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी के तहत एएसपी सरिता सिंह और डीएसपी हरजी लाल यादव के पर्यवेक्षण में एसएचओ रतन सिंह के नेतृत्व में टीम ने कार्रवाई की। पुलिस टीम में शामिल एएसआई तेजमल, कांस्टेबल महेंद्र सिंह और राजेश ने मुखबिर नेटवर्क के जरिए सूचना जुटाई। जानकारी मिली कि वांटेड अपराधी रोशन बंजारा अपने गांव आया हुआ है। पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए उसे धर दबोचा। पूछताछ में पता चला कि वह पिछले दो सालों से गुजरात में छिपकर रह रहा था। कपासन पुलिस ने मादक पदार्थों की तस्करी के मामले में दो साल से फरार चल रहे एक वांटेड अपराधी को गिरफ्तार किया है।

चिकित्सा विभाग ने जांच कमेटी गठित की

भीलवाड़ा, (नि.सं.)। एंबुलेंस का गेट अटकने से महिला की मौत मामले से संबंधित खबर के बाद चिकित्सा विभाग ने तुरन्त संज्ञान लेते हुए घटना की जांच के लिए एक कमेटी का गठन किया है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सीपी गोस्वामी ने बताया कि 20 जनवरी को प्रकाशित खबरों में बताया गया था कि प्रतापनगर क्षेत्र में एक घायल महिला को अस्पताल लाने के दौरान 108 एम्बुलेंस का तकनीकी समस्या के कारण लॉक जाम हो गया। इस कारण महिला को कांच तोड़कर बाहर निकालना पड़ा और मौत हो गई। इस पर विभाग ने तुरन्त संज्ञान लेकर इस घटना की जांच के लिए आदेश जारी कर चार सदस्यीय जांच समिति का गठन किया गया है।

जांच कमेटी में जिला प्रजनन एवं शिशु स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. संजीव कुमार शर्मा, सहायक लेखाधिकारी प्रेमप्रकाश भाम्बी, डीपीओ एनएचएम योगेश वैष्णव, यूनिट हेड अबरार को शामिल किया गया है। सीएमएचओ डॉ. गोस्वामी ने मामले की विस्तृत जांच कर अविलंब तथ्यात्मक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश जांच कमेटी को दिए, ताकि इस घटना की वास्तविकता सामने आ सके और भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति को रोका जा सके।

नर्सिंग अधिकारियों के स्थानांतरण के बाद अस्पताल की व्यवस्था चरमराई

पाटन सीएचसी में महज एक नर्सिंग ऑफिसर होने से मरीज परेशान हो रहे हैं

पाटन, (निसं)। कस्बे में स्थित मूलचंद दीवान राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में नर्सिंग अधिकारियों के स्थानांतरण के बाद चिकित्सालय की व्यवस्था पूर्ण रूप से डगमगा गई है। फिलहाल एक नर्सिंग ऑफिसर के भरोसे हॉस्पिटल चल रहा है, जिसके चलते मरीजों को अव्यवस्थाओं का सामना करना पड़ रहा है।

जानकारी के अनुसार चिकित्सालय में मरीजों की लंबी लाइन देखने को मिली जिनको अपने इंजेक्शन लगवाने का इंतजार हो रहा था। सीएचसी में महज एक नर्सिंग ऑफिसर होने के कारण मरीजों को खासी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। चिकित्सालय में आठ नर्सिंग अधिकारियों की सीट स्वीकृत थी, जिसमें दो नर्सिंग अधिकारियों की नियुक्ति नहीं होने से 6 नर्सिंग अधिकारी अपनी सेवाएं दे रहे थे। छह में से एक नर्सिंग अधिकारी फर्स्ट ग्रेड का होने से पांच नर्सिंगकर्मी 30 बेड के अस्पताल को संभाल रहे थे। हाल ही में हुए ट्रांसफर में दो नर्सिंग कर्मियों का स्थानांतरण हो जाने से अब चिकित्सालय में तीन नर्सिंग कर्मियों का स्टाफ बचा हुआ है, जिसमें भी अलग-अलग ड्यूटियां लगी होने से मात्र एक नर्सिंग अधिकारी अपनी सेवा दे रहा है। ऐसे में अगर इनमें से किसी नर्सिंग अधिकारी को छुट्टी की जरूरत पड़ गई तो मरीजों की देखरेख करने वाला कोई भी नर्सिंगकर्मी नहीं रहेगा। वर्तमान में अस्पताल में 500 से ऊपर का आउटडोर रहता है, ऐसे में अगर चिकित्सालय में शीघ्र नर्सिंग अधिकारियों की नियुक्ति नहीं हुई तो हॉस्पिटल में अव्यवस्थाओं का आलम बढ़ जाएगा। चिकित्सालय में एक नर्सिंगकर्मी होने के कारण कभी आईपीडी में तो कभी इमरजेंसी में तो कभी सामान्य वार्ड में आकर के इंजेक्शन लगाने पड़ रहे हैं।

पाटन के मूलचंद दीवान राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मरीजों को अव्यवस्थाओं का सामना करना पड़ रहा है।

- चिकित्सालय में शीघ्र नर्सिंग अधिकारियों की नियुक्ति नहीं हुई तो हॉस्पिटल में अव्यवस्थाओं का आलम बढ़ जाएगा

बल्लुपुरा सरपंच हवासिंह वर्मा ने बताया कि मुझे अस्पताल में आए हुए दो घंटे हो गए हैं परंतु एक नर्सिंगकर्मी होने से मेरे इंजेक्शन नहीं लग पा रहा है।

वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी प्रभारी डॉ. अमित यादव ने बताया कि अस्पताल में पांच कंपाउंडर थे जिनमें से दो कंपाउंडरों का हाल ही में ट्रांसफर हो गया जिस कारण दो-तीन दिन से अस्पताल में अव्यस्थाएं हो रही है। अगर सरकार यहां कंपाउंडरों को नहीं हटाती तो कोई दिक्कत नहीं थी। अब देखते हैं कोई और कंपाउंडर आएंगे तब ही व्यवस्थाएं सुचारू रूप से चल पाएगी।

संक्षिप्त

रामनरेश गोहरपूरा बने जिलाध्यक्ष

निवाई। अखिल भारतीय वीर गुर्जर महासभा के प्रदेशाध्यक्ष मनीष भरगड़ ने रामनरेश गोहरपूरा को महासभा का टोंक जिला अध्यक्ष के पर नियुक्त किया है। नियुक्ति पत्र में सामाजिक सरोकारों में भूमिका निभाने, महासभा की गतिविधियों को आगे बढ़ाने और सदस्यता अभियान को गति देने के निर्देश दिए। संगठन के प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेश हरसल, प्रदेश उपाध्यक्ष नन्दलाल लागड़ी, प्रदेश महा सचिव हंसराज गुंजल, प्रदेश महासचिव कुलदीप महुआ, जिला उपाध्यक्ष रामराज फागण, हरकेश गुर्जर, हंसराज हरचंदेडा व खुशीराम मेनेजर सहित कई समाज के कार्यकर्ताओं ने रामनरेश को सम्मानित किया।

एक हैड कांस्टेबल व पांच कांस्टेबल लाइन हाजिर

बौंली-बामनवास। पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता ने अपने आदेशों के अनुसार सूरवाल थाने पर तैनात हैड कांस्टेबल नथन सिंह को एवं कांस्टेबल सीताराम, मनराज मीणा व जितेंद्र चौधरी को एवं मलारना डूंगर थाने पर तैनात लखनलाल व महेंद्र को सवाई माधोपुर पुलिस लाइन स्थानांतरित किया गया है।

श्रद्धालूओं की बस कुम्भ के लिये रवाना

कोटपूतली। श्री श्याम परिवार कोटपूतली की ओर से कस्बे के चंद्रदास कॉलोनी के श्रद्धालूओं की एक बस सोमवार को महेश व मनीष यादव के नेतृत्व में कुम्भ के लिये रवाना की गई। श्रद्धालू अयोध्या होते हुये प्रयागराज जायेंगें। श्री श्याम परिवार के अध्यक्ष राजेश सवाईका ने शुभकामना देकर बस को रवाना किया।

'आमजन को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रभावी मॉनिटरिंग करें'

- 7 पीएचसी पर पहली बार संस्थागत प्रसव शुरू व 2 पीएचसी एनक्वास से हुई सर्टिफाइड एवं 20 और संस्थानों को एनक्वास सर्टिफाइड कराने का दिया लक्ष्य

अलवर। जिला कलक्टर डॉ. आर्तिका शुक्ला की अध्यक्षता में आज कलक्ट्रेट सभागार में जिला स्वास्थ्य समिति की समीक्षा बैठक आयोजित हुई।

जिला कलक्टर ने विभागीय योजनाओं की समीक्षा करते हुए सीएमएचओ को निर्देश दिये कि जिले में आमजन को बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रभावी मॉनिटरिंग करें। केंद्र व राज्य सरकार की योजनाओं को सरकार की मंशा के अनुरूप जिले में क्रियान्वित करावें। जिले की विभिन्न बिन्दुओं में रैंकिंग में सुधार करें। इसमें लापरवाही बरतने वाले कार्मिकों के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाई अमल में लाएं।

उन्होंने सीएमएचओ व डीओआईटी के एसीपी को निर्देश दिये कि मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना के तहत 70 वर्ष से अधिक आयु के व्यक्तियों के शेष ई-केवाईसी कराने हेतु 31 जनवरी तक ग्राम पंचायत स्तर तक विशेष शिविर लगाकर शत-प्रतिशत केवाईसी का कार्य करें। साथ ही आयुष्मान कार्ड का भी वितरण करावें। उन्होंने मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना की समीक्षा कर योजना के तहत जिले की चिकित्सा संस्थानों में आगामी एक माह में रोगियों के उपचार में अधिकाधिक क्लेम बुक करने के निर्देश देते हुए एक माह में 15 लाख रूपये की राशि के क्लेम बुकिंग में वृद्धि करने के निर्देश दिये तथा 31 मार्च तक कुल क्लेम बुकिंग में एक करोड़ रूपये की वृद्धि करें, ताकि रोगियों को गुणवत्तापूर्ण उपचार मिल सके तथा संबंधित चिकित्सा संस्थान को बुक क्लेम की राशि प्राप्त हो सके।

झिरी, सेमलाखुर्द, नायना व समरा में पहली बार संस्थागत प्रसव प्रारम्भ होने पर संतुष्टि जाहिर कर निर्देश दिये कि शेष रही पीएचसी में भी संस्थागत प्रसव प्रारम्भ करावे इसके लिए आवश्यक संसाधनों आदि की व्यवस्था सुनिश्चित करें। उन्होंने आरसीएचओ को निर्देश दिये कि जिले में शत-प्रतिशत संस्थागत प्रसव कराने हेतु दैनिक, साप्ताहिक, पाक्षिक व मासिक कार्ययोजना बनाकर कार्य करें तथा आशा सहयोगिनियों की प्रभावी मॉनिटरिंग करें। साथ ही उन्होंने निर्देश दिये कि सुनिश्चित करावे कि जिले में राजकीय व निजी चिकित्सालयों में होने वाले सभी संस्थागत प्रसवों की सूचना समयबद्ध रूप से प्राप्त होवे।

उन्होंने जिले की पीएचसी बगडमेव व जामडोली को एनक्वास सर्टिफिकेट मिलने पर चिकित्सा विभाग की टीम को बधाई दी। साथ ही निर्देश दिये कि चरणबद्ध रूप से जिले के चिकित्सा संस्थानों को एनक्वास सर्टिफाइड करवाएं। इसके लिए प्रथम चरण में 20 चिकित्सा संस्थानों को एनक्वास सर्टिफाइड यथाशीघ्र कराने का प्रयास करें।

जिला कलक्टर ने विगत बैठक में दिए गए निर्देशों की अनुपालना में जिले में 7 पीएचसी बालेटा, इटेडा, दुबी,

जिला के संदर्भ में वकीलों का मुख्यमंत्री से अनुरोध

सांभरझील, (निसं)। प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से यहां के वकीलों ने सांभर को जिला बनाए जाने के संदर्भ में एक मांग पत्र भिजवाते हुए अनुरोध किया है कि जो गलतियां पूर्ववर्ती सरकार के मुखिया अशोक गहलोत ने की उससे क्षेत्र की जनता की भावना को काफी धक्का लगा, जबकि वर्ष 1952 से सांभर जो कि राजस्थान का सबसे पुराना उपखंड है जिला के लिए डिजर्व है, इसलिए इसके तमाम पहलुओं पर दृष्टिपात करते हुए आगामी बजट में सांभर को स्वतंत्र रूप से जिला घोषित कर क्षेत्र की जनता को अनुग्रहित करने की कृपा करें। सांभर अभिभाषक समिति के अध्यक्ष व सचिव, पूर्व अध्यक्षों व सदस्यों सहित अनेक अधिवक्ताओं ने इसके समुचित कारणो को दर्शाते हुए कहा कि सांभर को जिला बनाए जाने के लिए बार एसोसिएशन विगत 13 वर्षों से सतत प्रयासरत है, जो कि संघ के कार्यालय में तमाम दस्तावेज आज भी मौजूद है। युवा अधिवक्ताओं व अनेक ने अपने ओजस्वी विचारों से सभी में जागृति का संदेश फूंका। विचारों को साझा किए जाने के बाद जिला के मुहिम के लिए आगामी रणनीति ठोस तरीके से तय किए जाने के लिए भी समय निर्धारित किया गया।

ज्योति कलश रथ यात्रा का किया स्वागत

चाकसू। गायत्री पीठ शांतिकुंज हरिद्वार के तत्वाधान में निकाल जा रही ज्योति कलश रथ यात्रा सोमवार को चाकसू बाईपास पहुंचने पर स्वागत किया गया गायत्री पीठ से जुड़े सुनील शर्मा ने बताया कि गायत्री पीठ के संरक्षक पंडित श्रीराम शर्मा ने जो अखंड दीप प्रज्वलित सन 1926 में किया था बसंत पंचमी 2026 को उसके 100 वर्ष पूरे हो रहे हैं इसी के उपलक्ष में यात्रा हरिद्वार से चलकर पूरा भारत भ्रमण करेगी जो आगामी 25 जनवरी तक यात्रा चाकसू के गांव से निकलकर आगे बढ़ेगी इसका उद्देश्य भारतीय संस्कृति का प्रचार प्रसार करना है और गायत्री पीठ से लोगों को जोड़कर नैतिक मूल्यों को बढ़ाना है अंत में यह यात्रा गायत्री शक्तिपीठ हरिद्वार पहुंचेगी वहां पर बसंत पंचमी 2026 को महायज्ञ का आयोजन होगा इसी के तहत रथ यात्रा के चाकसू बाईपास पहुंचने पर श्री परसराम फिलिंग स्टेशन पर पर शांतिकुंज हरिद्वार से जुड़े सदस्य अवधेश शर्मा ने ज्योति कलश को तिलक लगाकर, आरती की शक्तिपीठ से पधारे महानुभावों का दुपट्टा पहन कर स्वागत किया।

विधायक धनकड करेंगे जनसुनवाई

पावटा। विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड आपका विधायक आपके द्वार कार्यक्रम के तहत आज से पावटा प्रागपुरा नगरपालिका क्षेत्र के पावटा कस्बे में जनता के बीच जाएंगे व जनता की जो स्थानीय समस्याएं हैं, मूलभूत सुविधाओं से जुड़ी समस्याएं हैं, उनको सुनेगे। जनता से उनकी समस्याओं पर चर्चा कर उनकी समस्याओं के समाधान हेतु काम करेंगे व गांव-गांव पहुंचकर आमजन से चर्चा करते हुए सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से उन्हें अवगत करवाएंगे।

जिला न्यायालय की न्याय शिखा बनवाने के लिए वकीलों ने की बैठक

किशनगढ़ बास। अभिभाषक संघ अध्यक्ष सुनील यादव की अध्यक्षता में वकीलों ने बैठक की। बैठक में किशनगढ़ बास में जिला न्यायालय का न्याय शिखा बनवाए जाने व राजस्व अपील अधिकारी कैंप कोर्ट को नियमित कराए जाने आदि मांगों पर विचार विमर्श कर निर्णय लिया कि आमजन की सुविधाओं एवं हितों को देखते हुए अभिभाषक संघ, व्यापारियों एवं सामाजिक संगठनों के साथ बैठक कर जिला कलेक्टर को मुख्यमंत्री के नाम मांग पत्र सौंपेगा।

बैठक में अभिभाषक संघ अध्यक्ष सुनील यादव पूर्व अध्यक्ष अमित गौड़, अजीत राव, कोषाध्यक्ष विपिन शर्मा, सचिव रविंद्र शर्मा, योगेंद्र चौधरी, वरिष्ठ अधिवक्ता भुवनेश तिवाडी, चंद्र प्रकाश शर्मा, अनिल गोयल, कैलाश गुप्ता, सूरजभान भड़ाना, प्रदीप सोनी, यादवेंद्र सिंह सलीम मोहम्मद देवेंद्र शर्मा आदि अधिवक्ता मौजूद रहे।

संघ अध्यक्ष सुनील यादव ने बताया कि किशनगढ़ बास में जिला न्यायालय का न्याय शिखा बनवाए जाने व राजस्व अपील अधिकारी कैंप कोर्ट को किशनगढ़ बास में नियमित कराए जाने आदि बाबत मांगों को लेकर 2 दिन पूर्व केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव के खैरथल आगमन पर अभिभाषक संघ की ओर से मांग पत्र सौंपा गया है। बैठक में वरिष्ठ अधिवक्ता भुवनेश तिवाडी चंद्र प्रकाश शर्मा ने बताया किशनगढ़ बास में 1983 से अपर जिला एवं सेशन न्यायालय है। वर्तमान में दो अपर जिला एवं सेशन न्यायालय तथा तीन मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट व सिविल न्यायिक मजिस्ट्रेट न्यायालय है। इसके अलावा उपखंड न्यायालय तथा राजस्व कैंप कोर्ट है।

किशनगढ़ बास के अंतर्गत तिजारा भिवाड़ी बहरोड मुंडावर बानसूर कोटकासिम का कार्यक्षेत्र हुआ करता था। धीरे-धीरे सभी जगह अलग-अलग न्यायालय खुलने से किशनगढ़ बास क्षेत्र का अधिकार कम होता गया। खैरथल तिजारा जिला बनने से पूर्व से ही किशनगढ़ बास में बिजली विभाग का अधिशासी कार्यालय पावर ग्रिड सब स्टेशन व जेल है।

पूर्व अध्यक्ष अमित गौड़ ने बताया कि किशनगढ़ बास में जेल के पास 14 बीघा जमीन है जिसमें 5 बीघा में जेल बनी हुई है। आबादी क्षेत्र बढ़ने से जेल आवासीय क्षेत्र के बीच है। जेल शिफ्ट किए जाने की प्रक्रिया सरकार के पास विचाराधीन है। न्यायालय के नव निर्माण के लिए उपयुक्त जगह है। इसी के साथ नगर पालिका के समीप करीब 100 बीघा जमीन सरकारी क्वार्टर बनाए जाने के लिए उपलब्ध है और खैरथल तिजारा जिला मुख्यालय से किशनगढ़ बास की दूरी केवल 12 किलोमीटर की है।

एन. डी. पी. एस. जागरूकता अभियान के तहत पुलिस अधिकारियों ने लोगों को जानकारी दी

दौसा। पुलिस के साइबर शील्ड, सड़क सुरक्षा व एनडीपीएस जागरूकता अभियान के तहत पुलिस अधिकारियों ने लोगों को जानकारी दी। नागरिकों को साइबर, एनडीपीएस व यातायात नियमों के संबंध में जागरूक किया गया।

साइबर शील्ड अभियान भारत सरकार की एक पहल है, जिसका उद्देश्य साइबर सुरक्षा को बढ़ावा देना और इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को साइबर हमलों से बचाना है। इस अभियान के अंतर्गत सरकारी विभाग, संस्थान, और आम नागरिकों को साइबर खतरों के बारे में जागरूक किया जाकर उन्हें सुरक्षित ऑनलाइन व्यवहार के लिए प्रेरित किया गया है। लोगों को साइबर हमलों, जैसे कि फिशिंग, मैलवेयर, और हैकिंग के बारे में जागरूक किया। इंटरनेट उपयोगकर्ताओं को मजबूत पासवर्ड बनाने, संवेदनशील जानकारी साझा करते समय सतर्क रहने और सार्वजनिक वाई-फाई नेटवर्क से बचने के बारे में शिक्षा दी। उपयोगकर्ताओं को साइबर अपराधों की रिपोर्ट करने के लिए प्लेटफॉर्म और हेल्पलाइन नंबर प्रदान किए। इसी तरह सड़क सुरक्षा अभियान के तहत सड़क हादसों को कम करना, यातायात नियमों के प्रति जागरूकता बढ़ाना और लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। ताकि सड़क सुरक्षा पर लोगों का ध्यान आकर्षित किया जा सके और सड़क पर दुर्घटनाओं की संख्या घटाई जा सके। लोगों को यातायात नियमों के महत्व के बारे में जानकारी दी जाती है, जैसे कि सिग्नल का पालन करना, हेलमेट पहनना, सीट बेल्ट लगाना, और शराब पीकर गाड़ी न चलाना। हेलमेट और सीट बेल्ट का उपयोग करने के लिए प्रेरित करना। एनडीपीएस अभियान का उद्देश्य मादक पदार्थों के दुरुपयोग और तस्करी के बारे में जागरूकता फैलाना है। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य समाज में मादक पदार्थों के नशे के खतरों के प्रति लोगों को जागरूक करना और इस प्रकार के पदार्थों के दुरुपयोग को रोकना है। मादक पदार्थों जैसे कि हेरोइन, कोकीन, गांजा, चरस, अल्कोहल, और अन्य मानसिक रूप से प्रभाव डालने वाले पदार्थ के दुरुपयोग से होने वाली शारीरिक और मानसिक हानि के बारे में लोगों को बताया। पदार्थों की तस्करी के खिलाफ लोगों को सजग करना और तस्करों की गतिविधियों को रोकने के लिए पुलिस और अन्य सरकारी एजेंसियों के साथ सहयोग करें। लोगों को एनडीपीएस अधिनियम और इससे तहत लागू होने वाले क़ानूनों के बारे में भी जानकारी दी।

वृक्षारोपण परियोजना के तहत कार्यशाला आयोजित

बौंली -बामनवास। सवाई माधोपुर जिला वन मंडल के अधीन ग्राम वन सुरक्षा एवं प्रबंध समिति के सदस्यों व वन मित्रों की एक दिवसीय कार्यशाला बौंली रेंज वन विभाग प्रांगण में आयोजित की गई। कार्यशाला का शुभारंभ उपवन संरक्षक श्रवण कुमार रेड्डी द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। कार्यशाला में श्री दादू पर्यावरण संस्थान के संस्थापक महावीर मीणा ने दक्ष विशेषज्ञों का परिचय कराया और राजस्थानी परंपरा के अनुसार क्षेत्रीय वन अधिकारी कविता वाई जाट एवं वनपाल भूपेंद्र सिंह जादौन ने अपस्थित सभी अतिथियों का माला एवं शाल ओढाकर स्वागत किया। कार्यशाला में एडवोकेट डॉक्टर महेंद्र सिंह कछवाहा ने राजस्थान अधिनियम 1953 एवं वन्य जीव संरक्षण अधिनियम 1972 के तहत किस प्रकार कानून को लागू करना चाहिये इसकी जानकारी दी। रिटायर्ड डीएफओ देवेंद्र कुमार भारद्वाज ने नर्सरी तकनीकी एवं पौधारोपण पर विस्तृत जानकारी साझा की।

Times Centre for Learning Ltd

Job Opportunity / Recruitment

TCLL a NSDC empanelled VTP Engaged in skilling the students in CSS VSHSE under NSQF framework is inviting applications from candidates with prescribed Qualification & experience for deployment as Vocational trainers for below sectors in Govt. Schools of Rajasthan. Rajasthan residents will be given preference

Essential Qualification:

Agriculture-Post-graduation in Horticulture from a recognized Institute/University Or bachelor's degree in agriculture (should have horticulture as one of the subjects) from a recognized Institute/University. Or Bachelor in Vocational (B.Voc) degree in relevant sector from a recognized institute/University) Or Diploma in Horticulture (at least 2 years).
Post graduation in Dairying/ Animal Husbandry from a recognized Institute /University Or Bachelor's degree in Relevant sector from a recognized university Or Bachelor in Vocational (B.Voc) degree in relevant sector from a recognized institute/University Or Diploma in Livestock management / animal husbandry (at least 2 years).
Apparel-Post-graduation in Textile and Clothing from a recognized Institute / University Or MSc/MH Sc in textile and clothing Or 4 years B.E/B.Tech Degree in Textiles/ Fashion Technology Or Bachelor in Vocational (B.Voc) degree in relevant sector from a recognized institute/University Or Diploma in Fashion designing/textile (at least 2 years).
Automotive-Masters / Bachelor Degree in Automobile Engineering /Mechanical Engineering from a recognized University. Or Bachelor in Vocational (B. Voc) degree in relevant sector from a recognized institute/University Or Diploma in Automobile (at least 2 years).
Beauty & Wellness- MSC/BSC in Beauty Cosmetology from a recognized university Or Bachelor in Vocational (B.Voc) degree in relevant sector from a recognized institute/University Or Minimum One-year Diploma in Cosmetology/ Beauty Therapy/ Beauty Culture / Beauty concept from a recognized Institution (institute recognized by NCVET or AICTE) (In the case of CWSN vocational education schools the Certification in Sign language / Braille (minimum 3 months) will be preferred).
BFSI- Post-graduation in commerce/ management/finance/issuance from a recognized institute/university. Or MBA in Finance / Insurance from a recognized university Or Bachelor in Vocational (B.Voc) degree in relevant sector from a recognized institute/University Or Diploma in relevant sector (at least 2 years).
Electronics- Master of Engineering in Electronics/ Electrical. Or Bachelor of Engineering in Electronics/ Electrical. Or Bachelor in Vocational (B. Voc) degree in relevant sector/job role from a recognized institute/University. Or Diploma or certificate course in Electronics & hardware (at least 2 years).

Minimum Competencies:

1. Minimum of 1 year of work/teaching experience in the case of a Masters' Degree, 2 years' experience in the case of a Bachelor degree and 3 years' experience in the case of diploma in the same sector.
2. Able to communicate in English, Hindi and the local language.
3. Knowledge of equipment, tools, material, Safety, Health & Hygiene of the concerned sector and job role.
4. Basic computer competencies (certificate from a recognized institute or University, minimum of 3 months).

Minimum Age Limit

23 to 60 years as of 1st July 2024.
All-Inclusive Fixed salary:
Rs. 20000/- per month

Last date of receipt of CV : 26-Jan-2025

Note: All Positions are on contractual basis. this is not a govt. Job.

To Apply fill Google Form Link https://forms.gle/TssBaAcJhREYHeCHA (Compulsory to fill) & submit CV at tcllrecruitment.raj@gmail.com

न्यायालय-अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश, संख्या.2 , हिण्डौन सिटी

विजय सिंह धाकड बनाम हरखासआम प्रार्थना.पत्र बाबत जारी किये जाने प्रावेट

नोटिस

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि विजय सिंह धाकड पुत्र श्री मोहरसिंह धाकड, जाति-धाकड, निवासी सरकारी अस्पताल के पीछे, सांकेत कोलोनी, हिण्डौन सिटी, जिला-करौली ने किरोडी उर्फ किशोरी द्वारा आवेदक के हक में दिनांक-19.03.2004 को वसीयतनामा में दर्ज एक बैठक पश्चिम-दक्षिण झांकती कुँआ के पास वाके धाकड पौठा हिण्डौन में से 1/3 में से 1/4 भाग की सम्पत्ती है। उक्त बैठक के किरोडी उर्फ किशोरी के 1/12 हिस्से की सम्पत्ती एवम् खसरा नम्बर-6538 रकबा 0.05 हैक्टर में से 1/8 हिस्सा एवम् खसरा नम्बर-1220 रकबा 0.97 हैक्टर चाही प्रथम, खसरा नम्बर.1226 रकबा. 0.44 हैक्टर चाही प्रथम, खसरा नम्बर-1069/1 रकबा 0.26 हैक्टर वारानी उत्तम खसरा नम्बर-1944/5 रकबा 0.09 हैक्टर चाही द्वितीय जाव-2, कुल किता-4. कुल रकबा 1.76 हैक्टर सम्पूर्ण तथा खसरा नम्बर-1227 रकबा 0.09 हैक्टर गैरमुमकिन कुँआ का 1/4 भाग वाके कस्बा, हिण्डौन का प्रोवेट प्रमाण.पत्र प्राप्त करने के लिए माननीय न्यायालय हाजा में प्रार्थना.पत्र प्रस्तुत कर दिया है। लिहाजा जिस किसी भी व्यक्ति को उक्त प्रार्थना-पत्र के स्वीकार करने में कोई आपत्ती हो तो वह अपनी उपस्थिती इस न्यायालय में दिनांक 10-3-25 को समय 10:30 बजे असालतन व वकालतन उपस्थित होकर अपनी आपत्ती प्रस्तुत कर देए वर्ना गुजरने उक्त दिनांक कोई आपत्ती स्वीकार नहीं होगी एवं प्रार्थना.पत्र इकतरफा में सुनवाई फैसला कर दिया जावेगा। मेरे हस्ताक्षर व मोहर अदालत से आज दिनांक 15-01-2025 को जारी किया गया।

आज्ञा से-रीडर, अपर जिला एवं सेशन (मुहर) न्यायाधीश संख्या-02 हिण्डौन सिटी

कार्यालय आवासीय अभियंता राजस्थान आवासन मण्डल,
2A-1 एस.टी.सी. योजना भरतपुर (Email Id- rebharatpur.rhb@rajasthan.gov.in) (Ph. No.- 05644-223672)
क्रमांक :- 589 दिनांक :- 10/01/2025

आवश्यक सूचना

हर आम एवं खास को इस आवास संख्या 2-द-05 आवासीय योजना कृष्णा नगर भरतपुर की सामान्य पंजीकरण योजना 1977 भरतपुर में हित रखने वाले व्यक्ति विशेष को यह सूचित किया जाता है कि मूल आवंटी श्री पूरनदास शर्मा पुत्र श्री सामलदास शर्मा ने राशि 100/- रूपये जमा करवाकर आर्थिक दृष्टि से कमजोर आय वर्ग (EWS) के आवास हेतु पंजीकरण करवाया गया था। जिन्हें आवंटन पत्र क्र. 1964 दिनांक 18.12.1984 को आवास संख्या 2-द-05 आवासीय योजना कृष्णा नगर भरतपुर में आवंटित हुआ। उक्त आवास का कब्जा दिनांक 09.03.1985 को प्राप्त कर लिया गया।
श्री मदन लाल शर्मा पुत्र स्व. श्री पूरनदास शर्मा ने प्रार्थना पत्र आवश्यक प्रपत्र एवं स्व0 श्री पूरनदास शर्मा की मृत्यु का प्रमाण-पत्र प्रस्तुत कर निवेदन किया है कि उनके पिताजी का स्वर्गवास दिनांक 08.09.2003 को हो जाने के कारण, उपरोक्त आवंटित आवास संख्या 2-द-05 आवासीय योजना कृष्णा नगर भरतपुर का हस्तांतरण उनके नाम किया जाये।
अत: जरिये इस विज्ञप्ति यह आगाह किया जाता है कि उक्त आवास संख्या 2-द-05 आवासीय योजना कृष्णा नगर भरतपुर के संबंध में पिता, पुत्र, पुत्रियाँ, भाई व अन्य किसी रिश्तेदार को किसी प्रकार का किसी भी व्यक्ति विशेष या हितकारी को एवं आम व्यक्ति को उजर एतराज हो तो वह इस विज्ञप्ति के प्रकाशित होने के 10 दिवस में कार्यालय आवासीय अभियन्ता, राजस्थान आवासन मण्डल, खण्ड - भरतपुर में अपना एतराज लिखित में प्रस्तुत करें अन्यथा, उक्त आवास का मृत्यु पश्चात नाम हस्तान्तरण श्री मदन लाल शर्मा पुत्र स्व. श्री पूरनदास शर्मा आवासीय योजना कृष्णा नगर भरतपुर के पक्ष में करने कार्यवाही की जावेगी।
आवासीय अभियन्ता राजस्थान आवासन मण्डल, खण्ड - भरतपुर

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत्त-प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमांक-3722 दिनांक-02/09/24

जाहिर आम-सूचना राजस्थान आवासन मण्डल की स्ववित्त पोषित योजना वर्ष-2021, में फ्लैट संख्या 8/SA/721 (7-F) (स्टूडियो अपार्टमेन्ट), सेक्टर-08, प्रताप नगर, सांगानेर जयपुर का आवंटन श्रीमती शशीकान्त उपाध्याय पुत्र स्व. श्री दामोदर दास उपाध्याय को किया गया। श्रीमती शशीकान्त उपाध्याय की मृत्यु दिनांक 18.12.2023 को हो जाने के कारण इनकी पत्नी श्रीमती सुनीता उपाध्याय पत्नी स्व. श्रीमती शशीकान्त उपाध्याय द्वारा उक्त फ्लैट को अपने नाम हस्तान्तरण करने हेतु आवेदन किया गया है। अतः उक्त फ्लैट के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति / पक्षकार को कोई आपत्ती हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय मे 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नही है, श्रीमती सुनीता उपाध्याय पत्नी स्व. श्रीमती शशीकान्त उपाध्याय का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त-प्रथम, राज.आवा.मण्डल, जयपुर

शिक्षकों की आवश्यकता:

केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा संस्कृत शिक्षण की केन्द्रीय योजना के अन्तर्गत

"गोपीनाथ बाल भारती विद्यालय समिति"
चीथवाड़ी, तहसील- चौमूं, जिला- जयपुर, 303805 में।

रिक्त पदों की संख्या: 01 विषय: (संस्कृत- 01)

शैक्षिक योग्यता: राज्य सरकार/ यू.जी.सी. द्वारा निर्धारित परंपरागत उपाधि धारक एवं प्रशिक्षित अभ्यर्थी को वरीयता

मानदेय: 20,000/- प्रतिमाह

नोट: अभ्यर्थी अपने जीवनवृत के साथ साधे कागज पर आवेदन कर सकते हैं। आवेदन के साथ समस्त शैक्षणिक प्रमाण पत्रों की छायाप्रति एवं पहचान पत्र पंजीकृत डाक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर निम्न लिखित पते पर विद्यालय कार्य दिवसों में दिनांक 10.02.2025 सांय 5:00 बजे तक प्रेषित/ प्रस्तुत कर सकते हैं। विलम्ब से प्राप्त आवेदन पत्रों पर विचार नहीं किया जावेगा। साक्षात्कार की सूचना विद्यालय द्वारा अभ्यर्थी को पृथक से दी जावेगी।
प्रबंधक: "गोपीनाथ बाल भारती विद्यालय समिति" चीथवाड़ी, तहसील- चौमूं, जिला- जयपुर, 303805
मोबाईल: 9887519151

राजस्थान राज्य सहकारी आवासन संघ लि.जयपुर
5वीं व 6वीं मंजिल नेहरू सहकार भवन, 22 गोदाम सर्किल, जयपुर
Phone:0141-2741805, E-mail: rschfjaipur@yahoo.com
क्रमांक-1215/25 दिनांक-17/01/2025

आम सूचना संघ की आवासीय योजना केसरीचन्द चौधरी नगर, अजमेर रोड, जयपुर के फ्लैट संख्या-5/144 की श्री आशीष शर्मा पुत्र श्री नवल किशोर शर्मा के नाम दिनांक 07.06.2019 हस्तांतरण किया गया था। उक्त फ्लैट श्रीमती जसोदा देवी पत्नि श्री देवीसिंह द्वारा मय रजिस्टर्ड विक्रय पत्र श्री अशीष शर्मा से दिनांक 07.03.2024 को क्रय कर आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत कर अपने नाम ट्रांसफर कराने हेतु निवेदन किया गया है। जिस किसी को उक्त फ्लैट पर आपतित हो तो संघ कार्यालय में 15 दिवस में प्रमाण पत्र सहित प्रस्तुत करें, अन्यथा उक्त फ्लैट संख्या-5/144, केसरीचन्द चौधरी नगर, अजमेर रोड, जयपुर श्रीमती जसोदा देवी पत्नि श्री देवीसिंह के नाम हस्तांतरण कर दिया जावेगा।
(ज्योति गुप्ता) प्रबंध निदेशक

कार्यालय कृषि उपज मंडी समिति (फल एवं सब्जी) जयपुर
महात्मा ज्योतिबा फूले मुख्य मण्डी प्रांगण
ई-मेल kums.jaipurfv@rajasthan.gov.in
क्रमांक:- 2852 सार्वजनिक सूचना दि. 16.01.2025

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि कृषि उपज मण्डी समिति (फल सब्जी) जयपुर के गौण मण्डी यार्ड जनता मार्केट में फर्म मैसर्स रामनारायण गजानन्द को आवंटित दुकान संख्या-12 के मालिक श्री कमल किशोर सैनी पुत्र स्व. श्री रामनारायण का दिनांक 24.11.202[illegible] को स्वर्गवास उपरान्त उनके वारिस श्रीमती कौशल्या पत्नी स्व. श्री कमल किशोर सैनी द्वारा आवंटित दुकान में वारिस के रूप में नाम जोड़ने हेतु आवेदन पत्र प्रस्तुत किया है। अतः स्व. श्री कमल किशोर सैनी पुत्र स्व. श्री रामनारायण मालिक मैसर्स रामनारायण गजानन्द आवंटित दुकान संख्या- 12 गौण मण्डी यार्ड जनता मार्केट के स्वर्गवास उपरान्त श्रीमती कौशल्या पत्नी स्व. श्री कमल किशोर सैनी द्वारा प्रस्तुत प्रार्थना पत्र के आधार पर आवेदन कर्ता का नाम दुकान संख्या- 12 गौण मण्डी यार्ड जनता मार्केट एवं उससे सम्बन्धित रेकार्ड में मालिक के रूप में दर्ज करने पर किसी को कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय मे 7 दिवस में प्रस्तुत करे। अवधि समाप्त होने के उपरान्त प्राप्त आपत्ति पर विचार नही किया जावेगा।
सचिव
कृ.उ.म.स. (फ.से.) जयपुर

राजस्थान आवासन मण्डल वृत- प्रथम, प्रताप नगर जयपुर
क्रमांक: 6037 दिनांक 10.01.2025

जाहिर आम सूचना

राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना में आवास संख्या 172/156 (EWS), (एरिया 36.000 वर्गमीटर) प्रताप नगर, सांगानेर का आवंटन श्री यशपाल शर्मा पुत्र श्री विशन दास शर्मा को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 1260 दिनांक 31.05.2000 को जारी किया गया। श्री यशपाल शर्मा के पक्ष में उक्त आवास के पंजीयन प्रपत्र दिनांक 26.03.2011 को उप पंजीयक द्वितीय, जयपुर के यहाँ पंजीकृत करवाये गये।श्री यशपाल शर्मा द्वारा उक्त आवास को दिनांक 20.04.2011 के द्वारा श्रीमती हर्षा एलानी पत्नी श्री राजेश एलानी को विक्रय कर उप पंजीयक द्वितीय, जयपुर के यहां विक्रय पत्र का पंजीकृत करवाया गया। श्रीमती हर्षा एलानी द्वारा उक्त आवास को दिनांक 23.01.2013 के द्वारा श्रीमती सुनीता गुप्ता पत्नी श्री बलीराम गुप्ता को विक्रय कर उप पंजीयक जयपुर-अष्टम के यहां विक्रय पत्र का पंजीकृत करवाया गया। अत: उक्त आवास के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति / पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकॉर्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं है श्रीमती सुनीता गुप्ता पत्नी श्री बलीराम गुप्ता का नाम मण्डल रिकॉर्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
संपदा प्रबंधक,वृत प्रथम, राज. आ. मण्डल, जयपुर

नाम परिवर्तन

मैं राजेन्द्र कुमार जाट अपनी पुत्री कृष्णा चौधरी के विद्यालय में मेरा नाम राजेश चौधरी है जो कि गलत है। जिसे बदलकर राजेन्द्र कुमार जाट पुत्र बंसी लाल किया जावें। निवासी नीमली की ढाणी तहसील दूदू जयपुर

I Ashish Tank and My wife Neelam Tank have change our son name Kandarp to kandarp Tank for all future purpose - 9928369918

I have Changed My Son Name from Kuldeep Singh Shekhawat S/o Gajendra Singh Shekhawat Mother Nama Pooja Kanwar to Kavyansh Singh Shekhawat (काव्यांश सिंह शेखावत) Date of Birth 16.01.2022 For All Purpose. Address: 97, Ashok Vihar Vister, Gokulpura, Jhotwara, Jaipur. Pincode 302012

कार्यालय सहायक आयुक्त (प्रथम)
देवस्थान विभाग, जयपुर
राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 18(2) के अधीन नोटिस
समस्त सम्बन्धित व्यक्तियों को
(नाम, वर्णन तथा निवास स्थान)
मुकदमा नम्बर 421/2024

चूंकि श्री सुरेन्द कुमार सुराणा, वैभव कुमार सुराणा एवं श्रीमती त्रिशला रामपुरिया निवासी प्लॉट नं. 117, जन पथ, लालकोठी, जयपुर 302015 ने राजस्थान सार्वजनिक प्रन्यास अधिनियम 1959 की धारा 17(1) के अन्तर्गत कम्प्यूकोम फाउण्डेशन कार्यालय पता:- एसपी-5, ईपीआईपी, रीको इण्डस्ट्रीयल एरिया, सीतापुरा, जयपुर 302022 ने राजस्थान के सम्बन्ध में जांच किये जाने के लिए आवेदन-पत्र दिया है। अतएव धारा 18 की उपधारा (2) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के प्रयोग में उपर्युक्त प्रन्यास जिसकी जांच की जा रही है, में हित रखने वाले समस्त व्यक्तियों के नाम, व्यापक जानकारी के लिए, यह नोटिस प्रकाशित किया जाता है कि वे इस नोटिस के जारी होने की तारीख से साठ दिन के भीतर उक्त प्रन्यास के सम्बन्ध में आपत्तियां, यदि कोई हो प्रस्तुत करे। और यह सूचित किया जाता है कि यदि उपरोक्त निर्दिष्ट अवधि के भीतर कोई आपत्तियां प्रस्तुत नही की गई तो उक्त आवेदन-पत्र निर्धारित रीति से निर्णित किया जावेगा तथा जांच ग्रसित मामले में निष्कर्ष अभिलिखित किया जावेगा। आज दिनांक 27.12.2024 को मेरे हस्ताक्षर तथा कार्यालय मोहर के अधीन जारी किया गया। आइदा तारीख पेशी 04.03.2025
रतनलाल योगी
सहायक आयुक्त (प्रथम), देवस्थान विभाग, जयपुर

खोया पाया

मेरे जे.डी.ए. की बालमुकुन्दपुरा योजना अजमेर रोड जयपुर का प्लाट नं. बी-21, के मूल आवंटन पत्र, जो कि रामेश्वरलाल जाट के नाम से थे कहीं गुम हो गया है उक्त संपत्ति के लिए बैंक में ऋण हेतु आवेदन किया है। अतः जिस किसी को एतराज हो तो 7 दिवस में निम्न पते पर सम्पर्क करें। श्री महेश सौलंकी पुत्र श्री लक्ष्मी नारायण सौलंकी मो.नं.6376162008

मेरे भूखण्ड संख्या- L/67 जे.डी.ए. की योजना EDEN GARDEN-1 योजना जयपुर का जे.डी.ए. से जारी मूल आवंटन एवं रसीद रास्ते मै कही गुम हो गया है मिलने पर सूचित करे। अशोक कुमार पारीक मो. 9928265899

आवास संख्या 23/115, मानसरोवर, जयपुर का मूल आवंटन पत्र व कब्जा पत्र व कार्यालय आदेश नं. 1317 गिर/ गुम हो गया मिलने पर सूचित करें। विरेन्द्र कुमार मो. 9829024854

नम्बर मिलाइए
9587884433

सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
(साधारण प्रारूप)
व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक 4
न्यायालय मोटर दुर्घटना वाद न्याधिकरण क्र.सं.1 जयपुर महा.
राहुल हटवाल विरूद्ध यशवीर सिंह वगै.
वाद/प्रार्थना पत्र क्लेम
प्रार्थना-पत्र संख्या 362/2017 सन्

नाम यशवीर सिंह पुत्र विशेषवर सिंह जाति.... पता प्लाट नं.128 ग्रीन पार्क विस्तार-ई नांगल जैसा बोहरा पी.एस.करधनी जयपुर (राज.)
उक्त प्रार्थी ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है कि नकल प्रति संलग्न है।
अतः आपको चेतावनी दी जाती है कि आप उस आवेदन के विरूद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दि.17 माह 02 सन् 2025 को 10.30 ए.एम. पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे तो उक्त आदेश की सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा।
यह आज ता.13 माह 01 सन् 2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दी गई (मोहर अदालत)
रीडर
मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण क्रम सं.-1 जयपुर महानगर द्वितीय, जयपुर (राज)

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
(साधारण प्रारूप)
व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक 4
न्यायालय मोटर दुर्घटना वाद न्याधिकरण क्र.सं.1 जयपुर महा.
राहुल हटवाल विरूद्ध यशवीर सिंह वगै.
वाद/प्रार्थना पत्र क्लेम
प्रार्थना-पत्र संख्या 362/2017 सन्

नाम बलवीर सिंह पुत्र विरद सिंह जाति.... पता प्लाट नं.98 ग्रीन पार्क विस्तार-ई नांगल जैसा बोहरा पी.एस.करधनी जयपुर (राज.)
उक्त प्रार्थी ने इस न्यायालय में यह आवेदन किया है कि नकल प्रति संलग्न है।
अतः आपको चेतावनी दी जाती है कि आप उस आवेदन के विरूद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दि.17 माह 02 सन् 2025 को 10.30 ए.एम. पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे तो उक्त आदेश की सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा।
यह आज ता.13 माह 01 सन् 2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दी गई (मोहर अदालत)
रीडर
मोटर दुर्घटना दावा अधिकरण क्रम सं.-1 जयपुर महानगर द्वितीय, जयपुर (राज)

उद्‌घोषणा (इश्तिहार) न्यायालय (राज.)
व्यवहार मिश्रित (मुत्तफरिक) वाद सं. 17/2024
न्यायालय जिला एवं सत्र न्यायाधीश जयपुर महानगर प्रथम जयपुर (सांगानेर)
विषय- उत्तराधिकार प्रमाण-पत्र प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन प्राप्त करने हेतु प्रार्थना-पत्र।
प्रार्थी नाम अमित श्रीवास्तव पुत्र स्व. श्री गिर्राज श्रीवास्तव जाति श्रीवास्तव
विवाद स्थान
मृतक श्री गिर्राज बहादुर श्रीवास्तव/श्रीमती प्रेमलता श्रीवास्तव की सम्पत्ति के विषय में।
पेशी दिनांक- 31.01.2025
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त प्रार्थी/प्रार्थीगण ने इस न्यायालय में इस आशय का प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया है कि मृतक, नाम श्री गिर्राज बहादुर श्रीवास्तव पुत्र सुन्दर लाल श्रीवास्तव श्रीमती प्रेमलता श्रीवास्तव पत्नी गिर्राज बहादुर श्रीवास्तव जाति.... निवासी जयपुर का उत्तराधिकारी स्वीकार कर उसके पक्ष में उत्तराधिकार प्रमाण पत्र, प्रोबेट, लेटर ऑफ एडमिनिस्ट्रेशन, प्रदान किया जावें।
अतः उक्त प्रार्थना-पत्र की स्वीकृति में यदि किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो वह इस न्यायालय में दिनांक 31 माह 01 सन् 2025 को न्यायालय में उपस्थित होकर अपनी आपत्ति प्रमाण सहित प्रस्तुत करें। उक्त दिवस के पश्चात् कोई आपत्ति मान्य नहीं होगी।
आज दिनांक 09 माह 01 सन् 2025 को मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय मुद्रांकन से जारी किया गया।
आज्ञा से-शरिस्तेदार
अपर जिला एवं सैंशन न्यायाधीश संख्या 10 जयपुर महानगर-प्रथम न्यायालय सांगानेर (मोहर अदालत)

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
(साधारण प्रारूप)
व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक 4
न्यायालय ADJ 10 Jaipur Metro स्थान ।
प्रकाश चंद्र चौहान विरूद्ध मीना कुमारी सैन व अन्य
वाद/प्रार्थना पत्र (149/24)
प्रार्थना पत्र संख्या... सन्

नाम श्रीमती मीना कुमारी सैन पुत्री चांदमल जाति सैन पता सुराना मोहल्ला, भिनाय, अजमेर, भिनाय राज.
उक्त वादी ने इस न्यायालय में यह निवेदन किया है कि नकल संलग्न नहीं है।
अतः आपको चेतावनी दी जाती है कि आप उस आवेदन के विरूद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दिनांक 7 माह 3 सन् 2025 को 10 AM पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे तो उक्त आदेश की सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा।
यह आज दिनांक 18 माह 1 सन् 25 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दी गई।
आज्ञा से-शरिस्तेदार
(मोहर अदालत) अपर जिला एवं सैंशन न्यायाधीश संख्या 10 जयपुर महानगर

संख्यांक 2
विवाधको के स्थरीकरण के लिये सम्मन
(आदेश 5 नियम 1 और 5)
न्यायालय ADJ-10, Jaipur Metro स्थान।
प्रकाश चंद्र चौहान विरूद्ध मीना कुमारी सैन व अन्य
दावा बाबत घोषणा व स्थाई निषेधाज्ञा
वाद संख्या 135/24 सन्

नाम श्रीमती मीना कुमारी सैन पुत्री चांदमल जाति सैन स्थान सुराना मोहल्ला, भिनाय, अजमेर, भिनाय, राजस्थान वादी ने आपके विरूद्ध.... के लिए वाद संस्थित किया है। आपको इस न्यायालय में दिनांक 7 माह 3 सन् 25 को दिन में 10 ए.एम. बजे दावे का उत्तर देने के लिये उपसंजात (हाजिर) होने के लिए वचन दिया जाता है। आप न्यायालय में स्वंय या किसी ऐसी प्लीडर द्वारा उपसंजात हो सकते है, जिसे सम्यक अनुदेश दिए गये हो और जो इस वाद से सम्बन्धित सभी सारवान प्रश्नों का उत्तर दे सके या जिसके साथ ऐसा कोई व्यक्ति हो जो ऐसे सब प्रश्नो का उत्तर दे सकें। आपको यह निर्देश भी दिया जाता है कि आप उस दिन अपनी प्रतिरक्षा का लिखित साक्ष्य दाखिल करे और उस दिन ऐसे सब दस्तावेज जो आपके कब्जे में या शक्ति में है पेश करे जिन पर आपकी प्रतिरक्षा या दाखिल / मुजराई का दावा या प्रतिदावा आधारित है। और यदि आप किसी अन्य दस्तावेज पर, चाहे वह आपके कब्जे व शक्ति में हो अपना प्रतिरक्षा या मुजराई के दावे या प्रतिदावे के समर्थन में साक्ष्य के रूप में निर्भर करते है तो आप ऐसी दस्तावेजों को उल्लेखित समय के बाद उपाबद्ध की जाने वाली सूची में प्रविष्ट करें। आपको सूचित किया जाता है कि यदि आप उपर बताई गई तारीख को इस न्यायालय में उपसंजात नही होगें तो वाद की सुनवाई और उसका निपटारा आपकी अनुपस्थिति में किया जायेगा।
यह वाद दिनांक 18 माह 1 सन् 2025 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दिया गया है।
आज्ञा से-शरिस्तेदार
(मोहर अदालत) अपर जिला एवं सैशन न्यायाधीश संख्या 10 जयपुर महानगर

हैतुक दर्शित करने के लिए सूचना
(साधारण प्रारूप)
व्यवहार प्रक्रिया संहिता पहली अनुसूची संख्यांक 4
न्यायालय ADJ 10 Jaipur Metro स्थान ।
प्रकाश चंद्र चौहान विरूद्ध मीना कुमारी सैन व अन्य
वाद/प्रार्थना पत्र (575/2024)
प्रार्थना पत्र संख्या 12 H.M. Act. सन्

नाम मीना कुमारी सैन पुत्री चांदमल जाति सैन पता सुराना मोहल्ला, भिनाय, अजमेर, भिनाय राज.
उक्त वादी ने इस न्यायालय में यह निवेदन किया है कि नकल संलग्न नहीं है।
अतः आपको चेतावनी दी जाती है कि आप उस आवेदन के विरूद्ध हैतुक दर्शित करने के लिए दिनांक 7 माह 3 सन् 2025 को 10 AM पूर्वान्ह में स्वयं या अपने प्लीडर द्वारा जिसे सम्यक रूप से अनुदेश किया गया हो, उपसंजात हो। यदि आप ऐसा करने में असफल रहेंगे तो उक्त आदेश की सुनवाई और उसका निपटारा एक पक्षीय रूप से किया जाएगा।
यह आज दिनांक 18 माह 1 सन् 25 को मेरे हस्ताक्षर से और न्यायालय की मुद्रा लगाकर दी गई।
आज्ञा से-शरिस्तेदार
(मोहर अदालत) अपर जिला एवं सैंशन न्यायाधीश संख्या 10 जयपुर महानगर

कार्यालय नगरपालिका टोडाभीम जिला-करौली (राज.)

क्रमांक/नपाटो/2024-25/2333 दिनांक: 20.01.2025

आपत्ति आमंत्रण-पत्र

एतद्द्वारा सर्व साधारण को सूचना दी जाती है कि निम्नांकित व्यक्तियों द्वारा कृषि भूमि नियमन के अन्तर्गत टोडाभीम में आवासीय/व्यवसायिक पट्टा हेतु आवेदन किया है उक्त के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो अन्दर अवधि 07 दिवस में पालिका में उपस्थित होकर आपत्ति दर्ज करा सकता है अन्दर अवधि समाप्त होने के पश्चात् कोई आपत्ति स्वीकार नहीं की जावेगी।

क्र.सं.	नाम	पिता/पति का नाम	स्थान/खसरा नं.	क्षेत्रफल (वर्गगज में)
1.	भगवान सहाय मीना	हीराचन्द मीना	गोपालपुर रोड़/5892	22.50 व्यवसायिक
2.	कैलाशा चन्द गुप्ता	लच्छी चन्द गुप्ता	नई मण्डी रोड़/282	211.11 आवासीय
3.	अंजना शर्मा	दिनेश चन्द शर्मा	नई मण्डी रोड़/282	211.11 आवासीय
4.	सुषमा कुमारी मीना	शैलेश जौरवाल	गोपालपुरा रोड़/2241	750.00 वर्गमीटर आवासीय
5.	राजवंती मीन	विशम्भर दयाल मीना	गोपालपुरा रोड़/2241	2578.00 वर्गमीटर आवासीय
6.	रूपसिंह मीना	गबली राम मीना	न्यू सैनी कॉलोनी/1503	162.91 आवासीय 113.33 व्यवसायिक
7.	राजकुमार मीना	मुकेश मीना	नई मण्डी रोड़/282/1	266.66 आवासीय
8.	भीम सिंह सैनी	किशन लाल सैनी	नाहर खोहर्रा रोड़/2110, 2116, 2117	335.11 आवासीय

अधिशाषी अधिकारी
नगरपालिका टोडाभीम

कार्यालय नगर विकास न्यास भरतपुर

फोन न0 05644-230688 वेबसाईट urban.rajasthan.gov.in/uitbharatpur.com

क्रमांक:-नीलामी / 2025 / 385 दिनांक 16.01.2025

ई-ऑक्शन के माध्यम से भूखण्ड खरीदने का सुनहरा अवसर

प्राधिकरण भरतपुर द्वारा विभिन्न योजनाओं में आवासीय एवं व्यावसायिक भूखण्ड ई-ऑक्शन द्वारा नीलाम किये जा रहे है, जिसका विवरण निम्नानुसार है :-

क्र. स	योजना का नाम	भूखण्ड संख्या	साईज फुट व मीटर में	क्षेत्रफल व.ग./ व.मी.	आरक्षित दर प्रति व. ग./व.मी. (लीज हेतु)	ई.एम.डी राशि	ई-ऑक्शन प्रारम करने की दर	कुल राशि
1	2	3	4	5	6	7	8	8
1	एस.पी.एम. नगर (आवासीय)	61 Corner	50'"X69'	383.33 व.ग.	11000.00 /- व.ग	460000.00	60000.00 /- व.ग	22999800
		155 Corner	98+69/2x51+122/2	659.00 व.ग.	11000.00 /- व.ग	725000.00	55000.00 /- व.ग	21211850
		833	18"x35"	70.00 व.ग	11000.00 /- व.ग	88000.00	62,600.00 /- व.ग	4382000
2	ट्रान्सपोर्ट नगर व्यावयायिक	30 Corner	41"x80"	364.44 व.ग	17000.00 /- व.ग	291500.00	40,000.00 /- व.ग	
		6	25"x80"	222.22 व.ग	17000.00 /- व.ग	178000.00	40,000.00 /- व.ग	8888800
		418, 434	20"x60"	133.33 व.ग	17000.00 /- व.ग	93500.00	35,000 /- प्र.व.ग.	4666550
		323	14.6"x20"	32.44 व.ग	17000.00 /- व.ग	55000.00	85,000 /- प्र.व.ग.	
		414 corner	12.3"x20"	27.33 व.ग	17000.00 /- व.ग	46500.00	85,000 /- प्र.व.ग.	1888700
		472	10"x20"	22.22 व.ग	17000.00 /- व.ग	33000.00	75,000 /- प्र.व.ग.	1666500
3	सैक्टर नं0 -03 (आवासीय)	217	39'x60'	260.00 व.ग.	11000.00 /- व.ग	234000.00	45000.00 /- व.ग	9000000
		27	39'X89'	385.66 व.ग.	11000.00 /- व.ग	525000.00	68000.00 /- व.ग	26224880
4	सैक्टर नं0 -03 (व्यावसायिक)	52, 63, 64	3x6	18.00 व.मी	22000.00 /- व.मी	63000.00	1,75,000.00 /- व.मी	3150000
5	स्कीम नं. 14 (व्यावसायिक)	Type A-47, 55	10x30	300.00 व.मी	14000.00 /- व.मी	150000.00	25000.00 /- व.मी	7500000
		Type A-1	(16.43+28.60)/2x (30.0+32.27)2	676.00 व.मी	14000.00 /- व.मी	271000.00	20000.00 /- व.मी	13520000
		Type A- 128	10x20	200.00 व.मी	14000.00 /- व.मी	100000.00	25,000.00 /- व.मी	5000000
		Type B-27, 57	6x20	120.00 व.मी	14000.00 /- व.मी	72000.00	30,000.00 /- व.मी	3600000
		Type C- 273, 301, 309	3x3	9.00 व.मी	14000.00 /- व.मी	12000.00	65,000.00 /- व.मी	585000
		Type D- 2	30x30	900.00 व.मी	14000.00 /- व.मी	630000.00	35,000.00 /- व.मी	31500000
6	एस.पी.जेड. (आवासीय)	H-110	25x15	375.00 व.मी	10500.00 /- व.मी	270000.00	36,000.00 /- व.मी	13500000
		B-144	7.6x9	68.40 व.मी	10500.00 /- व.मी	54720.00	40,000.00 /- व.मी	2736000
		C-53	10x12	120.00 व.मी	10500.00 /- व.मी	96000.00	40,000.00 /- व.मी	4800000
								186820080

1 क.स. 1 से 7 के भूखण्डों हेतु रजिस्ट्रेशन, अमानत राशि, पहचान पत्र अपलोड करने की कार्यवाही दिनांक 23.01.2025 को प्रातः 10 बजे से 02.02.2025 सांय 6 बजे तक एवं ऑनलाईन नीलामी दिनांक 03.02..2025 प्रात 11 बजे से 05.02.2025 प्रात 11 बजे तक की जावेगी।
2 आमजन को सूचित किया जाता है कि अगर नीलामी में रखे गये भूखण्डों पर किसी न्यायालय द्वारा स्थगन आदेश जारी किया गया हो तो नीलामी से पूर्व मय साक्ष्य के न्यास कार्यालय में प्रस्तुत करें।
3 ई-ऑक्शन हेतु वेबसाईट :- urban.rajasthan.gov.in/uitbharatpur on E services, property auction, click on link here for E-auction details पर बोली लगा सकते है।

राज.संवाद/सी/24/10572 आयुक्त जिला कलक्टर एवं अध्यक्ष

संक्षिप्त

संविधान गौरव अभियान कार्यक्रम का आयोजन

कोटपूतली। भाजपा राजस्थान द्वारा प्रदेश भर में चलाये जा रहे संविधान गौरव अभियान के तहत कस्बे के डाबला रोड़ स्थित पाना देवी मोरीजावाला राजकीय कन्या महाविधालय में सोमवार को संविधान गौरव अभियान कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ भारत माता, बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर के चित्र पर पुष्प अर्पित कर किया गया। अभियान के कोटपूतली नगर संयोजक पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष कमल सैनी ने कहा कि भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर को भारतीय संविधान के निर्माता के रूप में जाना जाता है। उन्होंने बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर की जीवनी पर विस्तार से प्रकाश डाला। महाविधालय के प्राचार्य डॉ. आर. पी. गुर्जर ने कहा कि बाबा साहब अम्बेडकर एक बुद्धिमान संविधान विशेषज्ञ थे, उन्होंने लगभग 60 देशों के संविधानों का अध्ययन किया था। इस मौके पर युवा मोर्चा जिला संयोजक कमल कसाना, नगर अध्यक्ष अरुण सैनी, एड. दयाराम गुर्जर, प्रो. जगराम गुर्जर, प्रो. विमल यादव ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इससे पूर्व अतिथियों का स्वागत भी किया गया। इस दौरान महाविधालय स्टॉफ एवं छात्रायें मौजूद रही।

जागरूकता शिविर

टोंक। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, टोंक द्वारा डॉ. अम्बेडकर शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, टोंक तथा न्यू अराधना पब्लिक स्कूल, टोंक में पोक्सो एक्ट, 2013 के प्रावधानों के संबंध में जागरूक करने के लिए विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में उपस्थित जनों को संबोधित करते हुए पैनल अधिवक्ता राजेश कुमार सिसोदिया ने बताया कि कार्यस्थल पर यदि किसी भी महिला का मानसिक, शारीरिक एवं यौन शोषण होतो है या उसे किसी भी प्रकार से असहज महसूस होता है तो वह संबंधित मामले की आंतरिक परिवाद समिति के समक्ष शिकायत दर्ज करा सकती है , यदि महिला की वहां सुनवाई नहीं होती है, तो वह संबंधित तालुका विधिक सेवा समिति या जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के समक्ष अपनी शिकायत दर्ज करा सकती है इस अवसर पर अधिकार मित्र चंद्रकला शर्मा भी उपस्थित रही।

पोस्टर बैनर का विमोचन किया

मनोहरपुर । स्थान बालाजी धाम, नवलपुरा (मनोहरपुर) शाहपुरा, जयपुर में रविवार 6 से 14 अप्रैल तक होने वाले 21 कुंडीय नौ दिवसीय महायज्ञ होने वाला है कमलेश कुमार यादव ने बताया कि इसके लिए रविवार को श्री हरिओम दास महाराज खोरी के श्री सीताराम महायज्ञ में 21 कुंडीय महायज्ञ के मीटिंग व पोस्टर बैनर का विमोचन किया गया । साथ ही महायज्ञ के लिए शाहपुरा क्षेत्र में पोस्टर का विमोचन किया गया, इस अवसर पर श्री हरिओम दास महाराज खोरी,विधायक मनीष यादव, श्याम बिछवालिया, बनवारी ठुकराण, कैलाश यादव, सरदारमल बाडिगर, राकेश भंगार, बद्री,कालु डागर, श्री श्याम मित्र मंडल नवलपुरा, और भूतनाथ गौशाला वो नवलपुरा ग्रामवासी उपस्थित रहे !

रक्तदान किया

कोटपूतली। रक्तमणि अभियान के तहत सोमवार को यहाँ के आशीर्वाद ब्लड बैंक में ओमप्रकाश पुत्र तेजराम सैनी निवासी वार्ड नं. 02 कोटपूतली ने स्वैच्छिक रक्तदान किया। अभियान संयोजक मुकेश गोयल ने बताया कि रक्तमणि अभियान में प्रतिदिन एक या आवश्यकता पडने पर एक से अधिक युवक युवतियों द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान किया जाता है तथा रक्तदाता के प्रति सम्मान प्रकट करने हेतु उसे रक्तमणि का नाम प्रदान किया जाता है। रक्तमणि की इस यात्रा में हजारों यूनिट रक्त एकत्रित हुआ है। जिससे पीडित, असहाय एवं जरूरतमंद मरीजों को मदद मिल रही है।

ट्रोली चोरी के दो आरोपी गिरफ्तार

टोंक। टोंडारायसिंह थाना क्षैत्र के कस्बे से गत 12 जनवरी को एक सर्विस सेन्टर के बाहर खडी एक ट्रोली चोरी हो जाने की घटना थाने में दर्ज कराई गई थी। जिस पर वृताधिकारी मालपुरा आशीष प्रजापत व थानाधिकारी टोडारायसिंह हरिराम द्वारा गठित टीम ने मुखबिर की सूचना पर कार्यवाही करते हुए आरोपी बसन्ती लाल पुत्र सीताराम सैनी उम्र 24 साल निवासी गेदिया थाना मेहन्दवास तथा हनुमान पुत्र रामप्रसाद माली उम्र 24 साल निवासी गोल डुंगरी वार्ड न. 60 सरवराबाद थाना सदर टोंक को गिरफ्तार किया।

कलेक्टर ने गणतंत्र दिवस को लेकर की जा रही तैयारीयों की समीक्षा की

खैरथल। जिला कलेक्टर किशोर कुमार की अध्यक्षता में जिला कलेक्ट्रेट सभागार में साप्ताहिक समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में गणतंत्र दिवस की तैयारी को लेकर अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश देते हुए नशा मुक्ति केंद्र के निरीक्षण तथा अवैध नशा मुक्ति केंद्र पर कार्यवाही करने व नगर परिषद आयुक्त को शहर में हो रही घटनाओं के चलते आवारा कुत्तों का वैक्सीनेशन करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

बैठक के दौरान अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अतुल साहू, उपखंड अधिकारी किशनगढ़ बास मनीष कुमार जाटव, डिप्टी एसपी किशनगढ़ बास राजेंद्र, कोषाधिकारी सुरेश कुमार बंसल, डिप्टी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी पूरणमल मीणा, अधिशासी अभियंता सार्वजनिक निर्माण विभाग, अधीक्षण अभियंता पीएचईडी धर्मवीर यादव, नगर परिषद, वाटरशेड, लेबर, सहित अन्य विभाग के अधिकारी मौजूद रहे।

खैरथल जिला कलेक्ट्रेट पर अधिकारियों की बैठक लेते जिला कलेक्टर किशोर कुमार।

- आवारा कुत्तों को वैक्सीनेशन कराने के लिए दिए निर्देश, जिला स्तरीय जनसुनवाई के प्रकरणों का समयबद्धता से निस्तारण करने के निर्देश दिए

बैठक में जिला कलेक्टर ने गणतंत्र दिवस के आयोजन स्थल एवं आयोजन के विभिन्न विभागों द्वारा की जाने वाली व्यवस्थाओं के संबंध में की गई तैयारी कि विस्तार से समीक्षा की। जिसमें स्थल की साफ, सफाई, ध्वजारोहण, मंच व्यवस्था, बैठक व्यवस्था, पेयजल व्यवस्था, स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों, माननीय राज्यपाल जी के भाषण की प्रति, प्रशस्ति पत्र, प्रमाण पत्र, बेरिकेडिंग व्यवस्था, प्राथमिक उपचार, परेड, झांकियां, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि की विभिन्न विभागों के माध्यम से की जाने वाली व्यवस्थाओं के संबंध में विस्तार से चर्चा की गई।

बैठक के दौरान उन्होंने बजट घोषणाओं कि जमीन आवंटन सहित अन्य कार्यों को आगामी माह से पूर्व पूर्ण करने के निर्देश दिए साथ ही बजट घोषणा के संबंध में की गई कार्यवाही को फॉर्मेट में भरकर कार्यालय में भेजने हेतु निर्देशित भी किया। उन्होंने जिला स्तरीय जनसुनवाई के प्रकरणों का समयबद्धता से निस्तारण करने के निर्देश दिए।

सीएलजी सदस्यों के साथ की बैठक

फुलेरा । स्थानीय थाना परिसर सोमवार को दोपहर 1 बजे सीएलजी सदस्यों की बैठक का आयोजन नवनियुक्त थानाधिकारी श्रवण कुमार नील की अध्यक्षता में किया गया। बैठक के दौरान विभिन्न मुद्दों व कानून व्यवस्था के सम्बन्ध में विस्तार से चर्चा की गई। इसी क्रम में थानाधिकारी ने सदस्यों से पुलिस मुख्यालय द्वारा चलाए जा रहे साईबर अपराधों की रोकथाम व सड़क सुरक्षा के अभियान के प्रति जागरूकता के लिए अपील की गई।

वहीं क्षेत्र में गश्त बढ़ाने एवं चोरी की घटनाओं व सूखे नशे पर अंकुश लगाने सहित कानून व्यवस्था, यातायात व्यवस्था एवं वर्तमान समय में सोशल मीडिया के बढ़ते प्रचलन से साइबर फ्रॉड की घटनाओं में हो रही वृद्धि व ठगी पर चर्चा की गई। इस दौरान थाना अधिकारी ने बताया कि जागरूकता एवं जानकारी के अभाव में कई लोग ठगी के शिकार हो रहे हैं। इससे बचने के लिए आमजन अनजाने लिंक पर क्लिक नहीं करें।

पार्षदो ने एक दर्जन से अधिक प्रस्तावो को दी अपनी सहमति

मालपुरा। सोमवार को नगरपालिका अध्यक्ष सोनिया सोनी की अध्यक्षता मे हुई पालिका बोर्ड की साधारण सभा बैठक मे सत्ता पक्ष एवं विपक्ष सहित सभी निर्दलीय पार्षदो ने एक स्वर मे शहर के सौन्दर्यकरण एवं विकास को लेकर एक दर्जन से अधिक विकास कार्यो के प्रस्ताव व बोर्ड एजेंडे मे प्रमुख रूप से रखे आधा दर्जन प्रस्ताव को दी अपनी सहमति।

पार्षद डॉ. अंकित जैन ने पालिका कार्यालय को शहर से बाहर स्थानान्तरित किये जाने के बजाय वर्तमान भवन मे ही संचालित कर नवीन भवन निर्माण मे खर्च होने वाली राशि को शहर के विकास मे लगाने की मांग रखी जिसका सभी पार्षदो ने समर्थन किया। पार्षद श्योजीराम शर्मा,युधिष्टर सिंधी, सुरेन्द्र राव, पालिका उपाध्यक्ष पवन मैन्दवास्या,नेहा विजय, रमेश पारीक, अतीक अहमद,आशा नामा, ने घाटी रोड पर भूखण्डो की निलामी से पूर्व निवास कर रहै लोगो का पक्ष सुनने तथा पानी की निकासी के लिये नाला निर्माण करवाये जाने, बम्ब तालाब व झालरा तालाब के सौन्दर्यकरण का प्रस्ताव बना राज्य सरकार से स्वीकृत करवाने, विवादित भूखण्डो को छोड शेष सरकारी जमीन से अतिक्रमण हटवा खुली बोली से निलामी करने,डेयरी चौराहे के पास सरकारी चूंगी नांका भवन को तोडने वाले लोगो के विरूद्ध पुलिस प्राथमिकी दर्ज करवानेअजमेर रोड सीआईडी ऑफिस के पास रिक्त पडी सरकारी जमीन को कब्जे मे ले निलाम करने, जयपुर रोड पाण्डुक शिला रूई पेंच के पास पडी सिवायचक भूमि को कब्जे मे ले बैचान करने, व्यास सर्किल से माणक चौक बाजार मुख्य सडक का निर्माण करवाने व वार्डो मे बंद पडी रोड लाईट लगवाने सहित सभी वार्डो मे विकास कार्यो के लिये दस-दस लाख रूपये की स्वीकृति व वन विभाग कार्यालय के पिछवाडे करोडो की भूमि पर भूखण्ड निलाम कर पालिका की आय बढाने की पुरजोर मांग उठाई।

पालिका बोर्ड की साधारण बैठक मे सभी पार्षदो ने एक स्वर मे उठाई विकास कार्य शुरू कराने की मांग।

- जिला चिकित्सालय के सामने भूखण्ड आवंटन व करोडो की सरकारी सम्पत्ति को कब्जे में ले खुली निलामी की रखी मांग

जिला अस्पताल में पर्ची काउंटर का सांसद ने किया लोकार्पण

शाहपुरा। शाहपुरा शहर के पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष एवं भामाशाह बाबूलाल चुड़ला द्वारा निर्मित उप जिला चिकित्सालय में टीन सेट सहित पर्ची काउंटर का लगभग 6 लाख रुपए की लागत से पांच काउंटरों का निर्माण करवाया गया जिसका लोकार्पण सोमवार को कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेंद्र सिंह ने फीता काट करके किया।

भाजपा जयपुर जिला देहात उत्तर मीडिया सह प्रभारी सुभाष जोशी ने बताया कि इस अवसर पर सांसद राव राजेंद्र सिंह ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि भामाशाह बाबूलाल चुड़ला द्वारा किए जा रहे जनकल्याण के सराहनीय कार्य जारी है जिसके तहत आज उप जिला चिकित्सालय में टीन सेट सहित पर्ची काउंटर का निर्माण एक ओर प्रशंसनीय उदाहरण है। उन्होंने उप जिला अस्पताल में नगरपालिका शाहपुरा एवं नगरपालिका मनोहरपुर क्षैत्र में वाई फाई नाइट विजन सीसी कैमरे लगाने की राशि की व्यवस्था कराने की घोषणा करी जिससे चोरी, अतिक्रमण, जाम से शहरवासियों को मुक्ति मिल सके। इस दौरान उन्होंने केंद्र सरकार की इंटर्नशिप योजना के तकनीकी रोजगार की योजना बताई।

इस दौरान पर कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पूर्व विधायक आलोक बेनीवाल, शाहपुरा उपखंड अधिकारी संजीव खेदर, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष एवं भामाशाह बाबूलाल चुड़ला, नगरपरिषद अध्यक्ष बंशीधर सैनी, जिला उपाध्यक्ष एवं पूर्व प्रधान मंजू सैनी, उपजिला अस्पताल प्रभारी विनोद योगी, भाजपा पूर्व जिला मंत्री एवं पूर्व नगरपालिका उपाध्यक्ष रवीश खटाणा, अल्पसंख्यक मोर्चा जिला महामंत्री निजामुद्दीन काजी आदि लोगो ने बाबूलाल चुड़ला द्वारा किए जा रहे पुनीत कार्य की सराहना की। इस अवसर पर शाहपुरा नगर मंडल अध्यक्ष एवं पार्षद मालीराम सैनी, शाहपुरा देहात मंडल अध्यक्ष मोहन लाल गुर्जर, मनोहरपुर मंडल अध्यक्ष रामचंद्र यादव, जिला उपाध्यक्ष एवं खेजरोली मंडल अध्यक्ष मामराज पुरी गोस्वामी, अमरसर मंडल अध्यक्ष इंद्रजीत शर्मा, मंडल प्रतिनिधि महेश पारीक, सहसंयोजक श्याम सुंदर राज जोशी, बीएसएनएल सलाहकार संतोष माधाणी, उपाध्यक्ष राजेश पलसानिया, डॉक्टर विनोद शर्मा बीसीएमएचओ, डॉक्टर संजय सिंह शेखावत, डॉक्टर गिरधारी लाल पलसानिया, डॉक्टर नरेश अग्रवाल, पार्षद इंद्राज पलसानिया, पार्षद पुनीत भगेरिया, राकेश कुमार कुमावत आदि सैकड़ो भाजपा कार्यकर्ता एवं शहरवासी उपस्थित रहे। मंच संचालन एससी मोर्चा जिलाध्यक्ष एडवोकेट भगवान सहाय बेनीवाल ने किया।

पांच काउंटरों का लोकार्पण राजेंद्र सिंह ने फीता काट करके किया।

लापता बच्चो को महाकुंभ प्रयागराज से दस्तयाब कर परिजनों को सौंपा

सांभरझील, (निसं)। नरायणा पुलिस ने लापता हुए चार बच्चों को 12 घंटे में ट्रेस कर महाकुंभ प्रयागराज से दस्तयाब कर उनके परिजनों को सुपुर्द किया तो खुशी के आंसू छलक पड़े, और पुलिस का शुक्रिया अदा किया। आनन्द शर्मा, उप महानिरीक्षक पुलिस सह पुलिस अधीक्षक जिला जयपुर ग्रामीण ने जानकारी देते हुए बताया कि साखुन उप तहसील मुख्यालय पर स्थित सरस्वती ज्ञान मंदिर सीनियर सेकेंडरी स्कूल मेऔ पढ़ने वाले कक्षा 9 के चार विद्यार्थी शनिवार सुबह अपने घर साखून से स्कूल जाने के लिए निकले थे, परंतु विद्यालय नहीं पहुंचे परिजनों ने स्कूल समय समाप्त होने के बाद में खोजबिन की, परंतु कोई जानकारी नहीं मिली। सब जगह तलाश करने के बाद में वह देर शाम पुलिस थाना नरैना में एक रिपोर्ट इस आशय की पेश होने पर मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल प्रभाव से सभी अधिनस्थ पुलिस अधिकारियों को व संबंधित थाना अधिकारी को विशेष तौर पर बच्चों का पता लगाकर रिपोर्ट पेश करने के लिए कहा था।

प्रकरण में त्वरित कार्यवाही करते हुए गुमशुदा बालकों को दस्तयाब करने के लिए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) रजनीश पूनियाँ (आरपीएस) व वृताधिकारी वृत सांभरलेक अनुपम मिश्रा (आरपीएस) के निकटतम सुपरविजन में तथा धर्मसिंह उ.नि थानाधिकारी थाना नरैना जिला जयपुर ग्रामीण के नेतृत्व में अलग-अलग चार टीमों का गठन किया जाकर खाटूश्याजी, जयपुर शहर, डिग्गी मालपुरा में तलाश की गई एवं टीम द्वारा तकनीकी सहायता व 50 से अधिक सीसीटीवी कैमरों को चैक किया जाकर तथा आसुचना संकलित कर हर सम्भावित स्थानो पर तलाश कर बच्चो के घरो के मोबाईल की गुगल हिस्ट्री खंगलाने पर प्रयागराज जाने के इनपुट मिले। जिस पर थानाधिकारी द्वारा प्रयागराज में पुलिस कंट्रोल रूम को इस बारे में जानकारी दी। 20 जनवरी को महाकुंभ प्रयागराज से प्रकरण में लापता चारो बच्चो को दस्तयाब किया जाकर परिवारजनों को नियामानुसार सुपुर्द किया गया। परिजनों के चहरे खिले एवं ग्रामवासी साखून एवं परिजनो ने पुलिस टीम का ध्यन्यवाद दिया एवं बहुत-बहुत आभार व्यक्त किया।पुलिस टीम में धर्मसिहं उनि थानाधिकारी थाना नरैना,ओंकार सिह सउनि, हनुमान प्रसाद हैड कानि गिरधारी लाल कानि, पुरूषोत्तम कानि, महिपाल कानि, गीता शर्मा, कुलदीप कानि की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

पटवारियों की हड़ताल से अटके काम, सीमा ज्ञान में आ रहा व्यवधान, आमजन परेशान

पावटा। राजस्थान पटवार संघ के आ ान पर 9 सूत्री मांगों के निस्तारण नहीं होने के विरोध में चल रहा धरना व सामूहिक कार्य बहिष्कार सोमवार को छठे दिन भी जारी रहा। पटवारियों की हड़ताल के चलते राजस्व रिकॉर्ड संबंधी कार्य, कृषि योजनाएं व खाद्य सुरक्षा व खाद्य सुरक्षा योजना,नामांतरकरण, जाति प्रमाण पत्र, मूल निवास, सीमा ज्ञान, संपर्क पोर्टल पर दर्ज प्रकरण, राजस्व वसूली, पत्थरगढ़ी, नक्शा तरमीम, भूमि विभाजन, भूमि आवंटन, प्रमाण पत्रों की जांच, कृषि गणना, राजस्व रिकॉर्ड की प्रतिलिपि, जनसुनवाई, प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना, अतिक्रमण निस्तारण, पेंशन प्रकरणों की जांच, खाद्य सुरक्षा आवेदन जांच एवं भौतिक सत्यापन संबंधी काम अटक गए हैं। ब्लॉक पावटा पटवार संघ अध्यक्ष महेश स्वामी ने बताया कि पटवार संघ की लम्बित मांगों के निस्तारण को लेकर राजस्थान पटवार संघ के आव्हान पर पावटा उपखंड के सभी पटवारी पिछले सोमवार से अनिश्चितकालीन हड़ताल पर है। अपनी 9 सूत्रीय मांगों को लेकर सभी पटवारियों ने सोमवार को जिला मुख्यालय कोटपुतली जिला कलेक्टर कल्पना अग्रवाल को मुख्य शासन सचिव के नाम ज्ञापन सौंपा।

पटवार संघ की मांगे काफी समय से लंबित है जिनके संबंध में संगठन द्वारा लगातार ज्ञापन प्रेषित किये जा रहे है। परन्तु आज तक तक भी इनका निस्तारण नहीं हुआ है, जिनमें पटवारी पद को तकनीकी पद घोषित करते हुए ग्रेड पे 3600 (एल-10) किया जावे, गिरदावरी एप्प में पटवार संघ के ज्ञापन कमांक 101 दिनांक 27 दिसंबर 2024 के अनुसार अपेक्षित आवश्यक संशोधन करवाया जाये ताकि गिरदावारी कार्य पटवारी द्वारा ही किया जाना संभव हो सके तथा पटवार संघ सर्वेयर नियुक्ति का विरोध करता है, पटवारी द्वारा सर्वेयर की नियुक्ति नहीं की जावेगी, 1035 पटवार मंडल एवं मानोत कमेटी में वित्तिय स्वीकृति से शेष पटवार मण्डल एवं भू अभिलेख निरीक्षक मृत्त की वित्तिय स्वीकृति बजट घोषणा संख्या 177 वर्ष 2023-24 के अन्तर्गत 1035 नवीन पटवार मण्डलों की घोषणा की गई थी किन्तू आज दिनांक तक भी उक्त पटवार मंडलों की सथा भानोत कमेटी में वित्तिय स्वीकृति से शेष पटवार मण्डल एवं भू अभिलेख निरीक्षक दृत्त की वित्तिय स्वीकृति जारी नहीं की गई है, 2022-23 की पटवारी से वरिष्ठ पटवारी पद की रिव्यू डिपीसी एवं डेफर्ड एवं लिफाफा बंद प्रकरणों का निस्तारण करवाया जावे, 752 नव सृजित भू अभिलेख निरीक्षक पदो के निर्धारण संबंधित पत्रावली विगत वर्ष से लम्बित है सहित विभिन्न मांगे है। जब तक इन मांगों का समाधान नहीं होगा, तब तक पटवारी काम बंद रखेंगे। धरना स्थल पर ब्लॉक पावटा पटवार संघ अध्यक्ष महेश स्वामी, पटवारी महेश रावत, कल्पना चौधरी, मुकेश वर्मा, जीतू चौधरी, नवीन, अनिल मिश्रा, रेखा मीणा, कानूनगो संजय गुप्ता सहित कई पटवारी मौजूद रहे।

मांगो को लेकर जिला मुख्यालय पर जिला कलेक्टर को सौंपा ज्ञापन

सोसायटी की मासिक सभा आयोजित

फुलेरा । कस्बे की सांभर बाईपास सड़क स्थित पुरानी आदर्श विद्या मन्दिर परिसर में सोमवार को रेलवे पेंसनर्स सोसायटी शाखा फुलेरा की नियमित मासिक सभा का आयोजन महेश सहाय शर्मा की अध्यक्षता में किया गया। बैठक के प्रारंभ में सर्वप्रथम पिछले माह दिवंगत साथियों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। साथ ही शाखा से जुड़े नये सदस्यों और भामाशाहों का माला पहनाकर सम्मान किया गया। वहीं शाखा सचिव लाल चन्द कुमावत ने पिछले माह की प्रगति रिपोर्ट एवं 15 दिसम्बर को जयपुर मण्डल पर आयोजित पेंशन अदालत के निर्णित मदों के बारे में अवगत कराया। इसके साथ ही सभा को सम्बोधित करते हुए शेष नारायण सैनी ने वरिष्ठ साथियों के लिए जोशीली कविता का पठन किया। वहीं सह सचिव एस.के. माथुर और वरिष्ठ उपाध्यक्ष महेश सहाय शर्मा व श्याम लाल सैनी ने रेलवे संगठन एनडब्लूआरइयू में पेंसनर्स सोसायटी के विलय के बारे में विस्तार से प्रकाश डाला। साथ ही इसके लाभ व नुकसान के बारे में विस्तार से अपने विचार रखे। इसी क्रम में शाखा के संरक्षक रामेश्वर दास ने सभा सम्बोधित किया।

सार-समाचार

पूर्व विधायक किया स्वागत

चौंमू / कालाडेरा। कालाडेरा कस्बे के धूलेश्वर महादेव मन्दिर के पास स्थित एन. पी. एस विद्यालय में सोमवार को डॉ नानू राम यादव के साधन्य में एन.पी.एस. में भाजपा प्रदेश प्रवक्ता व पूर्व विधायक रामलाल शर्मा का राजस्थानी परंपरा के अनुसार साफा बधवा कर पोस्टो चित्र देकर स्वागत सत्कार किया गया। इस अवसर पर कालाडेरा ग्राम पंचायत सरपंच अशोक कुमार शर्मा, जयसिंहपुरा पूर्व सरपंच श्रवण कुमार यादव, कालाडेरा पूर्व व्यापार मण्डल अध्यक्ष हनुमान खोज, पवन शर्मा , निदेशक एनपीएस नरेन्द्र यादव सहीत अनेक गणमान्य लोगों उपस्थित थे।

मांग को लेकर सौंपा ज्ञापन

राजगढ़। युवा मित्रों को अटल प्रेरक के रूप में समायोजित करने की मांग को लेकर युवा मित्र संघर्ष समिति की ओर से मुख्यमंत्री के नाम सोनू कुमारी तहसीलदार प्रशिक्षु आईएएस को ज्ञापन सोपा। युवा मित्रों की ओर से सोपे ज्ञापन में बताया कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के नाम पर अटल प्रेरक लगाने की घोषणा की गई है। युवा मित्र जन कल्याणकारी योजनाओं के प्रचार प्रसार की भी पूर्ण योग्यता रखते हैं। गत वर्ष सरकार की ओर से युवा मित्रों की सेवाएं बर्खास्त करने से परिवारों के समक्ष रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो गया है। पूर्व में ज्ञापन एवं धरना प्रदर्शन आम रण अनशन कर अपना विरोध प्रदर्शन कर चुके हैं। 16 मार्च 2024 को सरकार की ओर से युवा मित्रों के प्रतिनिधिमंडल को अधिकारियों के समक्ष बिना मुकदमा दर्ज किए हुए नौकरी बहाली का आश्वासन दिया था। इस दिशा में अभी तक कार्रवाई नहीं होने से युवा मित्रों के परिवारों के समक्ष आर्थिक संकट खड़ा हो गया है। प्रदेश अध्यक्ष संजय मीणा के नेतृत्व में युवा मित्रों ने ज्ञापन सौंप कर नौकरी बहाली की मांग की है। इस अवसर पर पुरुषोत्तम सहित अन्य युवा मित्र मौजूद रहे।

कचरा प्वाइंट का एरिया बढ़ाने का विरोध

अलवर। अलवर शहर में अंबेडकर नगर के सामने कचरा प्वाइंट का एरिया बढ़ाने का विरोध शुरू हो गया है। साफिया कॉलोनी और आस-पास के लोगों ने सोमवार को मौके पर पहुंचकर प्रदर्शन किया। उनका कहना था कि पहले ही कचरे के कारण बीमारियां फैली हैं। अब एरिया बढ़ाने से गंदगी और ज्यादा बढ़ जाएगी। वहीं निगम के आयुक्त ने कहा कहा कि अब आधुनिक तरीके से कचरे को एकत्रित कर छंटनी किया जाएगा। पहले की तरह खुले में नहीं होगा।स्थानीय निवासी राजेश ने कहा- अंबेडकर नगर के सामने पहले मुख्य रोड पर कचरा डाला जाता था। अब उस एरिया को मुख्य रोड से हटाकर उसका एरिया बढ़ाते हुए पीछे की तरफ कर दिया, जिसकी जगह भी चिह्नित कर ली है, जो साफिया सहित आसपास की कॉलोनी के पास है। कचरा डाले जाने से पहले ही बदबू से आमजन परेशान है। अब मकानों के सामने कचरा डाला जाएगा तो मुश्किल हो जाएगा। उनका कहना है कि हमारा 100 साल पुराना रोड है। यहां पास में श्मशान घाट है। बगल में मस्जिद है। अब रोड को छोडक़र पीछे के हिस्से को कचरे के लिए चिह्नित कर लिया। यह देवखेड़ा जाने वाला 100 साल पुराना रोड है। हमें दिक्कत यह है कि कचरे से परेशान हैं।

सद्भावना केंद्र का शुभारंभ

श्रीमाधोपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री के मार्गदर्शन में सामाजिक समरसता अवधारणा को देखते हुए नगर पालिका श्रीमाधोपुर द्वारा गौशाला गोदाम के पास सोमवार 20 जनवरी 2025 को सद्भावना केंद्र का शुभारंभ किया गया तथा एसबीएम इंजीनियर गणेश नारायण शर्मा के द्वारा लोगों को सद्भावना केंद्र के बारे में जानकारी दी गई । कार्यक्रम में जरूरतमंद लोगों को केंद्र पर कंबल वितरित किए गए। इस अवसर पर नगर पालिकाध्यक्ष हरिनारायण महंत, पार्षद रोशन बिजारनिया, मूलचंद कुमावत , श्रवण आचार्य, रविंद्र ओसवाल, बाबूलाल शर्मा, उमेश चुलेट, वार्ड पार्षद प्रतिनिधि छाजूराम राम बिजारणीया, रूडमल , नगरपालिका ईओ डाक्टर अशोक कुमार, कर्मचारी गण आदि उपस्थित रहे।

वितरित किए जर्सी एवं स्वेटर

निवाई। राजकीय वरिष्ठ उपाध्याय संस्कृत विद्यालय करीरिया में भामाशाह द्वारा 114 छात्र छात्राओं को जर्सी एवं स्वेटर का वितरण किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि संत शंकरगिरी महाराज व अध्यक्षता कर रहे संस्था प्रधान वेदप्रकाश मिश्र द्वारा वितरण किया गया। सर्दी के मौसम में जर्सी एवं स्वेटर पाकर छात्र-छात्राओं में खुशी की लहर दौड़ गई। संस्था प्रधान वेदप्रकाश मिश्र ने विद्यालय में संचालित गतिविधियों की जानकारी दी। इस अवसर पर प्राध्यापक श्रीराम बैरवा, प्राध्यापक अर्चना मीणा, वरिष्ठ अध्यापक मुकेशकुमार शर्मा, वरिष्ट अध्यापक मुकेशकुमार चौधरी, वरिष्ठ अध्यापक लाड बाईं मीणा, वरिष्ठ अध्यापक वैष्णवी गौतम, अध्यापिका सुगना खींची, अध्यापिका अनीता मीणा, शारीरिक शिक्षक भंवरलाल शर्मा, वरिष्ठ सहायक आशु सैन, सुप्रीम फाउंडेशन से स्वयंसेवक दिनेशकुमार लोधा व भामाशाह प्रेरक शारीरिक शिक्षक भागचंद गुर्जर नोहटा सहित कई शिक्षक व छात्र-छात्राएं मौजूद थे।

व्याख्यान का आयोजन

कोटपूतली। यहाँ के राजकीय एलबीएस पी.जी. महाविद्यालय में सोमवार को महाविद्यालय महिला प्रकोष्ठ के तत्वाधान में ग्राम पंचायत में महिला नेतृत्व के द्वारा राजनीतिक सशक्तिकरण पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें प्रो. पदमा मीणा द्वारा स्थानीय निकायों में महिला प्रतिनिधित्व की आवश्यकता, महिला नेताओं द्वारा पंचायती व्यवस्थाओं में किये गये विकासात्मक कार्यो, महिला नेतृत्व के समक्ष आने वाली चुनौतियों और उनके निदान के उपायों पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्राचार्य डॉ. आर.के.सिंह ने स्थानीय निकायों में महिला प्रतिनिधित्व बढ़ाये जाने की आवश्यकता पर बल दिया। महिला प्रकोष्ठ की संयोजिका प्रो. शोभा जौहरी ने सभी सदस्यों का आभार व्यक्त किया। इस दौरान वरिष्ठ संकाय सदस्य प्रो. उर्मिल महलावत, प्रो. मधु नागर, प्रो. सुमन पूनियां, प्रो. ज्योति पाठक, डॉ. शिवांगी भट्ट समेत अन्य मौजूद रहे।

गतिविधियों का होगा आयोजन

कोटपूतली। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के निर्देशों की अनुपालना में महिला अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित सक्षम जयपुर अभियान जिले में बालिकाओं के सर्वांगीण विकास का आधार बन गया है। इस अभियान के अन्तर्गत प्रत्येक पंचायत समिति स्तर पर आगामी 08 मार्च तक विभिन्न कार्यशाला एवं अन्य विभागीय गतिविधियों का आयोजन विभिन्न विभागों के समन्वय से करवाया जायेगा। महिला अधिकारिता सुपरवाईजर किरण धुवां ने बताया कि सक्षम जयपुर अभियान के तहत आयोजित होने वाले इन आयोजनों में महिलाओं एवं बालिकाओं के मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य, सरकार की लोककल्याणकारी योजनाओं बेटी बचाओं, बेटी पढाओं, महिला सुरक्षा केन्द्र, सक्षम नारी शक्ति, व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण आदि की जानकारी प्रदान की जायेगी। सीडीपीओ कीर्ति बारोलिया ने पर्यावरण संरक्षण जल प्रबंधन एवं स्वच्छता के साथ-साथ जिले में संचालित एनिमिया जांच शिविरों के कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी।

प्रयागराज के लिए साइकिल यात्रा आज होगी रवाना

निवाई। देवधाम जोधपुरिया से 21 जनवरी को प्रयागराज के लिए साइकिल यात्रा रवाना होगी। अशोक लांगडी ने बताया कि 21 जनवरी को सुबह देवधाम जोधपुरिया से प्रयागराज धाम के लिए साइकिल यात्रा रवाना होगी। उन्होंने बताया कि साइकिल यात्रा का मुख्य उद्देश्य आध्यात्मिक जागरूकता लाना एवं सामूहिक भक्ति के लिए प्रेरित करना है। उन्होंने बताया कि यह यात्रा वृंदावन होते हुए 800 किलोमीटर दूर प्रयागराज धाम पहुंचेगी।

सैनी बने अध्यक्ष

श्रीमाधोपुर । कस्बे में मार्बल एंड ग्रेनाइट एसोसिएशन की वार्षिक मीटिंग का आयोजन किया गया जिसमें सर्वसम्मति से हर अमावस्या को प्रतिष्ठान बंद रखने का निर्णय लिया गया। नई कार्यकारिणी गठित मे अध्यक्ष पद के लिए नेमीचंद सैनी को नियुक्त किया गया ।

भारतीय टी20 टीम में सिर्फ सलामी बल्लेबाजों का क्रम ही तय है जबकि बाकी सभी बल्लेबाजों को क्रम को लेकर लचीला रूख अपनाना होगा। भारतीय टीम बुधवार को ईडन गार्डंस पर पहला मैच खेलेगी।

-अक्षर पटेल

भारत के उपकप्तान अक्षर पटेल बल्लेबाजी क्रम को लेकर बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

नीरज चौपड़ा

भारत के भाला फेंक के स्टार खिलाडी नीरज चोपड़ा ने दो दिन पहले सोनीपत की हिमानी मोर से विवाह किया। स्टार खिलाड़ी 27 वर्षीय नीरज ने अपने सोशल मीडिया हैंडल पर विवाह की घोषणा की।नीरज ने विवाह समारोह की तस्वीरों के साथ एक पोस्ट में लिखा, "मैंने अपने परिवार के साथ अपने जीवन का एक नया अध्याय शुरू किया। हर उस आशीर्वाद के लिए आभारी हूं जिसने हमें इस पल तक पहुंचाया। प्यार से बंधे, हमेशा खुश रहें।" हिमानी वर्तमान में अमेरिका में पढाई कर रही हैं। "हां, विवाह दो दिन पहले भारत में हुआ। मैं यह नहीं बता सकता कि यह कहां हुआ।"

क्या आप जानते हैं? भारतीय महिला क्रिकेट टीम ने आयरलैंड के खिलाफ435/5का स्कोर बनाकर वनडे में भारत का नया सर्वोच्च स्कोर दर्ज किया, जिसने पुरुष टीम का 418/5 (2011, वेस्टइंडीज के खिलाफ) का रिकॉर्ड तोड़ दिया।

ऑस्ट्रेलियन ओपन- वर्ल्ड नंबर-1 सिनर क्वार्टर फाइनल में पहुंचे: सिनर के सर्विस से नेट गिरा

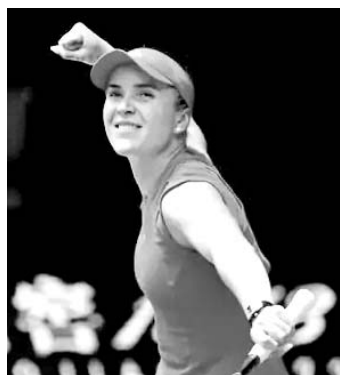

मेलबर्न, 20 जनवरी। दुनिया के नंबर-1 टेनिस खिलाड़ी जैनिक सिनर ऑस्ट्रेलियन ओपन में मेंस सिंगल्स के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गए हैं। डिफेंडिंग चैंपियन इटली के सिनर ने डेनमार्क के होल्गर रूने को 6-3, 3-6, 6-3, 6-2 से हराया।

32 डिग्री सेल्सियस से अधिक टेम्परेचर में खेले गए इस मैच में अंपायर को मेडिकल टाइमआउट लेना पड़ा। बाद में सिनर की दमदार सर्विस से नेट गिर गया। जिससे खेल 20 मिनट रुका रहा।

सिनर को मेडिकल हेल्प लेनी पड़ी: रॉड लेवर एरिना में सोमवार को सिनर और 13वीं वरीयता प्राप्त रूने गर्मी से निपटने के लिये चेहरे पर ठंडा तौलिया को रखते दिखे। दोनों ने कई बार गर्दन पर पानी भी गिराया। तीसरे सेट में सिनर को 10 मिनट से ज्यादा लॉकर रूम में मेडिकल हेल्प लेनी पड़ी। सिनर का सामना अब आस्ट्रेलिया के आठवीं वरीयता प्राप्त एलेक्स डि मिनाउर या अमेरिका के गैर वरीय एलेक्स मिचेलसन से होगा।

लोरेंजो सोनेगो भी क्वार्टर फाइनल में : मेंस सिंगल्स में इटली के ही 55वीं रैंकिंग वाले लोरेंजो सोनेगो ने अमेरिकी लर्नर टीएन को 6-2, 6-3, 3-6, 6-1 से मात दी। अब उनका सामना अमेरिका के बेन शेल्टन से होगा। अन्य क्वार्टर फाइनल मुकाबलों में नोवाक जोकोविच की टक्कर कार्लोस अल्काराज और अलेक्जेंडर ज्वेरेव की भिडंत टॉमी पॉल से होगी।

विमेंस सिंगल्स में एलिना स्वितोलिना जीतीं : विमेंस वर्ग में यूक्रेन की 28वीं सीड एलिना स्वितोलिना ने 1-4 से पिछड़ने के बाद रूस की वेरोनिका कुदेरमेतोवा को 6-4, 6-1 से हराया। वह तीसरी बार आस्ट्रेलियाई ओपन क्वार्टर फाइनल में पहुंची हैं। स्वितोलिना का सामना अब 19वीं रैंकिंग वाली अमेरिका की मेडिसन कीस से होगा।

प्रधानमंत्री ने खो-खो विश्वकप जीतने पर भारतीय महिला टीम को दी बधाई

नई दिल्ली, 20 जनवरी। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को खो-खो विश्वकप जीतने पर भारतीय महिला टीम को दी बधाई।मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर लिखा, भारतीय महिला टीम को पहली बार खो-खो विश्व कप जीतने पर बधाई। यह ऐतिहासिक जीत उनके अद्वितीय कौशल, दृढ़ संकल्प और टीम वर्क का परिणाम है। इस जीत ने भारत के सबसे पुराने पारंपरिक खेलों में से एक को और अधिक सुर्खियों में ला दिया है, जिससे देश भर के अनगिनत युवा एथलीटों को प्रेरणा मिली है। उम्मीद है कि यह उपलब्धि आने वाले समय में और अधिक युवाओं के लिए इस खेल को अपनाने का मार्ग प्रशस्त करेगी। मोदी इस संदेश के साथ महिला विश्वकप जीतने वाली भारतीय खो-खो टीम की जश्न मनाते हुए तस्वीर भी साझा की। उल्लेखनीय है कि आज भारतीय महिला टीम ने फाइनल मुकाबले में बेहतरीन खेला का प्रदर्शन करते हुए नेपाल पर दबदबा बनाते हुए 78-40 के स्कोर के साथ खो-खो विश्वकप का खिताब जीता।

रोमांचक मुकाबले में नाइजीरिया ने न्यूजीलैंड की महिला टीम को दो रनों से हराया

कुचिंग (मलेशिया), 20 जनवरी। कप्तान लक्की पिटी (19),लिलियन उडेह (18) रन की पारियों के बाद गेंदबाजों के शानदार प्रदर्शन के दम पर नाइजीरिया की महिला टीम ने सोमवार को वर्षा बाधित मैच में न्यूजीलैंड को हराकर महिला अंडर-19 टी-20 विश्वकप में अपनी पहली जीत दर्ज की। आज यहां न्यूजीलैंड ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया।

बल्लेबाजी करने उतरी नाइजीरिया की टीम ने कप्तान लक्की पिटी (19), लिलियन उडेह (18) रन की पारियों के योगदान से निर्धारित 30 ओवरों में छह विकेट पर 65 रन बनाये। नाइजीरिया के छह बल्लेबाजों का स्कोर दहाई आंकडे के नीचे रहा। नाइजीरिया के 65 रनों के जवाब में बल्लेबाजी करने उतरी न्यूजीलैंड की शुरुआत सलामी बल्लेबाज केट इरविन की पहले ही गेंद पर रन आउट होने से हुई। इसके बाद दूसरी सलामी बल्लेबाज एम्मा मैकलियोड तीसरे ओवर में दाएं हाथ के तेज गेंदबाज यूसेन पीस की गेंद पर आउट होकर पवेलियन लौट गई।

न्यूजीलैंड ने बीच के ओवरों में लगातार विकेट गंवाए और 11 ओवर की समाप्ति पर उसका स्कोर पांच विकेट पर 49 रन था। न्यूजीलैंड के लिए अनिका टोड (19), वेकलिन (18) और ईव वोलैंड ने (14) रन बनाये। न्यूजीलैंड को आखिरी दो ओवरो में 17 रन की जरूरत थी। न्यूजीलैंड ने कप्तान टैश वेकलिन के चौके की मदद से 12वें ओवर में आठ रन बनाये।

न्यूजीलैंड को अंतिम ओवर में नौ रन चाहिए थे। नाइजीरिया की उडेह ने शानदार गेंदबाजी करते हुए न्यूजीलैंड को केवल छह रन बनाने दिये और दो रन से मुकाबला जीत लिया।

पटना ने जीती 50वीं गोल्डन जुबली राज्य सीनियर पुरुष कबड्डी चैंपियनशिप

बेगूसराय, 20 जनवरी। 50 वीं गोल्डन जुबली राज्यस्तरीय सीनियर पुरुष कबड्डी प्रतियोगिता का खिताब पटना ने जीत लिया है।

बेगूसराय के बीहट स्थित महात्मा गांधी उच्च विद्यालय में चल रही 50वीं गोल्डन जुबली राज्यस्तरीय सीनियर पुरुष कबड्डी चैंपियनशिप के फाइनल में पटना ने बेगूसराय को 50-30 से हराया। पटना की ओर से सागर ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन किया। इससे पहले सेमीफाइनल मैच में बेगूसराय ने लखीसराय को 33-26 और पटना ने बक्सर को 49-25 से पराजित कर फाइनल का टिकट पाया था।

खिलाड़ियों को मुख्य अतिथि बेगूसराय नगर निगम की महापौर पिंकी देवी, बिहार राज्य कबड्डी संघ के चेयरमैन कुमार विजय सिंह, जिला कला संस्कृति पदाधिकारी श्याम कुमार सहनी, बेगूसराय जिला कबड्डी संघ के प्रधान संरक्षक उपेन्द्र प्रसाद सिंह, पूर्व विधान पार्षद भूमिपाल राय, पूर्व महापौर संजय कुमार, सुगेन्द्र बाबु, सीओ बरौनी सुरजकान्त, सामहो अकहा कुरहा के सीओ नवीन कुमार, निओ कार्बन के प्रबंधक जितेंद्र कुमार, उपमुख्य पार्षद ऋषिकेश कुमार ने पुरस्कृत किया।

दिल्ली की टीम के पूर्व कप्तान ऋषि कपूर का निधन

नई दिल्ली 20 जनवरी। दिल्ली की फुटबॉल टीम के पूर्व कप्तान और बेहतरीन कोच ऋषि कपूर का लीवर संबंधी परेशानी के कारण सोमवार सुबह निधन हो गया।

दिल्ली ऑडिट में कार्यरत ऋषि ने राजधानी के विभिन्न क्लबों के लिए खेला और खूब नाम कमाने के बाद कोलकाता के मोहनबागान के नियमित खिलाड़ी बने।

सातवीं नेशनल ओपन ताइक्वांडो चैंपियनशिप में उत्तर प्रदेश ओवरऑल चैंपियन

लखनऊ, 20 जनवरी। मेजबान उत्तर प्रदेश ने सातवीं नेशनल ओपन ताइक्वांडो चैंपियनशिप -2025 में दमदार प्रदर्शन के साथ सर्वाधिक 59 स्वर्ण पदक के साथ अपना दबदबा बनाते हुए ओवरऑल चैंपियनशिप ट्रॉफी अपने नाम कर ली।

ताइक्वांडो फेडरेशन ऑफ इंडिया के तत्वावधान में उत्तर प्रदेश ताइक्वांडो एसोसिएशन द्वारा आयोजित इस चैंपियनशिप के अंतिम दिन सीआरपीएफ की टीम उपविजेता रही जबकि मध्य प्रदेश को तीसरे स्थान से संतोष करना पड़ा। मेजबान उत्तर प्रदेश ने 59 स्वर्ण, 62 रजत व 109 कांस्य पदक सहित कुल 230 पदक के साथ पहला स्थान हासिल किया।

एलएसजी ने पंत को बनाया टीम का कप्तान

कोलकाता 20 जनवरी। लखनऊ सुपर जायंट्स (एलएसजी) ने सोमवार को भारतीय टीम के विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत को टीम का कप्तान नियुक्त किया।

एलएसजी ने आज कोलकाता में ऋषभ पंत को टीम का कप्तान बनाये जाने की घोषणा की। यह दूसरी बार है जब पंत इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की किसी टीम की कमान संभालेंगे। पंत इससे पहले 2021, 2022 और 2024 सत्र में दिल्ली कैपिटल्स(डीसी) के कप्तान रह चुके है।

इस अवसर पर पंत ने कहा, मैं विशेष रूप से संजीव गोयनका सर (टीम मालिक) और पूरे प्रबंधन का धन्यवाद करना चाहता हूं। मैं अपना 200 प्रतिशत दूंगा। उन्होंने मुझ पर जो भरोसा दिखाया है, मैं उस पर खरा उतरने का पूरा प्रयास करूंगा। यह एक नई शुरुआत है। उम्मीद है कि हम नए सत्र में बेहतरीन प्रदर्शन करेंगे।

उन्होंने कहा, मैं अपनी इस नई टीम से बेहद खुश हूं। हमारी टीम में युवा और सीनियर खिलाड़ियों का अच्छा संतुलन है। अब हमें यह

सोचना है कि इस फ्रैंचाइजी को कैसे नई ऊंचाइयों पर पहुंचाई जाए। मुझे पता है कि यह एक नई शुरुआत है, नई फ्रैंचाइज है।

हालांकि मैं जिस तरह की कप्तानी करता हूं या क्रिकेट खेलता हूं, उसमें ज्यादा कुछ नहीं बदलेगा। हां, यह जरूर है कि उसमें काफी कुछ जुड़ेंगे। टीम की जो भी रणनीति होगी, उसके हिसाब से आगे बढ़ा जाएगा। उल्लेखनीय है कि एलएसजी ने पिछले वर्ष नवंबर की नीलमी में पंत को 27 करोड़ रूपये में खरीदा था। वह इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के सबसे महंगे खिलाड़ी है।

वीमेन अंडर23 टी20 ट्रॉफी में राजस्थान- मुंबई सेमीफाइनल मैच (मुंबई जीती)

जयपुर 20 जनवरी। त्रिवेंद्रम में खेली जा रही बीसीसीआई की वीमेन अंडर 23 टी20 ट्रॉफी में आज राजस्थान – मुंबई के मध्य खेले गए सेमीफाइनल मैच में मुंबई जीती मुंबई पारी 108 / 8

टीम के लिए माही ठक्कर नाबाद 44 रनो का योगदान दिया।

राजस्थान की गेंदबाज यशस्वी कट्टा 21/2, शानू 27/2, कौशल्या चौधरी 10/1, उषा परेरिया 12 /1 विकेट प्राप्त किये।राजस्थान पारी 78 / 7, लक्ष्य का पीछा करते हुए राजस्थान टीम निर्धारित 20 ओवर में 7 विकेट के नुकसान पर 78 रन ही बना सकीय। टीम के लिए ज्योति चौधरी 29 व आयुषी गर्ग 17 रन का योगदान दिया।

ऑस्ट्रेलियाई महिला टीम ने इंग्लैंड को 57 रनों से हराया

सिडनी 20 जनवरी। बेथ मूनी (75) रनों की अर्धशतकीय पारी के बाद जॉर्जिया वेयरहैम (तीन विकेट) और अलाना किंग (दो विकेट) के शानदार प्रदर्शन की बदौलत ऑस्ट्रेलिया की महिला टीम ने सोमवार को पहले टी-20 मुकाबले में इंग्लैंड को 57 रनों से हरा दिया हैं।

इसी के साथ ऑस्ट्रेलिया ने तीन मैचों की सीरीज में 1-0 से बढ़त बना ली हैं। 199 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी इंग्लैंड की शुरुआत बेहद खराब रही और उसने मात्र चार रन के स्कोर पर अपने दोनों सलामी बल्लेबाजों के विकेट गवां दिये। मैया बाउचियर और डेनिएल वायट बिना खाता खोले ही पवेलियन लौट गई। इसके बाद सोफिया डंकली ने नेट साइबर ब्रंट के साथ पारी को संभालने का प्रयास किया।

ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजी आक्रमण के आगे इंग्लैंड के बल्लेबाज अधिक देर तक नहीं टिक सके। नेट साइबर ब्रंट (20) को अलाना किंग ने बोल्ड आउट किया। कप्तान हीथर नाइट (18), एमी जोंस (12), सोफी एकल्सटन (13) रन बनाकर आउट हुई। सोफिया डंकली ने इंग्लैंड के लिए 30 गेंदों में छह चौके और चार छक्के लगाते हुए (59) रनों की पारी खेली।

ऑस्ट्रेलियाई गेंदबाजों ने इंग्लैंड की पूरी टीम को 16 ओवर में 141 के स्कोर पर समेट कर 57 रनों से मुकाबला जीत लिया। 75 रनों की अर्धशतकीय पारी खेलने वाली ऑस्ट्रेलिया की बल्लेबाज बेथ मूनी को 'प्लेयर ऑफ द मैच' से नवाजा गया।

ऑस्ट्रेलिया की ओर से जॉर्जिया वेयरहैम ने तीन विकेट और अलाना किंग ने दो विकेट लिये। मेगन शूट, किम गार्थ, ऐनाबेल सदरलैंड और तालिया मैक्ठाा ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया। इससे पहले आज यहां इंग्लैंड की महिला टीम ने टॉस जीतकर पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया।

बल्लेबाजी करने उतरी ऑस्ट्रेलिया के लिये बेथ मूनी और जॉर्जिया वेयरहैम की सलामी जोडी ने पहले विकेट के लिए (40) रन जोडे। चौथे ओवर में लॉरेन बेल ने जॉर्जिया वेयरहैम (21) को पगबाधा आउट कर इंग्लैंड को पहली सफलता दिलाई। इसके बाद फीबी लिचफील्ड (25) रन आउट हुई। एलिस पेरी (सात), ऐनाबेल सदरलैंड (तीन) रन बनाकर आउट हुई।

कप्तान तालिया मैक्ठाा ने नौ गेंदों में 26 रनों की पारी खेली। ठोस हैरिस (14) रन बनाकर आउट हुई। बेथ मूनी ने 51 गेंदों में 11 चौकों की मदद से (75) रन बनाये। ऑस्ट्रेलिया की टीम ने निर्धारित 20 ओवरों में सात विकेट पर 198 का स्कोर खड़ा किया। इंग्लैंड की ओर से लॉरेन बेल और सोफी एकल्सटन ने दो-दो विकेट लिये। फ्रेया केंप और शार्लेट डीन ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

राजस्थान यूनाइटेड एफसी और डेम्पो एससी के बीच रोमांचक मुकाबला, 1-1 की बराबरी पर समाप्त

जयपुर, 20 जनवरी। आई-लीग के एक रोमांचक मुकाबले में राजस्थान यूनाइटेड एफसी और डेम्पो स्पोर्टिंग क्लब ने विद्याधर नगर स्टेडियम में खेले गए मैच में 1-1 से बराबरी की। यह मुकाबला दोनों टीमों के शानदार खेल और संघर्ष का उदाहरण बना, जिसने अंतिम सीटी तक दर्शकों को बांधे रखा।

राजस्थान यूनाइटेड एफसी ने 30वें मिनट में शानदार शुरुआत की, जब स्पेनिश फॉरवर्ड जेरार्ड आर्टिगास ने एक शानदार गोल कर टीम को बढ़त दिलाई। यह गोल मिडफील्डर एलन की परफेक्ट असिस्ट से आया, जिसने डेम्पो की डिफेंस को चीरते हुए आर्टिगास के लिए बेहतरीन मौका बनाया। इस गोल ने घरेलू दर्शकों को झूमने पर मजबूर कर दिया और राजस्थान यूनाइटेड ने पहले हाफ का अंत 1-0 की बढ़त के साथ किया।

हालांकि, राजस्थान यूनाइटेड के पास अपनी बढ़त को दोगुना करने का मौका था, जब एलन ने पेनल्टी स्पॉट से गोल करने की कोशिश की। लेकिन डेम्पो एससी के गोलकीपर ने एक शानदार सेव कर इस मौके को नाकाम कर दिया और अपनी टीम को मैच में बनाए रखा।

दूसरे हाफ में राजस्थान यूनाइटेड ने आक्रामक शुरुआत की और लगातार अटैक किया। लेकिन डेम्पो एससी ने 77वें मिनट में मैच में वापसी की और बराबरी का गोल दागा। यह गोल डेम्पो के बेहतरीन तालमेल और सूझबूझ का नतीजा था, जिसने स्कोरलाइन को 1-1 कर दिया।

अंतिम समय में दोनों टीमों ने जीत के लिए भरपूर कोशिश की। राजस्थान यूनाइटेड ने अंतिम पलों में कई मौके बनाए, लेकिन डेम्पो की डिफेंस ने मजबूती से उनका सामना किया। दोनों टीमों की आक्रामकता और संघर्ष के बावजूद, निर्णायक गोल नहीं हो सका। अंत में मैच का नतीजा 1-1 की बराबरी पर समाप्त हुआ, जहां दोनों टीमों ने अंक साझा किए।

जयपुर पोलो सीजन 2025, राजमाता गायत्री देवी मेमोरियल कप (06 गोल) में आज तीन मैच खेले जाएंगे

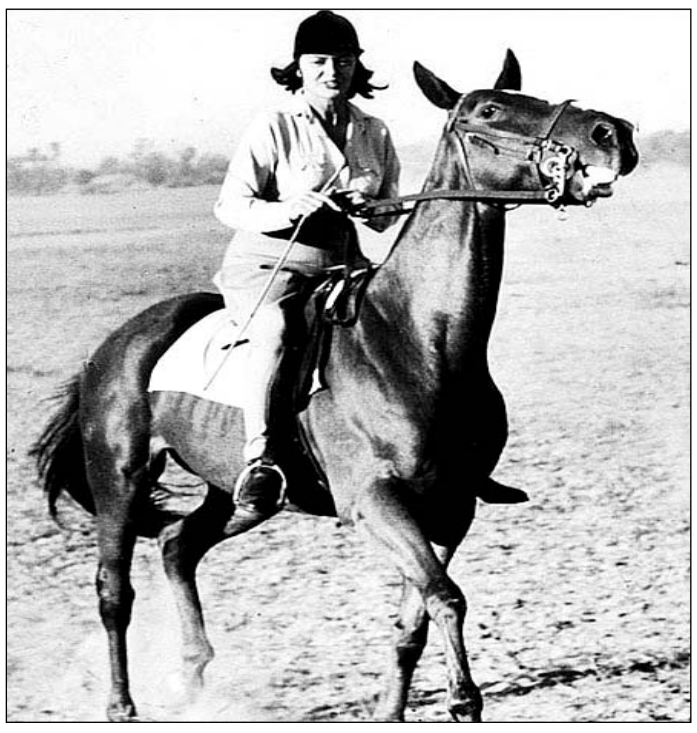

जयपुर, 20 जनवरी। जयपुर पोलो सीजन 2025, राजमाता गायत्री देवी मेमोरियल कप (06 गोल), 20 से 26 जनवरी तक रामबाग पोलो ग्राउंड आवर कैवेलरी ग्राउंड पर खेला जाएगा। इंटरनेशनल खिलाड़ियों ओर भारत के बेहतरीन खिलाड़ियों के आपसी खेल का तालमेल देखने को मिलेगा।

मंगलवार को तीन मैच खेले जाएंगे। कैवेलरी ग्राउण्ड पर दो मैच खेले जाएंगे जिनमे पहला मैच सूजैन इंडियन टाईगर्स बनाम जयपुर के बीच ओर दूसरा मैच आर्मी रेड बनाम चांदना मेफेयर के बीच खेला जाएगा। वहीं तीसरा मैच बेंगलोर ग्रेज/कृष्णा पोलो बनाम रामबाग पोलो टीम के बीच रामबाग पोलो ग्राउंड पर खेला जाएगा।

राजमाता गायत्री देवी मेमोरियल कप (06 गोल), की छह टीमों को तीन पूलों में बांटा गया है। जोकि निम्न प्रकार है।

पूल - ए : बैंगलोर ग्रेज़/कृष्णा पोलो-अनिरुद्ध मावाजी +0, अश्विनी शर्मा +0, नवीन सिंह +2, डैनियल ओटामेंडी +4

रामबाग पोलो- सिद्धांत सिंह +0, सलीम आज़मी +1, ध्रुवपाल गोदारा +2, शमशीर अली +3

अरावली पोलो- देविन्दर सिंह-1, डीनो धनखड़ +0, मैनुअल एफ लोरेंटे +6, जयवीर सिंह गोहिल +1

पूल-बी सुजान इंडियन टाइगर्स- सरदार जैसल सिंह +0, कुलदीप सिंह राठौड़ +2, भवानी सिंह कालवी +2, अंगद कलां +2

जयपुर- देवव्रत सिंह झालामंड -2, राव हिम्मत सिंह बेदला +1, लांस वाटसन +4, महाराजा सवाई पद्मनाभ +3

वी पोलो- विवान मेहता -2, मुकेश सिंह +0, हुर्र अली +2, गोंज़ालो यानज़ोन +4

पूल-सी : आर्मी रेड - मुकेश गुर्जर +0, रविंदर मांग +1, मेजर मृत्युंजय सिंह चौहान +0, लेफ्टिनेंट कर्नल विशाल चौहान +1, **चांदना/मेफेयर-** अनय शाह +0, अशोक चांदना +0, सिद्धांत शर्मा +3, सिमरन शेरगिल +3, **डेल्टा पोलो-** विश्वरूप बजाज +0, अक्षय मलिक +0, अभिमन्यु पाठक +3, जुआनकल मराम्बियो +3।

डा. आशुतोष बने सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन के अध्यक्ष, रमेश सिंह सचिव

जयपुर, 20 जनवरी। एमेच्योर साफ्ट हॉकी फेडरेशन ऑफ इंडिया के रविवार को यहां संपन्न चुनावों में इंडियन आयल कार्पोरेशन के पूर्व स्वतंत्र निदेशक (सीएसआर) डा. आशुतोष पंत को नया अध्यक्ष चुना गया, जबकि महाराणा प्रताप और वशिष्ठ अवार्ड से सम्मानित रमेश सिंह एक बार फिर सचिव पद पर निर्वाचित हुए। केके प्रधान को कोषाध्यक्ष बनाया गया है। चुनाव अधिकारी तेजवीर सिंह के कार्यकारिणी के सभी पदों पर निर्विरोध निर्वाचन की घोषणा की। इस अवसर पर राजस्थान सरकार के कैबिनेट मंत्री अविनाश गहलोत भी मौजूद थे।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े डॉक्टर पंत भाजपा के प्रबुद्ध जन प्रकोष्ठ, श्रेष्ठ भारत अभियान अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान और राजस्थान विज्ञान समिति समेत कई राष्ट्रीय राज्य स्तरीय संस्थाओं से जुड़े हुए हैं। डॉ. आशुतोष पंत ने अध्यक्ष पद पर चुने जाने के बाद मीडिया से बातचीत में कहा कि जयपुर में संपन्न पहली राष्ट्रीय साफ्ट हॉकी लीग को मिली सफलता और लोकप्रियता के बाद इस बार नेशनल लीग का आयोजन एक साथ तीन शहरों जयपुर, ग्वालियर और पणजी (गोवा) में कराने का निर्णय लिया गया है। उन्होंने बताया कि जल्दी ही जयपुर में रैफरी सेमिनार का आयोजन किया जाएगा और साफ्ट हॉकी खेल को ऑल इंडिया यूनिवर्सिटी गेम्स और स्कूल गेम्स फेडरेशन ऑफ इंडिया में शामिल कराने के लिए प्रयास किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि साफ्ट हॉकी की पहली एशियन चैंपियनशिप का आयोजन भी जल्दी ही किया जाएगा। इसके लिए भारत के साथ थाईलैंड और मलेशिया अन्य संभावित आयोजन स्थल हैं।

विधानसभाध्यक्ष देवनानी सीने में दर्द की शिकायत के बाद पटना से जयपुर लौटे

- सोमवार देर शाम उन्हें सवाई मानसिंह अस्पताल की मेडिकल आई.सी.यू. में भर्ती किया गया, जहां विशेषज्ञ चिकित्सकों की देखरेख में उनका चैकअप किया जा रहा है।

वासुदेव देवनानी

जयपुर/अजमेर, 20 जनवरी (का.सं)। राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष वासुदेव देवनानी की सोमवार को बिहार के पटना में अचानक तबीयत बिगड़ गई। उन्हें विशेष विमान से जयपुर लाकर देर शाम सवाई मानसिंह अस्पताल की मेडिकल आईसीयू में भर्ती कराया गया है, जहां विशेषज्ञ चिकित्सकों की देखरेख में उनका चैकअप किया जा रहा है। प्रोटोकॉल के अनुसार, देवनानी के इलाज के लिए पांच डॉक्टरों का मेडिकल बोर्ड बनाया गया है। यह बोर्ड लगातार राज्य सरकार को उनके स्वास्थ्य के बारे में अपडेट देता रहेगा।

गौरतलब है कि दो दिवसीय अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों की बैठक में भाग लेने के लिए वासुदेव देवनानी, राजस्थान विधानसभा के विशेष सचिव भारत भूषण शर्मा के साथ, रविवार को बिहार राज्य के पटना पहुंचे थे। सोमवार को पटना में आयोजित अखिल भारतीय पीठासीन अधिकारियों के सम्मेलन के शुभारंभ के बाद, फोटोग्राफी सैशन के दौरान अचानक देवनानी की तबियत बिगड़ गई। उन्हें सीने में तेज दर्द की शिकायत के बाद, पी.एम.सी.एच. के इंदिरा गांधी इंस्टीट्यूट ऑफ कार्डियोलॉजी में भर्ती किया गया था। यहां उनकी हार्ट से जुड़ी जांचें की गईं। बताया जा रहा है कि डॉक्टर्स ने एंजियोग्राफी की सलाह दी थी, परंतु देवनानी ने पिछले साल ही एंजियोग्राफी करवाई थी, इसलिए उन्होंने एंजियोग्राफी से मना कर दिया।

आई.जी.आई.सी. के डॉक्टर्स के अनुसार, अस्पताल में ईसीजी, ट्रॉप-टी, इको, सिटी स्कैन की जांच नॉर्मल आई, ऐसे में हाइपर एसिडिटी का दर्द माना जा रहा है। देवनानी की जांच रिपोर्ट सामान्य आने के बाद, डॉक्टर्स ने राहत की सांस ली और इसकी सूचना तुरंत राजस्थान सरकार को भी दी गई। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने भी पटना के अस्पताल पहुंचकर देवनानी की कुशलक्षेम पूछी।

यहां तबियत सामान्य होने और हालत ठीक होने के बाद, वासुदेव देवनानी अपना कार्यक्रम बीच में छोड़कर सोमवार शाम को विशेष विमान से रवाना होकर जयपुर पहुंच गए। उन्हें जयपुर लाने के लिए मुख्यमंत्री की पहल पर यहां से विशेष विमान भेजा गया था, जिसमें सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य और सीनियर कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. दीपक माहेश्वरी के साथ, एसएमएस हॉस्पिटल के अतिरिक्त अधीक्षक डॉ. गिरधर गोयल और चिकित्सकों की टीम को भेजा गया था। सवाई मानसिंह अस्पताल के प्रिंसिपल और सीनियर कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. दीपक माहेश्वरी ने बताया कि अस्पताल के वरिष्ठ डॉक्टर्स की टीम देवनानी का इलाज कर रही है। उन्हें एसिडिटी की समस्या हुई थी, लेकिन एहतियात के तौर पर, उनकी सम्पूर्ण जांच की जा रही है। डॉक्टर्स ने उन्हें कुछ दिन आराम करने की सलाह भी दी है।

कल्हाडी घाट फोरेस्ट में दो नक्सली मारे गये

गरियाबंद, 20 जनवरी। छत्तीसगढ़-ओडिशा सीमा के पास कुल्हाड़ी घाट रिजर्व फॉरेस्ट में सोमवार की सुबह सुरक्षा बलों और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ में दो नक्सली मारे गये, जबकि एक जवान घायल हो गया। मुठभेड़ के दौरान, कोबरा बटालियन का एक जवान घायल हुआ है, जिसे हेलीकॉप्टर के जरिए रेस्क्यू कर लिया गया। घटनास्थल पर चलाए गए सर्च ऑपरेशन में भारी मात्रा में हथियार भी बरामद किए गए हैं।

गरियाबंद जिले के मैनपुर थाना क्षेत्र के इस इलाके में सुबह से ओडिशा और छत्तीसगढ़ के जवानों द्वारा संयुक्त सर्चिंग ऑपरेशन चलाया जा रहा है। मुठभेड़ में दो नक्सलियों के मारे जाने की खबर है। घायल जवान को एयरलिफ्ट कर रायपुर ले जाया गया। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, इलाके की स्थिति को देखते हुए भाटीगढ़ स्टेडियम को छावनी में तब्दील कर दिया गया है। पुलिस के बड़े अधिकारी भी मैनपुर पहुंच चुके हैं। सुरक्षा बलों के संयुक्त ऑपरेशन के दौरान जंगल में नक्सलियों को घेरने की कोशिश की गयी।

'राजस्थान में सरकार के विधायकों की सुनवाई नहीं हो रही'

कांग्रेस महासचिव सचिन पायलट ने पत्रकारों से कहा कि राजस्थान के साथ उनका संबंध और रिश्ता अटूट है

- पायलट ने राजसमन्द यात्रा के बाद कहा कि राज्य सरकार के स्कूल बंद करने और जिले खत्म करने के निर्णय नकारात्मक हैं।

उदयपुर में डबोक स्थित महाराणा प्रताप एयरपोर्ट पर पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट का समर्थकों ने जोरदार स्वागत किया।

उदयपुर, 20 जनवरी (का.स.)। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के महासचिव एवं राजस्थान के पूर्व डिप्टी सीएम सचिन पायलट ने सोमवार को राजसमन्द के एक दिवसीय प्रवास पर डबोक स्थित महाराणा प्रताप एयरपोर्ट पर, पत्रकारों के साथ मुलाक़ात में सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि राजस्थान सरकार ने स्कूलों को बंद करने और जिले खत्म करने के जो फैसले लिए हैं, वे सब नकारात्मक निर्णय हैं। प्रदेश में अफसरशाही बहुत हावी है। सरकार में बहुत पावर सेक्टर बन गए हैं, सत्ता दल के जो विधायक है, वे भी दर-दर भटक रहे हैं। सरकार की जवाबदेही तय हो, इसके लिए हम विधानसभा में अपनी बात रखेंगे।

उन्होंने कहा कि सरकार को पारदर्शिता के साथ अपनी बात रखनी चाहिए। सदन में हर विषय पर चर्चा हो, सरकार अपने जवाब दे, हम हमेशा सदन चलाने के पक्ष में हैं। पायलट ने कहा कि अलग-अलग नेताओं को पार्टी जिम्मेदारी देती है। मुझे छत्तीसगढ़ की जिम्मेदारी दे रखी है, लेकिन राजस्थान के साथ मेरा संबंध और रिश्ता अटूट है। यहां के कार्यकर्ताओं और जनता के प्रति हमारे दिल में जो जगह है, उसे कोई कम नहीं कर सकता। आज हम विपक्ष में हैं लेकिन कार्यकर्ताओं को जहां जरूरत है, वहां हम जाते हैं। एक परिवार के रूप में हम काम कर रहे है, यही हमारी ताकत है। राजस्थान से चुनकर गया हूं। यहां सत्ता और विपक्ष में रहकर काम करने का मौका मिला है। यहां के लोग, जनता, कार्यकर्ता और यहां की मिट्टी के साथ मेरा जो संबंध है, वही मेरी सबसे बड़ी उपलब्धि है।

दिल्ली चुनाव को लेकर पायलट ने कहा, दिल्ली में चुनाव होने वाले हैं, जो सरकार है, उसको दिल्ली की जनता ने कई बार मौके दिए हैं। पिछले 10 से 12 सालों से केन्द्र और राज्य सरकार के वर्चस्व की लड़ाई में दिल्ली के लोग पिस रहे हैं। इसमें कांग्रेस पार्टी बेहतर विकल्प बनकर सामने आई है। दिल्ली में शीला दीक्षित की कांग्रेस सरकार थी, तब जो विकास हुआ, उसको जनता आज याद कर रही है।

पायलट बोले कि शीशमहल और राजमहल में कितना रुपया खर्च हुआ, इन चर्चाओं से हटकर कांग्रेस ने मजबूत ब्लू प्रिंट तैयार किया है। कांग्रेस मजबूती से लड़ेगी और परिणाम अच्छे आएंगे और कांग्रेस का परफॉरमैंस बेहतर रहेगा। इंडिया गठबंधन पर पूछे एक सवाल पर पायलट ने कहा, यह पहले भी मजबूत था और आज भी मजबूत है। देश में भाजपा को चुनौती देने के लिए नेशनल लेवल पर कोई दल है तो कांग्रेस पार्टी है।

दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल पर हमले पर सचिन ने कहा कि हिंसा का राजनीति में कोई स्थान नहीं होना चाहिए, लेकिन जनता जवाब मांग रही है। जिनको केन्द्र और दिल्ली में सत्ता दी, वही भाजपा और आप पार्टी आरोप-प्रत्यारोप में फंस गई हैं। ट्रम्प के अमेरिका के राष्ट्रपति बनने पर पायलट ने कहा कि भारत और अमेरिका दोनों देशों के संबंध मजबूत रहेंगे और संबंध पहले से और बेहतर होंगे। इस दौरान कांग्रेस नेता रघुवीर सिंह मीणा भी मौजूद रहे।

एयरपोर्ट पहुंचने पर पायलट का मेवाड़ी पगड़ी, सूत की माला, तिरंगा ऊपरना पहना कर स्वागत किया गया। इस दौरान, विभिन्न मंडलों के अध्यक्ष, एनएसयूआई, यूथ कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने गर्मजोशी से उनका स्वागत किया।

'राजस्थान सरकार टैक्स...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

2024 में जीएसडीपी की वृद्धि दर 12.56 प्रतिशत दर्ज की गई है। उन्होंने कहा कि राज्य के पूंजीगत व्यय को भी 65.94 प्रतिशत बढ़ाया गया।

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना-2024 लाई गई है, जिससे प्रदेश के संतुलित एवं समावेशी विकास और रोजगार के अवसरों को बढ़ावा मिलेगा। शर्मा ने कहा कि सरकार कृषि एवं कृषकों के सम्पूर्ण विकास के लिये प्रतिबद्ध है। सरकार द्वारा 66 लाख किसानों को किसान सम्मान निधि की अतिरिक्त किश्त 650 करोड़ रूपये की राशि सीधे बैंक खातों में स्थानान्तरित की गई।

शर्मा ने कहा कि कर केवल राजस्व संग्रह का माध्यम नहीं है, बल्कि यह प्रदेश के विकास का आधार है। कर से होने वाली आय का उपयोग अधिकतम जनकल्याणकारी कार्यों में हो, इसी सिद्धान्त को आत्मसात कर राज्य सरकार कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि करों के माध्यम से अर्जित राजस्व को शिक्षा, स्वास्थ्य, बुनियादी ढांचे और सामाजिक कल्याण के क्षेत्रों में व्यय कर, विकास का लाभ समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने का कार्य किया जा रहा है।

इस अवसर पर, उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी, उद्योग मंत्री कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड, उद्योग राज्य मंत्री के के विश्नोई, अतिरिक्त मुख्य सचिव ऊर्जा आलोक, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री कार्यालय) शिखर अग्रवाल, प्रमुख शासन सचिव उद्योग अजिताभ शर्मा, प्रमुख शासन सचिव राजस्व दिनेश कुमार, प्रमुख शासन सचिव स्वायत्त शासन विभाग राजेश यादव एवं प्रमुख शासन सचिव नगरीय विकास वैभव गालरिया सहित, अन्य संबंधित अधिकारीगण मौजूद थे।

ट्रेनी डॉक्टर रेप मर्डर केस...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाता रहा है। सबसे बड़ी बात यह है कि हत्या और बलात्कार से संबंधित लगभग सभी साक्ष्यों को हत्या के बाद के दिनों में, अधिकारिक संरक्षण में मिटा दिया गया।

आज भी, आरोपी संजय रॉय ने अदालत में रोते हुए कहा कि उसे फंसाया जा रहा है और जूनियर डॉक्टर की हत्या व रेप में उसका हाथ नहीं था।

राज्य के डॉक्टर उत्तेजित हैं, उनका कहना है कि यह असली आरोपियों को छुपाने का प्रयास है। आमतौर पर माना जाता है कि प्रारंभिक रिपोर्ट और यहाँ तक कि आंशिक पोस्टमार्टम रिपोर्ट में मृत डॉक्टर पर व्यापक हमले और शरीर पर भयानक चोटों के संकेत मिले हैं, जो यह संकेत देते हैं कि यह एक अकेले व्यक्ति का काम नहीं था।

अभी से लोगों के छोटे-छोटे ग्रुप इकट्ठे होने शुरु हो गए हैं, न्यायिक व जांच प्रक्रिया को लेकर अपना विरोध प्रकट करने के लिए। आम आदमी का मानना है कि यह फैसला असली आरोपियों का खुलासा नहीं कर रहा है।

जूनियर डॉक्टर के परिवार ने भी फैसले पर असंतोष व्यक्त करते हुए कहा कि इसमें अनगिनत खामियाँ थीं तथा राज्य प्रशासन ने उन्हें मामले पर दूर रखा तथा मामले से निपटने में उनकी भावनाओं का आदर नहीं किया।

जूनियर डॉक्टर के परिवार वालों ने बार-बार कहा कि उनके भारी विरोध के बावजूद आनन-फानन में शव का दाहसंस्कार कर दिया गया तथा उन्हें उनकी बेटी के शव के पास नहीं जाने की अनुमति नहीं दी तथा शव को पुलिस संरक्षण में अस्पताल से जल्दबाजी में ले जाया गया।

कई राजनैतिक नेताओं और विपक्षी दलों ने राज्य सरकार पर मामले में लीपापोती करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा हैरानी की बात है कि एक भीड़ हत्या के बाद हॉस्पिटल में घुसी और घटनास्थल पर तोड़फोड़ मचा दी, यहां तक बाथरुम, जहां संभवतया आरोपियों ने हाथ धोए होंगे, को तोड़ दिया गया।

राज्य पुलिस का आचरण भी बेहद ढुलमुल था वह ना तो सबूत बचा पाई और ना ही निष्पक्ष जांच कर पाई। स्थानीय पुलिस थाने के प्रभारी को भी सी.बी.आई. ने गिरफ्तार किया है।

अपना केस लड़ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

सी.पी.ए. (फॉरेन करप्ट प्रैक्टिसेज़ एक्ट) के उल्लंघन के आरोप नहीं हैं, लेकिन यह जटिल केस अमेरिका की अदालत में चल रहा है।

गत 21 नवम्बर को, यू.एस. अधिकारियों ने गौतम अडानी तथा दो अन्य पर आरोप लगाया था कि उन्होंने सोलर एनर्जी कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (एस.ई.सी.आई.) से सोलर एनर्जी अनुबंध हासिल करने के लिए भारत के सरकारी अधिकारियों को लगभग 250 मिलियन डॉलर की रिश्वत दी।

गौतम अडानी, सागर अडानी तथा अन्य अधिकारियों के खिलाफ यू.एस. सिक्यूरिटीज़ एण्ड एक्सचेंजन कमीशन और न्यूयॉर्क के ईस्टर्न डिस्ट्रिक्ट द्वारा दायर केस अमेरिका की एकल जज अदालत को सौंपा गया है।

'सारी तैयारी ....

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री का कहना है कि भारत एक देश है तो कानून भी एक ही होना चाहिए। गुजरात ने भी 2022 में यू सी सी के क्रियान्वयन के लिए एक कमेटी बनाई थी। केन्द्रीय मंत्री पुरुषोत्तम रुपाला ने कहा था कि यू सी सी संविधान में प्रदत्त नागरिकों के मूल अधिकार नहीं छीनेगा। महाराष्ट्र, हरियाणा और गोवा भी यू सी सी के पक्ष में कदम उठा रहे हैं। कांग्रेस, वामपंथी दल, सपा, राजद आदि दल यू सी सी का विरोध कर रहे हैं। भाजपा, तेलुगूदेशम, शिवसेना व आप इसके पक्ष में हैं।

'फागी रोड पर ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में मुहाना मोड से रिंग रोड तक की करीब सात किलोमीटर रोड को 200 फीट चौड़ी दर्शाया गया है। जेडीए की ओर से यहां सडक़ निर्माण के लिए कुछ जमीन को अवाप्त भी किया जा चुका है। वहीं, कई जगहों पर प्रभावशाली लोगों ने अतिक्रमण कर रखे हैं, लेकिन जेडीए ने उन पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं की। याचिकाकर्ता की ओर से अदालत को बताया गया कि जेडीए की कार्रवाई को लेकर कुछ काश्तकारों ने स्टे ले रखा है, लेकिन उन काश्तकारों ने 200 फीट सडक़ निर्माण पर आपत्ति नहीं होने की अंडरटेकिंग दे रखी है। सुनवाई के दौरान, अदालती आदेश की पालना में जेडीए की ओर से तथ्यात्मक रिपोर्ट पेश की गई, जिसमें कहा गया कि करीब चार दर्जन खसरों पर स्टे लिया गया है और कई खसरों पर लोगों ने अतिक्रमण कर रखा है। इस पर अदालत ने कहा कि जब जेडीए स्वयं की अतिक्रमण होने की बात मान रहा है तो फिर उन पर कार्रवाई क्यों नहीं की गई। ऐसा कर क्या जेडीए स्वयं अतिक्रमण को बढावा देना चाहती है। इसके साथ ही, अदालत ने जेडीए सचिव को पेश होकर इस संबंध में अपना स्पष्टीकरण देने को कहा है।

किसानों का दिल्ली कूच 26 जनवरी तक स्थगित

- किसान मजदूर मोर्चा ने 14 फरवरी की केन्द्र सरकार की बैठक को पहले करने की मांग की।
- किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल से भी अपना अनिश्चितकालीन अनशन समाप्त करने की अपील की।

चंड़ीगढ़ , 20 जनवरी। किसान मजदूर मोर्चा ने केंद्र सरकार से प्रदर्शनकारी किसानों के साथ 14 फरवरी को प्रस्तावित बैठक जल्द आयोजित करने का सोमवार को आग्रह किया। साथ ही किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल से भी अपना अनिश्चितकालीन अनशन समाप्त करने की अपील की। किसान मजदूर मोर्चा ने 101 किसानों के समूह के 21 जनवरी (मंगलवार) को दिल्ली कूच करने के कार्यक्रम को भी 26 जनवरी तक स्थगित करने की घोषणा की है।

यह संगठन संयुक्त किसान मोर्चा (गैर-राजनीतिक) के साथ मिलकर पिछले 11 महीनों से खनौरी और शंभू बॉर्डर पर जारी किसानों के विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व कर रहा है। शनिवार को कृषि मंत्रालय में संयुक्त सचिव प्रिय रंजन के नेतृत्व में एक उच्च स्तरीय केंद्रीय प्रतिनिधिमंडल ने खनौरी सीमा स्थल पर डल्लेवाल और एसकेएम (गैर-राजनीतिक) एवं केएमएम के प्रतिनिधियों से मुलाकात की। उन्हें 14 फरवरी को चंडीगढ़ में बातचीत फिर से शुरू करने के लिए आमंत्रित किया।

सोमवार को शंभू धरना स्थल पर मीडिया को संबोधित करते हुए केएमएम नेता सरवन सिंह पंढेर ने कहा कि किसानों के साथ बैठक के लिए जो तारीख (14 फरवरी) तय की गई है, उसमें काफी समय है। पंढेर ने कहा, 'सरकार ने बैठक आयोजित करने में बहुत समय लगा दिया। यह हमारी शर्त नहीं है, लेकिन हमारी मांग है कि बैठक जल्द हो और यह दिल्ली में हो।'

हाईकोर्ट के...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

खारिज कर दी है, लेकिन फिर भी हाईकोर्ट प्रशासन ने आदेश की पालना नहीं की है।

अवमानना याचिका में कहा कि हाईकोर्ट ने 14 फरवरी 2024 को एडीजे भर्ती की परीक्षा सेल को योग्य विधिवेत्ताओं व प्रोफेसरों की कमेटी बनाने का निर्देश दिया था। वहीं, कमेटी को कहा था कि वह हर पेपर की बीस कॉपियों को रेंडमली तौर पर परीक्षण कर मूल्यांकन करवाए और उनमें अंक दे। इसके अलावा, एडीजे भर्ती 2020 के खाली पदों को हाईकोर्ट की कार्रवाई के अधीन रखने के लिए कहा था। इसके बावजूद, हाईकोर्ट प्रशासन ने आदेश की पालना करने की बजाय इसे एसएलपी के जरिए सुप्रीम कोर्ट में चुनौती दी।

वहीं, सुप्रीम कोर्ट से एसएलपी खारिज होने पर भी हाईकोर्ट के आदेश की पालना नहीं हुई है।

'अमेरिका का स्वर्णिम युग आज से, ...

- गल्फ ऑफ मैक्सिको का नाम बदल कर गल्फ ऑफ अमेरिका किया।
- कोविड आदेश के उल्लंघन के कारण निष्कासित कर्मचारियों को फिर से नौकरी मिलेगी और हर्जाना भी मिलेगा।
- अपने नागरिकों को समृद्ध बनाने के लिए दूसरे देशों पर टैक्स लगाने की घोषणा की।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

कर दिया है। उन्होंने कहा कि मेक्सिको बॉर्डर पर भारी संख्या में अमेरिकी सेना को तैनात किया जाएगा।

डोनाल्ड ट्रंप ने अपने भाषण में कहा कि देश की चुनौतियों को समाप्त कर दिया जाएगा। साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि अमेरिका कट्टरपंथी और भ्रष्ट प्रतिष्ठान पर विश्वास के संकट का सामना कर रहा है।

ट्रंप ने कहा कि पिछली सरकार ने हमारे देश में अवैध रूप से प्रवेश करने वाले खतरनाक अपराधियों को शरण और संरक्षण प्रदान किया है।

ट्रम्प ने कहा कि अमेरिका जल्द ही पहले से कहीं अधिक महान, मजबूत और अधिक उत्कृष्ट होगा। उन्होंने कहा कि वह राष्ट्रपति पद पर आत्मविश्वास और आशावाद के साथ लौटे हैं। यह राष्ट्रीय सफलता के एक रोमांचक नए युग की शुरुआत है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ने कहा कि पूरी दुनिया पर सूर्य का प्रकाश फैल रहा है और अमेरिका के पास इस अवसर का लाभ उठाने का अभूतपूर्व अवसर है।

ट्रम्प ने अपने भाषण में अमेरिका के लिए अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा, हमारी संप्रभुता पुन: प्राप्त की जाएगी, हमारी सुरक्षा बहाल की जाएगी, न्याय के तराजू को पुन: संतुलित किया जाएगा।

ट्रंप ने कहा कि अमेरिकी न्याय विभाग का क्रूर, हिंसक और अनुचित हथियारीकरण समाप्त हो जाएगा। उन्होंने कहा, हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना होगी जो गौरवान्वित, समृद्ध और स्वतंत्र हो। ट्रम्प ने राष्ट्रपति के रूप में अपने भाषण की शुरुआत अपने साथी राष्ट्रपतियों और कार्यक्रम में उपस्थित अन्य लोगों को संबोधित करके की, जिनमें पूर्व उपराष्ट्रपति कमला हैरिस और पूर्व राष्ट्रपति जो बाइडेन भी शामिल रहे।

दस लाख ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बल्कि असलियत में उन्होंने एक मिलियन डॉलर यानि, 8.65 करोड़ रुपए का टिकट खरीदा था, इस आयोजन में भाग लेने के लिए।

कांग्रेस का नया मुख्यालय क्या प्रियंका गांधी ...

- क्या एक राजनीतिक पार्टी का दफ्तर, एक ''कॉरपोरेट ऑफिस'' जैसे चल सकता है। पार्टी मुख्यालय में साधारण कार्यकर्ता बड़े-बड़े नेताओं से मिलकर, पार्टी का भावी कार्यक्रम व दिशा निर्धारण में कुछ सक्रिय भूमिका अदा कर सकता है। पर क्या कार्यकर्ता व पत्रकारों की अनुपस्थिति में पार्टी, जनता से कट नहीं जायेगी?
- कांग्रेस, मुख्यालय के संचालन आदि में भाजपा का अनुसरण तो कर रही है। पर, भाजपा एक ''कैडर बेस्ड'' पार्टी है, वहां यह कल्चर चल सकता है।
- पर, कांग्रेस एक आन्दोलन पर निर्भर रहने वाली पार्टी है, जहां कार्यकर्ता ही पार्टी की आत्मा है, ऐसे में, ''कॉरपोरेट स्टाईल'' कल्चर क्या चल पायेगा।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

परिसर में प्रवेश करने तथा नेताओं से मिलने में कठिनाई महसूस होगी। इसके उद्घाटन वाले दिन समारोह में कार्यकर्ता थे ही नहीं, यहां तक कि मीडिया को भी न तो आमंत्रित किया गया था, और न ही घुसने दिया गया था। बाद में पत्रकारों को प्रैस ब्रीफिंग तथा लंच के लिए बुलाया गया था। इससे पहले, जयराम रमेश ने उनसे हाथ जोड़कर माफी मांगी थी तथा यह स्पष्ट किया था कि यह निर्णय उनका नहीं था, बल्कि ऊपर के स्तर पर लिया गया था। लेकिन अगर मीडिया को प्रवेश की अनुमति दी भी जायेगी, तो पत्रकार ग्राउन्ड फ्लोर के अलावा ऊपर की मंजिलों तक नहीं जा सकेंगे, जहां महासचिव तथा अन्य पदाधिकारी बैठेंगे।

मूल रूप से, यह ''नो एन्ट्री ज़ोन'' है। यह एक अभिजात्य कॉर्पोरेट आफिस है, जहां मौजूदा राजनैतिक माहौल, पार्टी के संघर्ष तथा भविष्य की राजनीति को संभालने के तौर-तरीकों झलक और गंध तक महसूस नहीं होती।

दैनिक आधार पर कांग्रेस की कवरेज के लिए जाने वाले नियमित पत्रकारों को पास जारी किये जायेंगे। यह तरीका उन अनेक कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों पर लागू नहीं होगा, जो पार्टी मुख्यालय में प्राय: आते-जाते रहते हैं।

किसी राजनैतिक पार्टी का मुख्यालय उस पार्टी का हृदय और आत्मा हुआ करता है, जहां पार्टी के निर्णयों तथा निर्देशों पर चर्चा करने के लिए मीटिंग हुआ करती हैं और उसके बाद वे निर्णय एवं निर्देश देश के कोने-कोने तक पहुंचते हैं।

24 अकबर रोड मुख्यालय के एक वरिष्ठ कर्मचारी के अनुसार, नया मुख्यालय भवन कार्यकर्ताओं तथा जनता के साथ जुड़ाव के अभाव को प्रदर्शित करता है, क्योंकि कांग्रेस विभिन्न हतिधारक समूहों, जातियों और समुदायों की गतिविधियों का केन्द्र हुआ करती थी, तथा विविधतापूर्ण विचारों और जीवन-शैलियों को दर्शाया करती थी।

इस बात की ज्यादा संभावना दिखाई दे रही है कि पार्टी 24, अकबर रोड से ही संचालित होती रहेगी तथा नया परिसर प्रियंका गांधी के पास रहेगा, जहां वे अपना स्वयं राजनैतिक कार्यालय चलायेंगी।

आगामी दिनों में, इससे ज्यादा या इससे कम की संभावना दिखाई नहीं दे रही। प्रियंका गांधी जब से वायनाड चुनाव जीती हैं वे संगठन को चलाने तथा विभिन्न निर्णय लेने में काफी रुचि ले रही हैं। नये भवन के उद्घाटन समारोह से मीडिया को दूर रखने का निर्णय इन्हीं निर्णयों में से एक था, जबकि वे स्वयं ऐसी ए आई सी सी महासचिव हैं, जिनके पास कोई विभाग नहीं हैं।

यह तथ्य, कि कांग्रेस गांधी परिवार के इर्द-गिर्द ही घूमती एवं विकसित होती है, ''इंदिरा भवन'' नामक इस नये मुख्यालय परिसर के तौर-तरीकों से दिखाई दे रहा है।

ऐसा लगता है कि कांग्रेस गांधी परिवार के अलावा, अपना सब कुछ खो चुकी है। स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व करने वाली 140 साल पुरानी पार्टी के लिए यह कितनी दुखद स्थिति है। स्वतंत्रता संघर्ष का नेतृत्व करने वाली पार्टी आज सभी गलत बातों में भाजपा की नकल कर रही है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक:- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालय:-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन:2386031, 2386032, फैक्स:0744-2386033 बीकानेर कार्यालय:-कुंभाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन:2200660, फैक्स: 0151-2527371 उदयपुर कार्यालय:-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, 2418945, फैक्स: 0294-2410146 अजमेर कार्यालय:-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422, 226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय: एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन: 256906, 256907, फैक्स:01562-256908